भाद्र मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 309 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज से प्रकाशित

www.akhandbharatsandesh.net

नगर संस्करण प्रयागराज बुधवार 03 नवम्बर 2021

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान प्रयागराज

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस लाख वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

क्रियायोग से सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित।

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

काशी की स्वर्णमयी अन्नपूर्णा ने खोला खजाना, साल में केवल चार दिन खुलता है मंदिर

वाराणसी(एजेंसी)। काशी पुराधीश्वरी माता अन्नपूर्णा ने धनत्रयोदशी को अपने आशीर्वाद का खजाना खोल दिया। मंगलवार से उनके स्वर्ण विग्रह का दर्शन शुरू हुआ। दर्शन के लिए भारी संख्या में नर-नारी, बाल-वृद्ध काशी विश्वनाथ मंदिर के पार्श्व में स्थित अन्नपूर्णा मंदिर पहुंचे। दर्शन के दौरान धन-धान्य की कामना की। यह क्रम अन्नकूट महोत्सव, पांच नवंबर तक चलेगा। मंदिर के पट भोर में चार बजे से रात्रि 11 बजे तक खुले रहेंगे। इस दौरान सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं।

माता अन्नपूर्णा की स्वर्ण प्रतिमा की झलक पाने के लिए सैकड़ो श्रद्धालु सोमवार रात से ही कतारों में लग गए थे। भोर होते-होते यह संख्या बढ़ती गई। सूरज चढ़ते वक्त गोदौलिया से बांसफाटक होते हुए ज्ञानवापी तक दर्शनार्थियों से पट चुका था। इसके पूर्व मंदिर के महंत शंकर पुरी ने भोर में साढ़े तीन बजे मां को पंचामृत स्नान कराया। माता की विशेष झांकी सजाने के बाद दिव्य आरती की। फिर भक्तों के दर्शन के लिए सुबह पांच बजे माता का दरबार खोल दिया गया। भक्त बांसफाटक, कोतवालपुरा होते हुए ढुंढिराज गणेश गेट नंबर एक से अन्नपूर्णा मंदिर में प्रवेश कर रहे हैं। अस्थायी सीढ़ी से प्रथम तल पर विराजमान स्वर्णमयी प्रतिमा के दर्शन की व्यवस्था की गई है। गर्भगृह के गेट पर ही माता का खजाना और लावा वितरण किया जा रहा है। भक्तों की निकासी पीछे राम मंदिर परिसर होते हुए कालिका गली से हो रही है। दर्शन के दौरान कोविड प्रोटोकॉल का पालन भी कराया जा रहा है। मां के दरबार में पहुंचने वाला हर श्रद्धालु महंत शंकर पुरी से प्रसाद संग सिक्का लेने की इच्छा जताता रहा। इसके लिए लम्बी लाइन लग गयी थी। इस बार प्रसाद संग पीले रंग का सिक्का आकर्षण का केंद्र है। महंत शंकर पुरी ने बताया कि अन्नकूट झांकी के दर्शन मात्र से व्यक्ति को अन्न-धन की कमी नहीं होती। वहीं, श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर, ढुंढिराज गणेश, साक्षी विनायक, विशालाक्षी मंदिर समेत अन्य मंदिरों में भी अन्नकूट पर्व की तैयारी शुरू हो गई है।

बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा के गृहराज्य में भाजपा साफ

उपचुनाव में चारों सीट कांग्रेस के खाते में

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा और विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनाव के नतीजे घोषित हो गए हैं। हालांकि, ये नतीजे बीजेपी के लिए ज्यादा उत्साहित करने वाले नहीं रहे। बंगाल में टीएमसी से दोबारा हार मिलने के अलावा हिमाचल प्रदेश में भी बीजेपी को सारी सीटें गंवानी पड़ी हैं। यह हार पार्टी के लिए इसलिए भी निराशाजनक है क्योंकि हिमाचल प्रदेश बीजेपी चीफ जगत प्रकाश नड्डा का गृह राज्य है और यहां बीजेपी की ही सरकार भी है। इसके बावजूद पार्टी को मंडी लोकसभा सीट और तीन विधानसभा सीटों पर कांग्रेस ने बीजेपी को हरा दिया है। मंडी लोकसभा सीट पर कांग्रेस की उम्मीदवार और पूर्व सीएम वीरभद्र सिंह की पत्नी प्रतिभा सिंह ने बीजेपी को हराया। प्रतिभा सिंह ने बीजेपी के अपने प्रतिद्वंद्वी कुशाल ठाकुर को 8 हजार 766 वोटों के अंतर से हराया है। हालांकि, यह सीट बीजेपी के

लिए ज्यादा मायने इसलिए रखती है क्योंकि मौजूदी सीएम जयराम ठाकुर इसी क्षेत्र से आते हैं। उनका चुनावी क्षेत्र सिराज भी मंडी जिले के अंदर ही आता है।

सिर्फ संसदीय सीट ही नहीं बल्कि विधानसभा की तीन सीटों पर उपचुनाव में भी बीजेपी अपनी छाप छोड़ने में नाकामयाब दिखी। अरकी विधानसभा सीट पर कांग्रेस उम्मीदवार संजय अवस्थी ने बीजेपी के प्रत्याशी रतन सिंह पाल को 3 हजार वोटों के अंतर से हराया। इसके अलावा फतेहपुर सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी को 5 हजार 634 वोटों के अंतर से जीत मिली। यहां अहम बात यह भी रही कि निर्दलीय उम्मीदवार को भी 12 हजार वोट मिले।

बीजेपी के लिए सबसे बड़ी चिंता के संकेत जुब्बल-कोथकाई क्षेत्र से मिले जहां उसके प्रत्याशी को सिर्फ 2 हजार 644 वोट मिले और जमानत तक जब्त हो गई। इस सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी रोहित ठाकुर ने निर्दलीय उम्मीदवार चेतन ब्राग्टा को 6 हजार 293 वोटों से हरा दिया। इस सीट पर बीजेपी का वोट शेयर सिर्फ 4.67 प्रतिशत रहा।

राज्य के उपचुनाव कांग्रेस के लिए इसलिए भी खुशखबरी लाए हैं क्योंकि यहां पार्टी का वोट प्रतिशत बढ़ता हुआ दिख रहा है। साल 2019 में धर्मशाला सीट पर हुए उपचुनाव में बीजेपी प्रत्याशी को ही जीत मिली थी लेकिन अब हुए चार सीटों पर उपचुनाव में कांग्रेस को तीन विधानसभा सीटों पर बीजेपी से 20 फीसदी ज्यादा वोट मिले हैं। तीन विधानसभा सीटों पर जहां कांग्रेस प्रत्याशियों को 48.9 फीसदी वोटशेयर मिला तो वहीं बीजेपी के खाते में सिर्फ 28.1 प्रतिशत वोटशेयर ही रहा। हिमाचल प्रदेश के नतीजे बीजेपी के लिए इसलिए भी चिंताजनक हैं क्योंकि सिर्फ पार्टी चीफ जेपी नड्डा ही नहीं बल्कि कैबिनेट मंत्री अनुराग ठाकुर भी हिमाचल से ही आते हैं।

उपचुनाव में जीत पाई सिर्फ 7 सीटें, हिमाचल में जीती सीट पर जमानत जब्त

नई दिल्ली, एजेंसी। दिवाली से पहले आए 13 राज्यों में हुए विधानसभा उपचुनावों के नतीजों में भाजपा को करारा झटका झेलना पड़ा है। एक तरफ हिमाचल में उसे एक लोकसभा और एक विधानसभा सीट खोनी पड़ी है तो वहीं टीएमसी ने पश्चिम बंगाल में क्लीन स्वीप करके करारा झटका दिया है। कुल 29 विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनावों में से भाजपा 22 पर मुकाबले में उतरी थी, लेकिन महज 8 सीटों पर ही जीत हासिल करती दिख रही है। एक तरफ भाजपा को हिमाचल में करारा झटका देते हुए कांग्रेस ने क्लीन स्वीप कर दिया है। वहीं राजस्थान में भी उसने भाजपा का गढ़ कही जाने वाली धरियावाद सीट पर अपना परचम लहराया है। इसके अलावा वल्लभनगर सीट से भी जीत हासिल की है, जो कांग्रेस का हमेशा से गढ़ रही है। हिमाचल प्रदेश की कुल 3 सीटों (फतेहपुर, जुब्बल कोटखाई, अर्की) में से भाजपा को सभी पर हार का सामना करना पड़ा है। यही नहीं अपनी जीती हुई कोटखाई की सीट भी उसने कांग्रेस के हाथों गंवा दी है।

मनप्रीत को भी मिलेगा खेल रत्न, खेल मंत्रालय ने 35 अर्जुन पुरस्कार विजेताओं को मंजूरी दी

नई दिल्ली (एजेंसी)। ओलंपिक कांस्य पदक विजेता भारतीय पुरुष हॉकी टीम के कप्तान मनप्रीत सिंह को मंगलवार को मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार विजेताओं की लिस्ट में शामिल किया गया, जिससे देश के सर्वोच्च खेल पुरस्कार के इस साल के विजेताओं की संख्या 12 पहुंच गई है। पुरस्कार समारोह 13 नवंबर को राष्ट्रपति भवन में आयोजित किया जाएगा। मनप्रीत के नाम की सिफारिश पहले अर्जुन पुरस्कार के लिए की गई थी, लेकिन अब वह खेल रत्न पाने वाले खिलाड़ियों की लिस्ट में अनुभवी गोलकीपर पी आर श्रीजेश के साथ दूसरे हॉकी खिलाड़ी के रूप में शामिल हो गए हैं। खेल रत्न पाने वाले अन्य खिलाड़ियों में ओलंपिक चैंपियन नीरज चोपड़ा और ओलंपिक रजत पदक विजेता पहलवान रवि दहिया शामिल है। महिला क्रिकेटर मिताली राज को भी खेल रत्न पुरस्कार के लिये चुना गया है। अर्जुन पुरस्कार विजेताओं में अधिकतर पैरालंपिक खेलों में रजत पदक विजेता हैं। इनमें क्रिकेटर शिखर धवन भी शामिल हैं। खेल मंत्रालय के अनुसार, 'भारत के राष्ट्रपति पुरस्कार विजेताओं को 13 नवंबर, 2021 (शनिवार) को दोपहर बाद चार बजकर 30 मिनट से राष्ट्रपति भवन के दरबार हॉल में विशेष रूप से आयोजित समारोह में पुरस्कार प्रदान करेंगे।' यह समारोह पिछले साल कोविड-19 महामारी के कारण ऑनलाइन आयोजित किया गया था।

सीओपी26 में बोले पीएम मोदी-

वन सन, वन वर्ल्ड और वन ग्रिड से दूर होगी जीवाश्म ईंधन की कमी

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय जलवायु शिखर सम्मेलन 'उडढ26' में वन सन, वन वर्ल्ड और वन ग्रिड को दुनिया के लिए जरूरी बताया। पीएम मोदी ने मंगलवार को इस समिट में कहा कि जीवाश्म ईंधन कुछ देशों को समृद्ध बना रहा है लेकिन पृथ्वी और वातावरम को गरीब बना रहा है। पीएम मोदी ने कहा कि जीवाश्म ईंधन के लिए मची भाग-दौड़ ने भू-राजनीतिक तनाव भी पैदा किया है। ग्लासगो में उडढ26 में एक्सलरेटिंग क्लीन टेक्नोलॉजी इनोवेशन एंड डेवलपमेंट पर आयोजित कार्यक्रम में पीएम मोदी ने अपनी बात रखी।

यहां प्रधानमंत्री ने कहा कि सौर ऊर्जा पूर्ण रूप से स्वच्छ था और टिकाऊ था, लेकिन यह सिर्फ दिन में उपलब्ध था और मौसम पर डिपेंड करता था।

इस दौरान पीएम ने वन सन, वन वर्ल्ड और वन ग्रिड का फॉमूर्ला दिया। पीएम मोदी ने कहा कि वर्ल्डवाइड ग्रिड के जरिए स्वच्छ ऊर्जा को कभी भी-कहीं से भी संचारित किया जा सकता है। पीएम ने कहा कि इसरो दुनिया को सोलर कैलकुलेटर एप्लिकेशन दुनिया को देगी। पीएम मोदी ने कहा कि वन सन, वन वर्ल्ड और वन ग्रिड न केवल भंडारण की जरूरतों को कम करेगा बल्कि सौर परियोजनाओं की व्यवहारिकताओं को भी बढ़ाएगा।

जोबट, पृथ्वीपुर में बीजेपी की जीत,रैगांव में 31 साल बाद जीत कांग्रेस ने रचा इतिहास

भोपाल, एजेंसी। मध्य प्रदेश में जोबट विधानसभा उपचुनाव का परिणाम घोषित हो चुका है। यहां पर भाजपा प्रत्याशी सुलोचना रावत ने 6 हजार 104 वोटों से जीत हासिल कर ली है।

बता दें कि इस चुनाव से ठीक पहले सुलोचना रावत कांग्रेस का हाथ छोड़कर भाजपा के साथ चली गई थीं। सुलोचना चौथी बार एमएल बनी हैं, उन्होंने कांग्रेस के महेश पटेल को हराया है। वहीं पृथ्वीपुर सीट से भाजपा के शिशुपाल सिंह ने कांग्रेस के नितेंद्र सिंह राठौर को लगभग 15 हजार मतों हरा दिया। जोबट में सुलोचना का मुकाबला कांग्रेस के महेश पटेल से था। यहां पर सुलोचना ने शुरू से ही बढ़त बना ली थी। लेकिन जैसे-जैसे वोटों की गिनती का सिलसिला आगे बढ़ता गया, सुलोचना के वोटों की मार्जिन कम होती गई। हालांकि इसके बावजूद उन्होंने 6 हजार से ज्यादा वोटों से जीत हासिल करने में कामयाबी हासिल की। आदिवासी बहुलता वाले जोबट में जीत हासिल करना भाजपा के लिए काफी बड़ी बात है। अभी तक यह सीट कांग्रेस का गढ़ मानी जाती रही है।

हालांकि काफी जोर लगाने के बावजूद रैगांव सीट भाजपा बचा नहीं पाई है। रैगांव से कांग्रेस की कल्पना वर्मा 12069 मतों से विजयी रहीं। यहां पर भाजपा उम्मीदवार प्रतिमा बागरी ने 14वें राउंड के बाद ही हार मान ली थी। वह मतगणना स्थल छोड़कर भी जा चुकी थीं। गौरतलब है कि यहां पर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान समेत तमाम दिग्गजों ने जमकर कैंपेनिंग की थी। इसके बावजूद भाजपा को यहां पर हार का सामना करना पड़ा है। वहीं अन्य सीटों की बात करें तो खंडवा लोकसभा सीट पर भाजपा और कांग्रेस प्रत्याशी के वोटों का अंतर भले कम हुआ है, लेकिन यहां भी उसकी जीत सुनिश्चित है। यहां ज्ञानेश्वर पाटिल लगभग 56000 वोटों से आगे हो चुके हैं।

बुंदेलखंड के किसान का हक डकार रहे माफिया, कोई सुनने वाला नहीं : राकेश टिकैत

ललितपुर(एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के ललितपुर में मृतक किसानों के परिजनों से मिलने दो दिवसीय कार्यक्रम के तहत यहां आये भारतीय किसान यूनियन के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकैत ने मंगलवार को कहा कि बुंदेलखंड के किसानों की कोई सुनने वाला नहीं है माफिया उनका हक डकार रहे हैं और यहां का किसान आत्महत्या को मजबूर है। अपनी यात्रा के दूसरे दिन आज किसान नेता ने तहसील पाली अंतर्गत ग्राम बनयाना में मृतक महेश बुनकर, तहसील ललितपुर अंतर्गत ग्राम मसौराखुर्द में रघुवीर पटेल व ग्राम मैलवाराखुर्द में सोनी अहिरवार के परिजनों से मिलकर शोक संतप्त परिवार का हाल जाना। मृतक किसानों के परिजनों से मुलाकात के बाद श्री टिकैत ने कहा कि बुंदेलखंड के हालात बहुत खराब हैं। यहां का युवा दल्लिी और सूरत जाकर मजदूरी करने को मजबूर है। खाद की खुलेआम यहां कालाबाजारी हो रही है। सरकार ने यदि निजीकरण को नहीं रोका तो बेरोजगारी और ज्यादा बढ़ेगी। बड़ा व्यापारी किसानों से सस्ते दामों पर माल खरीदकर समर्थन मूल्य पर बेचता है।

साढ़े चार वर्ष में छठे से दूसरी अर्थव्यवस्था बना उत्तर प्रदेश : योगी

लखनऊ, एजेंसी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने नवचयनित अभियंताओं को नियुक्ति पत्र देते हुए उन्हें बधाई दी एवं शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि पूरी की पूरी पारदर्शी प्रक्रिया के तहत आपको नौकरी मिली है। शासन ने ऐसी व्यवस्था दी है कि युवाओं को किसी प्रकार से परेशानी का सामाना न करना पड़े। इसलिए शासन भी नवचयनित अभियंताओं से अपेक्षा करता है कि वह भी पूरी ईमानदारी के साथ प्रदेश की सेवा करेंगे।मुख्यमंत्री योगी ने अपने सरकारी आवास पांच कालिदास मार्ग पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान कहा कि किसी भी अभ्यर्थी को किसी भी स्तर पर सिफारिश करने की आवश्यकता नहीं पड़ी होगी। हर एक कार्यवाही ईमानदारी और पारदर्शिता के साथ आगे बढ़ाने के लिए अधिकारियों को जहां पूरी स्वतंत्रता दी है। वहीं हर पहलू पर नजर रखी जा रही है। शासन चयन प्रक्रिया के बाद नियुक्ति पत्र देने के वक्त तक की पूरी निगरानी रखता है। सब ने अपनी मेहनत से, अपने परिश्रम से, अपने माता पिता और गुरुजनों के आशीर्वाद से यह स्थान प्राप्त किया है। दीपावली की पूर्व

संध्या पर आप लोगों को यह सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। इसके लिए आपको आपके परिवार को बधाई देता हूं।

आवास विभाग में 46 अभियंताओं की नियुक्ति की गई है। उनमें से 33 को आज नियुक्ति पत्र दिया जा रहा है। बाकी की प्रक्रिया जारी है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि साढ़े चाल साल के अंदर करीब साढ़े चार लाख नौजवानों ने अलग-अलग विभागों में सरकारी नौकरी प्राप्त की है। एक भी नौकरी की भर्ती प्रक्रिया पर कोई सवाल नहीं उठा सकता है। वह चाहे लोक सेवा आयोग की हो, अधीनस्थ सेवा चयन आयोग हो, उच्चतर सेवा चयन आयोग हो या माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन आयोग। या फिर बेसिक शिक्षा विभाग की नियुक्तियों से जुड़ी भर्ती का मामला हो, या प्रोन्नत भर्ती बोर्ड का मामला हो, जिनकी भी नियुक्ति प्रक्रिया अब तक प्रदेश में संपन्न हुई है, पूरी इमानदारी और पूरी पारदर्शी तरीके से संपन्न हुई है।

यही कारण है कि समयबद्ध ढंग से भर्ती प्रक्रिया पूरी की जा रही है। 2002 से 2017 के बीच प्रदेश के अंदर जितनी सरकारी नौकरी दी गई है, उससे कई गुना अधिक विगत साढ़े चार साल के अंदर नौजवानों को नौकरियां उपलब्ध कराई गई हैं। न ही किसी व्यक्ति को सिफारिश करने की आवश्यकता है और न ही कहीं किसी कार्य में सेंध लगाने की गुंजाइश है। जब शासन की पूरी प्रक्रिया पारदर्शी है, ईमानदारी पूर्ण है तो शासन भी आपसे अपेक्षा रखता है कि आप भी इसी अमानदारी और पारदर्शी तरीके से शासन के कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने में अपना योगदान देंगे। सभी के योगदान से उत्तर प्रदेश देश का नंबर एक राज्य बनेगा।

हिमाचल में कांग्रेस के हाथ में चारों सीटें, 1 पर भाजपा की जमानत तक जब्त

नई दिल्ली एजेंसी। हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस ने तगड़ी वापसी करते हुए क्लीन स्वीप किया है। यहां बीजेपी को जोर का झटका लगा है। तीन विधानसभा सीटों और एक लोकसभा सीट पर कांग्रेस के उम्मीदवार विजयी हुए हैं। एक सीट पर तो भाजपा प्रत्याशी की जमानत तक जब्त हो गई है।

हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस ने बीजेपी को चौंकाते हुए सभी दावों की हवाईयां निकाल दी है। मंडी लोकसभा सीट पर कांग्रेस की प्रत्याशी और पूर्व सीएम वीरभद्र सिंह की पत्नी प्रतिभा सिंह ने बीजेपी उम्मीदवार कुशाल सिंह ठाकुर को हराकर सीट पर कब्जा किया। प्रतिभा सिंह ने ये सीट 8766 वोटों के अंतर से जीती। प्रतिभा सिंह को 365650 वोट मिले। जबकि कुशाल सिंह को 356884 वोट मिले। फतेहपुर विधानसभा सीट से कांग्रेस उमीदवार भवानी सिंह पठानिया 5789 वोटों से चुनाव जीत गए हैं। इस सीट पर भाजपा प्रत्याशी बलदेव ठाकुर को 18660 वोट मिले। जबकि कांग्रेस उम्मीदवार भवानी

सिंह पठानिया ने 24449 वोट हासिल किए। उधर, अर्की विधानसभा सीट से भी कांग्रेस ने जीत का स्वाद चखा। यहां कांग्रेस प्रत्याशी संजय अवस्थी ने जीत हासिल की। जुब्बल-कोटखाई विधानसभा उपचुनाव में कांग्रेस ने बाजी मारी। इस सीट से कांग्रेस प्रत्याशी रोहित ठाकुर को जीत मिली। रोहित ठाकुर को 29447 वोट मिले। यहां निर्दलीय प्रत्याशी चेतन बरागटा 23344 वोट के साथ दूसरे नंबर पर रहे। जबकि भाजपा प्रत्याशी नीलम सरैइक को महज 2584 वोट मिले। भाजपा प्रत्याशी की इस सीट पर जमानत जब्त हो गई है। इस सीट पर कुल 56607 वोट पड़े। भारतीय निर्वाचन आयोग का नियम है कि चुनाव में जमानत जब्त उस स्थिति में होती हैं जब कोई उम्मीदवार कुल वैध मतों का 1/6 हिस्सा प्राप्त करने में नाकाम रहता है। ऐसी स्थिति में उम्मीदवार के द्वारा चुनाव आयोग के पास जमा की गयी जमानत राशि जब्त कर ली जाती है। संसदीय निर्वाचन क्षेत्रक्के लिए चुनाव लड़ने के लिए 25 हजार रुपये की सिक्योरिटी राशि और विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में चुनाव लड़ने के लिए 10 हजार रुपये की राशि जमा करनी होती है।

खबर संक्षेप

बंद तहसील, फरीयादी मायूस

कोरांव। कोरांव तहसील में अधिवक्ता संघ द्वारा तालाबंदी की गई है जिससे किसानों व फरियादियों को भारी समस्या का सामना करना पड़ रहा है।

आय जाति निवास की समस्या से लोग परेशान हैं।तथा इस वक्त भू माफियाओं द्वारा अवैध रूप से कब्जा भी किया जा रहा है। पीड़ित किसान अधिकारियों के अभाव में कोई भी आदेश नहीं करा पा रहे है जिससे उपरोक्त समस्याओं को देखते हुए भारतीय किसान यूनियन भानु के मंडल उपाध्यक्ष राजेश पांडेय ने कहा कि जहां एक तरफ डीजल पेट्रोल गैस सिलेंडर की कमर तोड़ महंगाई ने किसानों के नाक में दम कर रखा है वही पर लगातार लगभग 15 दिन के आसपास से तहसील कार्यालय में उप जिलाधिकारी कोरांव एवं तहसीलदार कोरांव को चेंबर में न बैठने से आम किसान को छोटी-मोटी समस्याओं को लेकर उच्च अधिकारियों तक फरियादी फरियाद करते थे वह पूर्ण रुप से बंद है। लगभग 50 किलोमीटर की दूरी से किसान साइकिल मोटरसाइकिल पैदल चलकर तहसील मुख्यालय पहुंचता है तो ताला बंद देखकर किसान के चेहरे पर मायूसी छा जाती है। उपरोक्त समस्याओं को देखते हुए तत्काल तहसील खुलवा कर किसानों के धान का पंजीयन जैसी अन्य सुविधाओं को किसानों तक पहुंचाया जा सके कोर्ट बंद होने के कारण दाखिल खारिज अन्य समस्याएं भी बनी हुई है ।आज किसान दर-दर की ठोकरें खाने के लिए मजबूर है।

शाइन सिटी के वाइस प्रेसीडेंट जसीम को भी पुलिस ने किया गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। रियल स्टेट के नाम पर फर्जीवाड़ा करने के आरोप में लखनऊ क्राइम ब्रांच ने शाइन सिटी के वाइस प्रेसीडेंट जसीम को भी प्रयागराज से गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने आरोपी को कल ही हिरासत में लिया था। आज मंगलवार को उसकी गिरफ्तारी की आधिकारिक पुष्टि की गई। कंपनी के एमडी आसिफ नसीम को भी पुलिस ने एक दिन पहले प्रयागराज के करेली से गिरफ्तार किया था। आसिफ के ऊपर पांच करोड़ रुपये का इनाम है।

बता दें कि शाइन सिटी के एमडी आसिफ नसीम को लखनऊ क्राइम ब्रांच ने प्रयागराज से रविवार को गिरफ्तार कर लिया था। अरबों के घोटाले के आरोपी जिस आसिफ नसीम को यूपी पुलिस पूरे देश में खोज रही थी वह प्रयागराज में घूम रहा था। प्रयागराज में करेली के जीटीबी नगर के रहने वाले आसिफ नसीम पर निवेशकों का अरबों रुपया गबन करने का आरोप है।उसके खिलाफ 300 से ज्यादा मुकदमे दर्ज हैं। मामले की गंभीरता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि मामले को बढ़ते देख यूपी सरकार ने इस मामले की जांच आर्थिक अपराध शाखा को सौंप दी थी। क्राइम ब्रांच गिरफ्तार कर उसे लखनऊ ले गई। आरोपी पर पांच लाख रुपये का इनाम भी घोषित किया गया है।

साइन सिटी का एमडी आसिफ नसीम हर कॉल के बाद बदल देता सिम

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। 60 हजार करोड़ की ठगी में गिरफ्तार किए गए शाइन सिटी के एमडी आसिफ नसीम ने पुलिस से बचने के लिए पेशेवर अपराधियों जैसा रवैया अख्तियार किया। फरारी के दौरान वह लगातार अपने बेहद करीबी लोगों के संपर्क में बना रहा। लेकिन हर कॉल के बाद वह अपना सिम बदल देता था। इसी तरीके से वह पांच साल तक पुलिस व अन्य जांच एजेंसियों को छकाता रहा। पुलिस सूत्रों का कहना है कि पूछताछ में आरोपी आसिफ ने कई अहम बातों का खुलासा किया है। उसने बताया है कि शाइन सिटी के खिलाफ धोखाधड़ी के मामले दर्ज होने के बाद से ही उसने व उसके भाई ने अपने ठिकाने बदलने शुरू कर दिए। कुछ महीनों तक इधर-उधर रहने के बाद दोनों दुबई चले गए। जिसके बाद राशिद तो वहीं रह गया लेकिन कुछ समय बाद आसिफ वापस चला आया। वह अपने कुछ बेहद करीबी लोगों की मदद से देश में अलग-अलग जगहों पर फरारी काटता रहा। इस दौरान वह शहर में रहने वाले अपने खास लोगों के भी संपर्क में बना रहा। लेकिन पुलिस को चकमा देने के लिए उसने खास तरकीब अपनाई। वह हर बार कॉल के बाद अपना सिम बदल देता था। ऐसा वह इसलिए करता था ताकि पुलिस व अन्य जांच एजेंसियां उसे ट्रेस न कर पाएं। घरवालों से बात करने के वह व्हाट्सएप व एंड टु एंड इनक्रिप्शन वाले कॉलिंग एप का इस्तेमाल करता था।

दूसरों के नाम पर लेता था सिम

सूत्रों के मुताबिक, फरारी के दौरान उसने अपने करीबियों से संपर्क में रहने के लिए जिन सिमों का इस्तेमाल किया, उनमें से एक भी उसके नाम का नहीं है। वह दूसरों की आईडी पर लिए लिए सिम से अपने जानने वालों को संपर्क करता था। इसके लिए वह करीबियों व परिचितों की मदद लेता था और कई बार सिम बेचने वाले एजेंटों को ज्यादा पैसों का लालच देकर उनसे सिम ले लेता था। यही वजह रही कि तमाम कोशिशों के बावजूद उसने पुलिस को पांच साल तक छकाए रखा।

मुंबई, एमपी में काटा फरारी का ज्यादातर वक्त

आसिफ ने पूछताछ में यह भी बताया है कि उसने फरारी के बाद से अलग-अलग शहरों में फरारी काटी। दुबई से लौटने के बाद वह काफी वक्त तक मुंबई में रहा। इसके बाद वह एमपी के उज्जैन चला आया और यहां काफी वक्त बिताया। यहां से वह मुंबई भी आता-जाता रहा। करीब छह महीनों से वह शहडोल में रहने लगा था। उसी की कंपनी के कर्मचारी और एक लाख के इनामी जसीम ने शहडोल में ठिकाना बनाने में उसकी मदद की। जसीम की ससुराल शहडोल में है और फरारी के दौरान उसके भी वहां पहुंचने की खबर पुलिस टीमों तक पहुंची थी। जिसके बाद जनपदीय एसओजी की टीम ने वहां दबिश भी दी थी। लेकिन वह नहीं मिला।

धनतेरस पर क्षेत्र के जारी बाजार में जमकर हुई खरीददारी

क्षेत्र के जारी बाजार में धनतेरस पर खरीदारी करतीं महिलाएं।

अखंड भारत संदेश

कौंधियारा। क्षेत्र के जारी बाजार में मंगलवार को धनतेरस का त्योहार मनाया गया। बाजार में खासी भीड़ रही। लोगों ने जमकर बर्तनों की खरीदारी की। इस अवसर पर स्टील के बर्तनों के अलावा पूजन में प्रयोग किए जाने वाले तांबे के बर्तन व क्राकरी की भी बाजार में खूब बिक्री हुई। इसके साथ ही प्रेशर कुकर, नान स्टिक बर्तन भी जमकर बिके। सुबह से देर शाम तक बाजार में चहल पहल रही। लोगों ने बाजार में देर रात तक खरीदारी की। कोरोना काल के बाद धनतेरस के बाजार में जिस तरह भीड़ रही उससे बाजार सुबह से लेकर शाम तक गुलजार रहा। धनतेरस के त्योहार को लेकर व्यापारियों ने पहले से ही तैयारी कर ली थी। दस बजे से ही बाजार में खासी गहमा गहमी नजर आने लगी। दोपहर तक हाल यह हो गया कि बाजार में पैदल चलना तक मुश्किल था। खरीदारों की भारी भीड़ उमड़ी। कोरोना काल को कोई असर नहीं दिखाई दिया। लोगों ने उत्साह के साथ त्योहार की खरीदारी की। अमीर, गरीब, मध्यमवर्गीय हर किसी ने अपने सामर्थ के अनुसार त्योहार का सामान खरीदा। बर्तनों की दुकान पर सबसे अधिक भीड़ थी। लोगों ने भोजन की थाली के सेट, गिलास, चम्मच कटोरी, प्रेशर कुकर, नान स्टिक बर्तन जमकर खरीदे। भले की एक चम्मच ही क्यों न लिया हो लेकिन खरीदारी करते हुए हर व्यक्ति दिखाई दिया। क्राकरी की दुकानों पर भी खरीदारों की भीड़ नजर आई। कप प्लेट के सेट के अलावा पानी पीने के कांच के गिलास भी लोगों ने खरीदे। बाजार में सुबह से देर शाम तक चहल पहल बनी रही। बाजार गुलजार बना रहा।

महंगाई की मार से धनतेरस की खरीदारी फीकी

सहसों। मंगलवार को धनतेरस के दिन एक तरफ जहां दुकानदारों ने अपनी दुकान को पूरी तरह सजा कर रखी थी वहीं दूसरी तरफ ग्राहकों की भीड़ न निकलने पर दुकानदारों में निराशा के भाव दिखाई पड़े। महंगाई ने मध्यमवर्गीय परिवारों के बजट को इस कदर बिगाड़ा कि धनतेरस की दुकानदारी भी फीकी नजर आई। लोग छोटे-मोटे बर्तन खरीद कर धनतेरस के त्योहार को पूरा करते नजर आए। दीपावली के 2 दिन पूर्व पड़ने वाला धनतेरस का त्यौहार अपने आप में व्यवसायियों के लिए एक महत्वपूर्ण दिन माना जाता है। इस दिन लोग सोने, चांदी ,बर्तन, टीवी, फ्रिज व इलेक्ट्रॉनिक के सामान खरीद कर पूरे साल के लिए शुभ दिन मानते हैं। लेकिन कोरोना के बाद पड़ने वाली दीपावली ने लोगों का बजट इस कदर बिगाड़ा कि बाजार में सन्नाटा पसरा नजर आया। धनतेरस के दिन लोग अपनी दुकानों को सजा कर बैठे रहे लेकिन ग्राहक हैं कि बाजार से नदारद दिखे। केशव बरतन भंडार के मालिक राजन केसरवानी ने बताया कि धनतेरस का त्यौहार एकदम निराशा जनक रहा। अब छोटी दीपावली का दीपावली के दिन कुछ आस जगी है। लेकिन मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए महंगाई ने इस कदर तहलका मचाया है कि लोग छोटे-मोटे सामान खरीद कर त्यौहार के दिन को शुभ बनाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि दुकानदारों को ज्यादातर परेशानी ऑनलाइन खरीदारी के चलते हो रही है। ऑनलाइन का सबसे ज्यादा प्रभाव छोटे दुकानदारों को उठाना पड़ रहा है।

रामलीला की समापन पर पात्रों एवं कमेटी के लोगों का हुआ सम्मान

सहसों। क्षेत्र के आदर्श रामलीला कमेटी दामोदरपुर उर्फ तिवारीपुर की रामलीला का मंचन के उपरांत समापन पर रामलीला में मंचन कर रहे पात्रों की सुंदर अभिनय एवं रामलीला में कमेटी के अध्यक्ष एवं सदस्यों के भावपूर्ण सहयोग से उनको सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आदर्श रामलीला कमेटी के अध्यक्ष अवधेश तिवारी की अध्यक्षता में आरएसपीएल लिमिटेड कंपनी कानपुर द्वारा कमेटी को सहयोग राशि के रूप में 35 हजार की नगद धनराशि दी गई एवं उपस्थित समस्त पात्र एवं सहयोगी गणों को कंपनी का ब्रांड घड़ी डिटर्जेंट पाउडर देकर सम्मानित किया गया। जिसमें कंपनी के प्रतिनिधि के रूप में प्रभात यादव डीजीएम सेल्स एवं कौशल कुमार सिंह स्टेट हेड सेल्स के कर कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर सुशील तिवारी, संजय तिवारी, संदीप पांडे, ग्राम सभा के सम्मानित ग्राम प्रधान बाल गोविंद तिवारी, सुशील तिवारी, राम मुहूर्त तिवारी, बृजेश तिवारी, नीरज तिवारी, कुलदीप तिवारी आदि लोग उपस्थित होकर सम्मानित हुए।

गंगानदी पुल को निर्माण को लेकर विधायक ने अधिकारियों को लेकर कराया सर्वे

गंगा नदी पर पुल निर्माण के लिए विधायक के साथ सहित निगम के अधिकारियों ने किया सर्वे

अखण्ड भारत सन्देश

गंगा नदी पर पुल निर्माण के लिए निगम के अधिकारियों के साथ विधायक

सिरसा। विधानसभा में जा क्षेत्र विधायक श्रीमती नीलम करवरिया के नेतृत्व में मंगलवार को गंगा नदी पर पक्का पुल निर्माण को लेकर सेतु निगम की टीम ने जमीन के सर्वे किया यमुनापार परानीपुर को जोड़ने एवं क्षेत्र के विकास के लिए लंबे समय से मेजा के लोग गंगा नदी पर पक्का पुल का निर्माण की मांग कर रहे थे। हाल ही में भाजपा विधायक श्रीमती नीलम करवरिया ने गंगा नदी पर पुल के निर्माण के लिए स्थल एवं रास्ते को लेकर को लेकर मंगलवार को सेतु निगम तथा राजस्व टीम ने गंगा नदी के परानीपुर गांव में सर्वे कर जमीन देखी पुल बनाने के लेकर क्षेत्रीय लोगों में खुशी का माहौल देखने को मिला। गंगा नदी सर्वे में प्रोडक्ट मैनेजर उत्तर प्रदेश राज्य सेतु निगम आरके सिंह सहायक अभियंता,सुभाष शुक्ला अभियंता तकनीकी,आर डी राय लोक निर्माण विभाग राकेश त्रिपाठी प्रस्तावित चयनित स्थल को देखा विधायक श्रीमती नीलम उदय भान करवरिया ने कहा कि जल्द ही गंगा नदी पर पक्का पुल का निर्माण कार्य शुरू किया जाएगा मुख्य रूप से विधायक प्रतिनिधि शैलेश पांडे ,राहुल दुबे ,नागेंद्र, सुशील केसरी,सतीश मिश्रा, विजयकांत मिश्रा ,पुष्कर तिवारी विजयकांत मिश्रा आज प्रमुख लोक स्थल पर मौजूद थे।

प्रमुख करछना ने पंचायत भवन खाईं का किया लोकार्पण

अखंड भारत संदेस

पंचायत भवन खाईं का लोकार्पण करते प्रमुख करछना

करछना। विकासखंड के अंतर्गत ग्राम पंचायत खाई में नवनिर्मित पंचायत भवन का क्षेत्र पंचायत सदस्य ब्लाक प्रमुख करछना श्रीमती सरोज कमलेश द्विवेदी ने फीता काटकर लोकार्पण कर ग्राम पंचायत को मिनी सदन के रूप में गांव को समर्पित किया इस मौके पर खंड विकास अधिकारी करछना राम विलास राय,सहायक विकास अधिकारी रामेश्वर सिंह ,पंचायत एडीओ विवेक कुमार मिश्रा ,सचिव अब्दुल बारी ,सचिव संजीव श्रीवास्तव ,ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि मिथिलेश द्विवेदी, संतोष पांडे पूर्व प्रधान, अजीत कुमार शर्मा प्रधान प्रतिनिधि ,गिरीश कुमार शर्मा क्षेत्र पंचायत सदस्य ,लल्लू सोनी क्षेत्र पंचायत सदस्य प्रतिनिधि विजय शंकर तिवारी ,राजेश कुमार शर्मा अंकित कुमार शर्मा ,अरुण कुमार शर्मा धीरज कुमार शर्मा संतलाल भारतीयता, सुरेश कुमार शर्मा, राजेश कुमार शर्मा,ओंकार नाथ कुशवाहा ,वीरेंद्र कुमार पांडे हजरत अली ,इंदल भारतीया, दूधनाथ यादव राजू उपाध्याय ,विनीत कुमार राय ,सहित गांव के बड़ी संख्या में महिलाएं एवं पुरुषों ने लोकार्पण कार्यक्रम में शिरकत किया इस अवसर पर खंड विकास अधिकारी ने पंचायत भवन की महत्वाकांक्षा के विषय में सरकार की योजनाओं के विषय में ग्रामीणों को जानकारी दी तथा ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि कमलेश द्विवेदी एडीओ पंचायत विवेक मिश्रा सहायक विकास अधिकारी रामेश्वर सिंह सहित कई लोगों ने अपने वक्तव्य से ग्रामीणों को सरकार की योजनाओं के विषय में विस्तृत जानकारी दी।

दीपावली पर्व : धनतेरस से लेकर भैया दूज तक मनाने का शास्त्र सम्मत मत है : आचार्य धीरज द्विवेदी

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। दीपावली का पावन पर्व हिंदू धर्म के महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है, दीपावली के दिन मां लक्ष्मी जी और विघ्नहर्ता भगवान गणेश जी का पूजन होता है, इसके साथ ही इस दिन लोग अपने इष्ट देवता का भी पूजन करते हैं। दीपावली का त्योहार कार्तिक मास की अमावस्या तिथि को मनाया जाता है, दीपावली का त्योहार पांच दिनों तक मनाने का शास्त्र सम्मत मत है इसकी शुरूआत धनतेरस के दिन से हो जाती है इसके बाद नरक चतुर्दशी, श्री हनुमान जी का जन्मोत्सव,दीपावली,अन्नकूट और भैया दूज का पर्व मनाया जाता है आइए जानते हैं इस वर्ष दीपावली के पांच दिन के त्योहार के विषय में तथा तिथियों और पूजन मुहूर्त के बारे में। धनतेरस - दीपावली के महापर्व की शुरूआत कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि के दिन से हो जाती है, इस दिन धनतेरस का पर्व मनाया जाता है, धनतेरस पर धन के देवता कुबेर, यमराज जी और औषधि के देवता वैद्यराज धनवंतरी के पूजन का विधान है। इस दिन अपमृत्यु निवारण हेतु यमराज जी को दीपदान करने का विधान है। इस वर्ष धनतेरस का पर्व 02 नवंबर मंगलवार को है। धनतेरस को खरीददारी स्थिर लग्न में करना चाहिए। स्थिर लग्नों का समय - प्रातः - 07:36 से 09:56 मि. तक। दिन - 01:48 से 03:19 मि. तक।धनतेरस को पूजा का समय - रात्रि - 06:24 से 08:20 मि.तक है। नरक चतुर्दशी एवं श्री हनुमद्जन्मोत्सव - नरक चतुर्दशी को छोटी दीपावली के नाम से भी जाना जाता है इस दिन भगवान श्री कृष्ण ने नरकासुर नामक राक्षस का वध किया था उसी के नाम से इस दिन को नरक चौदस कहा जाता है।इसी दिन श्री हनुमान जी महाराज का जन्म मेष लग्न में सायं काल हुआ था।इस दिन यमराज जी का पूजन करना चाहिए एवं श्री हनुमान जी का जन्मोत्सव मनाना चाहिए। नरक चतुर्दशी का पर्व तथा श्री हनुमान जी का जन्मोत्सव 03 नवंबर दिन बुधवार को है।दीपावली - दीपावली के पांच दिन के महोत्सव का सबसे महत्वपूर्ण पर्व कार्तिक मास की अमावस्या तिथि को मनाया जाता है। दीपावली पर गणेश जी- माँ लक्ष्मी जी , कुबेर जी के पूजन का विधान है।इस दिन अपने कुल देवता का पूजन भी करना चाहिए तथा अपने तिजोरी धन स्थान का भी पूजन करना चाहिए। इसके साथ ही इस दिन भगवान श्री राम के लंका विजय के बाद अयोध्या वापस लौटने के त्योहार के रूप में भी मनाया जाता है।इस दिन तांत्रिक साधना का भी विषेश महत्त्व है। दीपावली का त्योहार 04 नवंबर दिन गुरूवार को है।

दीपावली पर्व में पूजन का समय - दिन -01:40 मि. से 03:11 मि. तक है। सर्वश्रेष्ठ समय वृष लग्न में सायं - 06:16 मि. से 08:12 मि. तक। सिंह लग्न में पूजन का समय रात्रि - 12:44 मि. से रात्रि 02:58 मि. तक है।

गोवर्धन पूजा या अन्नकूट - दीपावली के अगले दिन प्रतिपदा पर गोवर्धन पूजा या अन्नकूट का त्योहार मनाने का विधान है। ये पर्व भगवान कृष्ण के द्वारा गोवर्धन पर्वत उठा कर मथुरावसियों की रक्षा करने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। किसानों के यहां नया अन्न हो जाता है उसी नये अन्न का भोग अपने कुल देवता को तथा भगवान को भोग लगाया जाता है इस वर्ष गोवर्धन या अन्नकूट पूजा 05 नवंबर दिन शुक्रवार को मनाया जायेगा।भैया दूज -भैया दूज या यम द्वितिया का पर्व कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को मनाया जाता है ये त्योहार भी रक्षा बंधन की तरह भाई-बहन को समर्पित होता है इस दिन यमुना स्नान का विशेष महत्व होता है।इस दिन यमराज जी अपने बहन यमुना जी के यहां गये थे और यमुना जी का पूजन किया था यमुना जी ने यमराज जी का पूजन किया था।।मान्यता अनुसार इस दिन भाई को बहन के यहां जाना चाहिए और बहन का पूजन तथा बहन को भाई का पूजन करना चाहिए इस वर्ष भैया दूज का पर्व 06 नवंबर दिन शनिवार को मनाया जाएगा।

पत्रकार संघ के प्रदेश इकाई की बैठक में सुभाष बने पुनः जिलाध्यक्ष

लेडियारी। पत्रकार एसोसिएशन प्रयागराज संघ के प्रान्तीय इकाई की एक बैठक कोरांव तहसील अंतर्गत पवारी गांव में प्रदेश के मंत्री धीरेन्द्र शुक्ल के आवास पर मंगलवार को प्रान्तीय अध्यक्ष पी सी पाण्डेय की अध्यक्षता में हुई। बैठक में प्रान्तीय इकाई का विस्तार किया गया जिसमें ज्ञानेंद्र पाठक, सोनू भटनागर एवं आनन्द जायसवाल को सर्व सम्मति से प्रदेश इकाई में शामिल कर लिया गया साथ ही सुभाष शुक्ला को फिर से प्रयागराज जिला इकाई का जिलाध्यक्ष मनोनीत किया गया है।बैठक में शामिल प्रान्तीय इकाई के संरक्षक कमलाकर सिंह ने बताया कि संगठन से जुड़े किसी भी पत्रकार साथी का उत्पीड़न नही हुआ है। जिस पर उपस्थित पत्रकार साथियों ने हर्ष व्यक्त किया। बैठक में मुख्यरूप से कमलाकर सिंह, पी सी पाण्डेय, ज्ञानेंद्र पाठक, सुरेश चन्द्र पाण्डेय, धीरेन्द्र शुक्ल, कृष्ण कान्त मिश्र, भगवानदास केसरी, रावेन्द्र तिवारी चामू सहित कई लोग मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

इंडियन बैंक में कैशियर रूम में अचानक लगी आग

जसरा। इंडियन बैंक की शाखा ओझा पट्टी में दोपहर कैशियर के कैश काउंटर के पास रखे इलेक्ट्रॉनिक उपकरण से अचानक धुंआ निकला। जिस समय कैशियर खाता धारक को कैश देने के लिए रुपए गिन रहे थे तभी अचानक उन्हें कुछ सामान की जलने की महक आयी। इतनी देर में वो कुछ भी समझ पाते उनके कंप्यूटर से धुआं निकलने लगा।तुरंत ही उन्होंने कंप्यूटर स्विच बंद किया और कैश सुरक्षित लेकर केबिन से बाहर निकल आये। यह देखकर बैंक मैनेजर मनीष शर्मा एवम् गार्ड अभयराज सिंह दौड़े दौड़े केबिन की तरफ भागे। तभी स्टाफ के राजू सिंह ने जाकर बैंक कि बिजली सप्लाई को बंद किया। जिस प्रकार सभी की सूझबूझ से एक बड़ी घटना होने से बच गई। किसी भी प्रकार के कागजी रिकॉर्ड एवम् कैश को कोई नुकसान नहीं हुआ और ना ही बैंक के किसी कर्मचारी को शारीरिक क्षति हुई।लेकिन इलेक्ट्रॉनिक उपकरण में कहीं ना कहीं नुकसान हुआ जिससे बैंक का कार्य बाधित हुआ। चूंकि दीपावली नजदीक है तो काफी संख्या में खाता धारक मौजूद थे।इस घटना से उन्हें निराश ही लौटना पड़ा। बैंक मैनेजर मनीष शर्मा ने लोगों को ये आश्वाशन दिया कि जो समस्या हुई है इसको ऑपरेटर बुलाकर ठीक करने का प्रयास जल्द से जल्द होगा। जिससे आप सभी को लेनदेन में दिक्कत ना हो।

धीतेश तिवारी प्रधान संघ महामंत्री करछना ने तीन सौ गरीबों को कम्मल एवं शाल से सम्मानित किया

करछना। विकास खंड करछना के ग्राम पंचायत चनैनी गांव में मंगलवार को गरीबों को कम्मल वितरण का आयोजन किया गया । गांव के प्रधान व महा मंत्री प्रधान संघ धीतेश तिवारी ने मंगलवार को गांव के गरीब असहाय दिव्यांगजनो को ठंड से बचने के लिए दो सौ गरीबों एवं दिव्यांग जनों को कम्मल तथा गांव के एक सौ से अधिक सम्मानित गणमान्य लोगों को शाल से सम्मानित किया ।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अभिषेक तिवारी अधिवक्ता हाई कोर्ट के कर कमलों द्वारा वितरण किया गया, जिसमें विशिष्ट अतिथि टीका राम वर्मा प्रभारी निरीक्षक करछना, संजीव चौबे प्रभारी औद्योगिक थाना क्षेत्र ,आशीष चौबे चौकी इंचार्ज जेवनिया थाना मेजा जिसका संचालन आशीष शुक्ला ने किया तथा इस मौके पर रविकांत, पवन द्विवेदी, शिव राज सिंह, मोहम्मद ताज, राजू शुक्ला, जनार्दन पाठक, राजाराम, इजहार अली, मुन्ना सिद्दीकी, मूल चंद्र, प्रखर मिश्रा, महेन्द्र कुमार तिवारी सहित बड़ी संख्या में गांव की महिलाएँ उपस्थित रहे । कार्यक्रम के समापन पर प्रधान धीतेश तिवारी ने आए हुए सभी के प्रति आभार व्यक्त किया ।

संस्थान के सभी नेक कार्य में उनके साथ खड़ी रहूंगी एसडीएम बारा

जसरा। जसरा में प्रयाग संगम सेवा संस्थान के द्वारा हर घर दीप जले, हर घर रोशन हो के तहत एक मुहिम चलायी गयी , जिसके द्वारा छेत्र के गरीब और मुशहर बस्ती में संस्थान के द्वारा स्वदेशी वस्तु देकर उनका घर रोशन करने की एक योजना बनायीं गयी। जिसमे मिट्टी का दीपक, रुई बाती, लाई चना, नमकीन, सरसो तेल इत्यादि वस्तुएँ वितरण की जा रही है। इसी क्रम में आज रिंगवा मोड़ के पास मुशहर बस्ती और चन्दईया बारी के मुशहर बस्ती में संस्थान की मार्गदर्शक उपजिलाधिकारी बारा आई एस शौम्या गुरु रानी जी के द्वारा सामग्री वितरण की गयी और उनके द्वारा टीम की काफी प्रशंशा की गयी, कार्यक्रम में मौजूद रहे अध्यक्ष, सुधांशु मिश्र, रावेन्द्र तिवारी, यमुनापार अध्यक्ष रावेन्द्र तिवारी चामू,छविनाथ द्विवेदी, शिवम मिश्रा, रितेश तिवारी ,अविनाश त्रिपाठी,प्रधान जसरा आशीष सोनकर, पंचम पटेल, शनी शुक्ला, शेखर पटेल, शनी सिंह, आलोक पाठक,किशन तिवारी, राम नरेश कुशवाहा मयंक ओझा, अमित मिश्र, अभिषेक शुक्ला,देवेंद्र पाठक,आशीष मिश्र, विजय राज प्रजापती अविनाश द्विवेदी, अनुराग द्विवेदी, प्रशांत द्विवेदी, शिवम् चतुर्वेदी, दिवाकर चतुर्वेदी, अखिल त्रिपाठी, शिवम् द्विवेदी,अमन शाहू, प्रेम तिवारी, हर्षदीप मिश्र, विवेक सिंह भदौरिया आदि काफी लोग संस्था से मौजूद रहे।

वोकल फार वोकल पर परिचर्चा आयोजित, सम्मानित की गयी मेधावी बेटियां

जसरा। जसरा स्थित राजकीय बालिका इंटर कालेज मे सोमवार को वोकल फार लोकल से सम्बंधित परिचर्चा का आयोजन किया गया। निर्धन एवम मेधावी बेटियों को कलम, पौधा सहित अन्य आवश्यक सामग्री भी उपहार स्वरूप भेंट किया गया।इस अवसर पर शोधछात्र अभिषेक सिंह पटेल ने कहा कि अर्थव्यवस्था के लिए वोकल फार लोकल का मंत्र संजीवनी के समान हैं। देश के प्रत्येक नागरिक का यह नैतिक कर्तव्य भी बनता हैं स्थानीय वस्तुओं को तहरीज दें जिससे समाज व देश मे खुशहाली कायम रहें। म्मानित होने वालों में प्राची सिंह, लक्ष्मी यादव, वैष्णवी केसरवानी, आकांक्षा सिंह, मधु द्विवेदी,शिखा मिश्रा, खुशी यादव,मुस्कान सिंह, नीलू पटेल, मान्या शुक्ला,प्राची मालवीया समेत 51मेधावी छात्राओं को पौधा, पेन भेटकर किया सम्मानित। उक्त अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती शकुंती सचान ने नशा, अशिक्षा इत्यादि सामाजिक कुरुतियों के खात्मे के लिए प्रेरित करते जल संरक्षण, वृक्षारोपण इत्यादि सामाजिक विषयों पर भी अपने अनुभव साझा की। इस अवसर पर सुनीता मालवीया, नीता त्रिपाठी, ममता शर्मा, फौजिया नसरीन, रीना यादव, शगुफ्ता जमाल साफिया, रेखा रानी, रितु सिंह, गीतांजलि समेत विद्यालय की अन्य शिक्षिकाओं सहित छात्राएं मौजूद रहीं।उक्त अवसर पर पारिजात, आम, कदम्ब, टीकोमा आदि पौधे भी रोपे गये।

बार और बेंच के बीच समझौता, आज से खुलेगे ताले

कोरांव। तहसील कोरांव मे पखवारे भर से चल रहे बार और बेंच के बीच विवाद मे मंगलवार को हुई आम सभा मे निर्णय हुआ कि अब हड़ताल खत्म कर सभी विभागो के ताले खोल दिये जायेगे। बताते चले कि पिछले पंद्रह दिन से एसडीएम तहसीलदार के रवैये से क्षुब्ध अधिवक्ताओ ने हड़ताल करते हुए उनके स्थान्तरण तक तालाबंदी करा रखी थी जिसके क्रम मे मंगलवार को आम सभा मे पहुँचे एसडीएम तहसीलदार अधिवक्ताओ से रूबरू होते हुए कहा कि कार्य शैली मे सुधार और तेजी लाएंगे। एक माह का आप सब साथ दीजिये हम सब का काम बोलेगा और आप सब हड़ताल औ? तालाबंदी खत्म करिये । अधिवक्ताओ ने बार बेंच की आपसी सहमति पर हड़ताल खत्म कर दी। सभा की अध्यक्षता बार अध्यक्ष राजेंद्र सिंह व संचालन मंत्री प्रशांत पाण्डेय ने किया निर्वाचन अधिकारी बाल गोबिंद पाण्डेय, हेमवती सिंह, अरुण मिश्रा, रामेश्वर तिवारी, केसी मिश्र, रोहणी तिवारी, उमाकान्त तिवारी, शेखर दुबे, विनीत मिश्र, राजू दुबे, सुनील पाण्डेयआदि अधिवक्ता मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

जीवन दीप अस्पताल रामपुर में डाक्टर नें धनतेरस पर बाँटे उपहार

करछना। विगत वर्षों कीं भाँति इस वर्ष भी धनतेरस और दीपावली के अवसर पर डॉक्टर गुलाम मुस्तफा के द्वारा जीवनदीप अस्पताल रामपुर करछना के परिवार को मिठाई व उपहार देकर धूमधाम से धनतेरस मनाया गया ।जीवनदीप अस्पताल रामपुर करछना के निदेशक डाक्टर गुलाम मुस्तफा दीपावली के अवसर पर अस्पताल में कार्य करने वाले सभी सह कर्मियों को एवं गरीबों के बीच हमेशा उपहार प्रदान करते हमेशा सम्मानित किया है, इसी क्रम में मंगलवार को धनतेरस के पावन पर्व पर मिठाई और उपहार देकर सम्मानित किया।

दुष्कर्म केस के गवाह को फर्जी तरीके से भेजा जेल, जांच कमेटी गठित

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। अभी ज्यादा दिन बीते नहीं हुआ जब सांसद अतुल राय पर दुष्कर्म का आरोप लगाने वाली पीड़िता ने खुद को व मुकदमे के गवाह को फर्जी मुकदमों में फंसाए जाने समेत तमाम आरोप लगाते हुए आत्मदाह कर लिया। इसके बावजूद पुलिस ने कोई सबक नहीं लिया। प्रयागराज शहर में भी एक ऐसा ही खेल हुआ। दुष्कर्म मामले के गवाह को फर्जी तरीके से जेल भेज दिया गया। मामला एक आला अफसर तक पहुंचा तो आननफानन में कोर्ट में रिपोर्ट भेजकर उसे रिहा भी करा दिया गया। फिलहाल इस मामले में जांच बिठा दी गई है। 2019 में कर्नलगंज में हुआ था केस नवंबर 2019 में 25 वर्षीय युवती ने एक कॉलेज के असिस्टेंट प्रोफेसर के खिलाफ कर्नलगंज थाने में दुष्कर्म, मारपीट, धमकी, गालीगलौज समेत अन्य धाराओं में केस दर्ज कराया। कई दिनों तक फरार रहने के बाद आखिरकार आरोपी गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। इसी साल वह जमानत पर रिहा हो गया। खेल इसके बाद शुरू हुआ।दुष्कर्म मामले में पीड़िता का एक परिचित गवाह था। पुलिस ने इसी साल अगस्त में हंडिया थाने में दर्ज दुष्कर्म के एक मुकदमे में उसे जेल भेज दिया। चौंकाने वाली बात यह है कि इस मुकदमे से गवाह का दूर-दूर तक कोई लेना-देना नहीं था। कर्नलगंज में केस दर्ज कराने वाली दुष्कर्म पीड़िता इस बात की शिकायत लेकर थाने व अफसरों के पास गई तो उसे भगा दिया गया।

आला अफसरों के संज्ञान में आने पर मचा हड़कंप

हारकर उसने एक आला अफसर से शिकायत की। मामला संज्ञान में आने के बाद अफसर ने पूछताछ शुरू की तो हड़कंप मच गया। जिसके बाद आननफानन में हंडिया पुलिस ने कोर्ट में सीआरपीसी की धारा 169 के तहत रिपोर्ट भेजकर फर्जी तरीके से जेल भेजे गए गवाह को रिहा करा दिया। फिलहाल आला अफसर की ओर से इस मामले में जांच के आदेश दे दिए गए हैं। एसपी गंगापार को पूरे मामले की जांच कर जल्द रिपोर्ट देने के लिए निर्देशित किया गया है।

दो इंस्पेक्टर, एक दरोगा की भूमिका संदिग्ध

दुष्कर्म मामले के गवाह को फर्जी तरीके से जेल भेजे जाने में दो इंस्पेक्टर व एक दरोगा की भूमिका संदिग्ध है। चर्चा है कि एसओजी में तैनात रहा इंस्पेक्टर दुष्कर्म के आरोपी असिस्टेंट प्रोफेसर का रिश्तेदार है। उसी ने दूसरे इंस्पेक्टर व एसओजी टीम में ही तैनात एक दरोगा के साथ मिलकर गवाह को फंसाने के लिए यह साजिश रची। जिसके तहत शहर से पकड़कर गवाह को हंडिया ले जाया गया और फिर उसे फर्जी तरीके से जेल भेज दिया गया।

जिला गंगा समिति की ओर से मनाये जा रहे गंगा उत्सव के तहत स्वच्छता का संदेश देने के लिए खिलाड़ियों ने दौड़ में प्रतिभाग किया।

खिलाड़ियों ने लगाई दौड़, गंगा स्वच्छता का दिया संदेश

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। जिला गंगा समिति की ओर से मनाए जा रहे गंगा उत्सव कार्यक्रम के तहत मंगलवार को संगम घाट के आरती समिति परिसर में स्वच्छता अभियान चलाया गया। स्नानार्थियों, तीर्थयात्रियों पर्यटकों, तीर्थपुरोहितों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने के साथ स्वच्छता का भी संकल्प लिया गया। गंगा स्वच्छता का संदेश देने के लिए खिलाड़ियों ने दौड़ लगाई। गंगा को स्वच्छ बनाए रखने का संकल्प भी दिलाया गया।सिंधु विद्या मंदिर इंटर कॉलेज में पेंटिंग व वाद विवाद प्रतियोगिता का भी आयोजन हुआ। उधर, मिंटोपार्क में महामना मदन मोहन मालवीय की प्रतिमा के समक्ष रंगोली भी बनाई गई। गंगा के संरक्षक व संवर्धन के लिए हस्ताक्षर अभियान की चलाया गया।उत्सव के दूसरे दिन अमिताभ बच्चन स्पोटर्स कांप्लेक्स से इंदिरा चौराहे तक गंगा मैराथन का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन वन संरक्षक व मुख्य विकास अधिकारी ने किया। पुरुष वर्ग में सागर सिंह प्रथम, शनी निशाद द्वितीय व रिशू पाल तृतीय रहे। महिला वर्ग में नीतू कुमारी प्रथम, शिवानी चौरसिया द्वितीय व दिव्या तीसरे स्थान पर रहीं। शाम को हरिहर आरती प्रांगण में दीप प्रज्वलित कर उत्सव को और भव्यता दी गई। इस आयोजन में वन विभाग के प्रभागीय निदेशक रमेश चंद्र, संजय शर्मा, डा. डीएन झा, राजेश शर्मा, सुरेश चंद्रा अध्यक्ष, आर एन दुबे, अशोक साहू, राकेश शर्मा, दुकान जी, सुनील गुप्ता आदि ने सहयोग दिया।

गंगा प्रदर्शनी व नुक्कड़ नाटक का आयोजन

अखंड भारत संदेश

गंगा उत्सव

प्रयागराज। राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन, के तहत ह्यगंगा उत्सव 2021ह्ल को ह्यनदी उत्सवह्ल के रूप में आगामी(1-3 नवंबर) देश भर में गंगा और उसकी सहायक नदियों पर आयोजन कर रहा है। इसी क्रम में नेहरू युवा केंद्र प्रयागराज , युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार के निर्देशन में 'नमामि गंगे-युवाओं की सहभागिता परियोजना' के अंतर्गत ब्लॉक श्रृंगवेरपुर के गंगा गांव में गंगा प्रदर्शनी तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम रामचौरा घाट पर सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत नुक्कड़ नृत्य अभिनय संस्थान से कृष्ण कुमार मौर्य व उनकी टीम द्वारा गंगा स्वच्छता पर आधारित 'गंगा को पावन रहने दो' पर नाटक की प्रस्तुति की जिसमें सभी कलाकारों ने बेहतरीन तरीके से नाटक के माध्यम से गंगा को साफ रखने का संदेश दिया और पॉलिथीन - कचरा के दुष्प्रभाव के बारे में मनोरंजक तरीके से बताया।कार्यक्रम का संचालन गंगादूत अमित कुमार द्विवेदी किया गया। कार्यक्रम में जिला परियोजना अधिकारी (नमामि गंगे)एषा सिंह ने ग्रामीण वासियों को नमामि गंगे परियोजना के अंतर्गत गंगा उत्सव गंगा स्वच्छता के बारे में जानकारी साझा की। इसके पश्चात श्रृंगवेरपुर धाम में गंगा उत्सव 2021 अंतर्गत गंगा प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें मां गंगा से संबंधित विभिन्न बैनर फ्लेक्स, मैगजीन, किताबें, प्ले काड्र्स, स्टीकर ब्रोशर, पंपलेट, इत्यादि के माध्यम से लोगों को गंगा स्वच्छता के महत्व , जैव विविधता, जलीय जीव, आद्र भूमि,एवं प्रदूषण से होने वाली हानि, गंगा स्वच्छता पर छात्रों द्वारा बनाई गई चित्रकला के बारे में जागरूक किया गया तथा इस अभियान से जोड़ने का प्रयास किया गया जिसमें ग्रामीण वासियों द्वारा रुचि पूर्ण प्रतिभाग किया गया।कार्यक्रम के आयोजन में पूर्व स्वयं सेवक दारा सिंह सरोज की अहम भूमिका रही तथा स्वयंसेवक कुलदीप मिश्रा, हिमांशु द्विवेदी ,प्रमिला देवी ,आरती सरोज, गंगा दूत प्रतीक कुमार,पवन कुमार, विवेक कुमार, सचिन कुमार ,विक्रांत यादव ,सुधांशु मिश्रा ,अमरेंद्र पांडे का खास योगदान रहा।कार्यक्रम का आयोजन जिला युवा अधिकारी जागृति पांडे के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया।

एसओजी टीम व पुलिस ने लूट करने वाले दो अभियुक्तों को दबोचा

हंडिया। एसओजी टीम व हंडिया पुलिस को उस समय बड़ी सफलता हासिल हुई जब पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर दो लुटेरों को बम व पिस्टल कारतूस व नगदी के साथ गिरफ्तार कर लिया। हंडिया पुलिस व एसओजी टीम ने मुखबिर की सूचना पर हण्डिया स्टेशन से आने वाली रोड पर जितेंद्र उर्फ लल्ला पुत्र राजबहादुर यादव निवासी ग्राम मुगराव थाना हण्डिया के पास से थैले में सात देसी जिंदा बम व तलाशी लेने पर 2950 रुपया बरामद किया।दूसरा अभियुक्त सरताज अंसारी पुत्र सहमत अली निवासी वार्ड नंबर 10 कस्बा थाना हंडिया को गिरफ्तार कर पास से एक देसी तमंचा एक कारतूस व ?2020 बरामद हुआ। पुलिस ने बताया कि गिरफ्तार जितेंद्र उर्फ लल्ला का प्रयागराज जिले में लूट समेत अन्य संगीन धाराओं में लगभग 40 मुकदमे दर्ज हैं।गिरफ्तार दोनों अभियुक्तों का पुलिस ने अभियोग पंजीकृत कर न्यायालय के लिए चालान कर दिया। गिरफ्तारी टीम में मुख्य रूप से उप निरीक्षक सुशील कुमार, विमलेश सिंह, सिपाही उमेश यादव,अनुराग यादव, आकाश सिंह, पुष्पेंद्र कुमार व एसओजी गंगा पार प्रभारी मनोज सिंह,उप निरीक्षक इंद्र प्रताप सिंह, सिपाही दीपक मिश्रा, मनोज सिंह, जितेंद्र सिंह,रवि देव यादव,विनोद दुबे विजय शंकर वर्मा रहे।

चाणक्य इंटरनेशनल स्कूल में धूमधाम से मनाया गया दीपावली महोत्सव

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। दीप पर्व दीपावली के अवसर पर चाणक्य इंटरनेशनल स्कूल मनूकापूरा , मेजा प्रयागराज में दीपावली महोत्सव के अवसर पर बच्चों की रंगारंग प्रस्तुति एवं झाकियों ने उपस्थित जनों का मन मोह लिया । हाउस वाइज रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया , जिसमें ब्लू हाउस ने आयुषी सिंह के निर्देशन में सेव गर्ल्स चाइल्ड थीम वेस्ड रंगोली बनाकर सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया , ग्रीन हाउस ने दीपा शर्मा के निर्देशन में सर्व शिक्षा अभियान थीम वेस्ड रंगोली बनाकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया । कार्यक्रम का सफल संचालन अनामिका शर्मा एवं स्कूल के कोआर्डिनेटर प्रशांत श्रीवास्तव ने संयुक्त रूप से किया।स्कूल के अपर निदेशक नीरज मिश्र ने अपने संबोधन में कहा कि मैं बच्चों के कार्यक्रम को देखकर बहुत अभिभूत हूँ और अपने शिक्षकों से उम्मीद करता हूँ कि वे इस तरह का पठन - पाठन का माहौल बनाऐं कि आगे चलकर यह चाणक्य इंटरनेशनल स्कूल इंजीनियर्स , डाक्टर्स और प्रशासनिक सेवा में जाने वाले छात्रों की खान बन जाए। बिद्यालय के निदेशक अखिलेश मिश्र ने अपने संबोधन में छात्रों द्वारा प्रस्तुत किए गए कार्यक्रमों एवम् शिक्षकों की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हुए कहा कि शिक्षक अपने गुरुतर दायित्व का निर्वहन करें और दीपावली के दीप की ही तरह से छात्रों के अंदर के अंधेरे को दूर करके उन्हें देदिप्त्यमान बनाए ताकि ये हमारें समाज और देश के निर्माण में अपने योगदान से स्कूल एवम् हम सबका नाम रोशन करें। बिद्यालय के प्रशासक सुधाश्रु मिश्र ने पियुष प्रजापति , मो० शम्स , सक्षम त्रिपाठी , अंशुमान उपाध्याय , रूद्रांश शुक्ला , युवराज सिंह , अराध्या सिंह एवम् हिमांशु बिन्द को अपने-अपने क्लास के वेस्ट परफार्मर के रूप में घोषित कर उन्हें वेस्ट परफार्मर बैज लगाकर उनका उत्साह वर्धन किया तथा शिक्षकों की तारिफ करते हुए कहा की आप सभी ने कम समय और कम संसाधन मे इतिहास रचा है आप सभी निश्चित रूप से बधाई के पात्र हैं।

प्री नर्सरी , नर्सरी एवम् प्रेप के बच्चों द्वारा और राम दरबार , राम - लक्ष्मण - सीता ,भगवान शंकर , राधाकृष्ण गोपियों के संग , भगवान विष्णु की झाकियां आकर्षक एवम् अद्भुत ढंग से निकाली गई।क्लास प्रेप की क्लास टीचर बंदना मिश्र , नर्सरी की क्लास टीचर आयुषी सिंह तथा प्री नर्सरी की क्लास टीचर स्नेहलता जोसेफ ने बच्चों को झाकियों के लिए तैयार करने मे अहम भूमिका निभाई। डी एन तिवारी एवम् मंगला प्रसाद के कुशल निर्देशन मे बच्चों ने ग्रुप डाँस , सोलो सिंगिंग , सोलो डाँस , स्किट के साथ बच्चों ने हिन्दी एवम् इंग्लिश मे स्पीच देकर खूब तालियाँ एवम् वाहवाही बटोरी।

वेस्ट परफार्मर के रूप में नवाजे गए बच्चे

डांस प्रस्तुत करते स्कूल के बच्चे

इस फड़ पर सिर्फ 500 व 2000 रुपए के नोट से खेले जाते हैं जुआ

(सुनील गिरि)

नैनी। दिवाली पर्व पर नैनी कोतवाली क्षेत्र के विभिन्न हिस्सों में जुआरियों की महफिल सजने लगी है। वहीं प्रतिदिन लाखों रुपए की हार जीत के दांव लग रहे हैं। नैनी कोतवाली क्षेत्र के कई इलाकों में भारी पैमाने पर जुआ का खेल संचालित हो रहे हैं। इतना ही नहीं जिन जुआरियों के पास 500 व 2000 रुपए के नोट मौजूद होते हैं, उन्हें ही फड़ पर दाखिला मिलता है। जो पूरी तरह से सिस्टम के तहत जुआ संचालकों के द्वारा संचालित किए जा रहे हैं। जिसमें नए व पुराने कारखासो की भूमिका भी संदिग्ध बताई जा रही है। भड़रा इलाके में व्यापारियों के साथ ही अवैध कारोबारियों के द्वारा जुआ खेला जा रहा है। इस गोरखधंधे की जानकारी पुलिस को जरिए मुखबिर के द्वारा मिलने के बाद भी नतीजा सिर्फ और सिर्फ सून्य है। सूत्रों पर यदि हम यकीन करें तो भडरा गांव में दिन-रात 25 लाख रुपए से अधिक का जुआ संचालित हो रहे हैं। यह सिलसिला दिवाली पर्व के बाद एकादशी पर्व तक संचालित रहेगी।

जुआरियों का मुख्य केंद्र बना भड़रा, लाखों रुपए का वारा-न्यारा जारी, सिस्टम के तहत अवैध कारोबारियों ने सजाई बड़े पैमाने पर जुआरियों की महफिल

पांच सौ व दो हजार रुपए के नोट से खेला जाता है जुआ

भड़रा इलाके में बताया जाता है कि जिन जुआरियों के पास 500 व 2000 के करेंसी होते हैं उन्हें ही जुआ खिलाया जाता है। इसके अलावा जिन जुआरियों के पास सौ, पचास व दो सौ रुपए के नोट होते हैं, उन्हें 500 और 2000 में तब्दील कर दिए जाते हैं और तभी उन्हें जुआ के फड़ पर दाखिला मिलता है। इस स्थान पर जुआ के महाखेल को खेलने के लिए ही प्रयागराज के व्यापारियों के साथ ही अवैध कारोबारियों की फड़ पर महफिल जमती है। सूत्रों पर यदि हम यकीन करें तो क्षेत्र के अलावा दूसरे जिलों से भी लोग यहां पर दांव आजमाने आते हैं।

बदलते रहे ठिकाने

गौरतलब हो कि बीते कई वर्षों पूर्व घूरपुर थाना क्षेत्र के जमौली गांव के समीप बड़े पैमाने पर पुलिस ने छापेमारी की थी। बताया जाता है कि उसके बाद से ही जुआ खिलाने वाले संचालकों ने बीते कई वर्षो के अंदर कई स्थानों को बदल बदल कर जुआ को संचालित करते चले आ रहे हैं। बीते कुछ वर्षो से वह नैनी व घूरपुर क्षेत्र इलाकों में भारी पैमाने पर इस गोरखधंधे को संचालकों द्वारा अंजाम दिया जा रहा है।

जुआरियों को मिलता है ठिकाना

भंडरा इलाके में दिवाली पर्व से काफी पहले ही जुआ के इस गोरखधंधे को अंजाम देने के लिए जुआ संचालकों के द्वारा पूरी सिस्टम के तहत संचालित करते हैं। सूत्रों पर यदि हम यकीन करें तो बाहर से आने वाले जुआरियों को रहने तक का ठिकाना भी रात्रि प्रहर में मुहैया कराया जाता है। इस इलाके में जुआ के खेल को संचालित किया जा रहा है। फिर भी कोई भी कारगर कदम नहीं उठाया जा सका है।

क्या है सिस्टम

सूत्रों पर यदि हम यकीन करें तो सिस्टम का मतलब बताया जाता है कि अवैध कारोबारी जब किसी गोरखधंधे को अंजाम देते हैं तो एक सिस्टम के तहत उसे संचालित करते हैं। यानी कि गोरखधंधे को अंजाम देने वाले ऊपर से लेकर नीचे तक सभी को सिस्टम के तहत मिला कर रखते हैं। ताकि अवैध कारोबारियों के द्वारा कराए किए जा रहे गोरखधंधे पर किसी तरह का कोई भी कार्रवाई ना हो, यदि कार्रवाई होने वाली भी हो तो उन्हें, कार्रवाई से पहले जानकारी मुहैया कर दी जाती है। यही वजह है कि सिस्टम के तहत क्षेत्र में जुआ को संचालित किया जा रहा है।

घूरपुर में जम गई जुआरियों की जमघट, पुलिस से सौ फीसदी सुरक्षा की गारंटी

घूरपुर। पुलिस की धरपकड़ से सौ फीसदी सुरक्षा की गारंटी के साथ जुआ संचालकों ने घूरपुर क्षेत्र के कई इलाके में जुआरियों की महफिल जमा दी है। बड़े बड़े दांव लगाने वाले जुआरियों का जमघट दिन रात बेखौफ शुरू हो गया है। जुआ संचालकों ने इसके लिए एक सप्ताह पूर्व से ही इलाकाई पुलिस से साठगांठ कर पुलिस परमिट लेने के लिए दस से बीस हजार रुपए एडवांस दे चुके है। इसके अलावा भी रोजाना तय सुविधा शुल्क भी समय से पहुंचा बेखौफ होकर जुए का फड़ चलाया जा रहा है। बगैर इजाजत जुए की फड़ चलाने वालों के पीछे पुलिस मुखबिर भी लगा रखी है। जानकारी के बाद यदि सुविधा शुल्क न दिए तो पुलिस उस पर दविश देगी।

इन गांवो में चल रहा बड़े स्तर पर जुए का फड़

घूरपुर थाना क्षेत्र के जसरा,चितौरी, बुंदावा, अमरेहा, कांटी, उमरी, पवरी, चिल्ली, चकिया, गौहनिया, हथिगन, बोंगी, भीटा, कंजासा, बसवार, अमिलिया, पालपुर, मोहद्दीनपुर, बादलगंज, इरादतगंज, चंपतपुर, चौकठा, बगबना,हरिहरपुर, बलापुर, बलीपुर, नैरहावा, दलवाबारी, मनकवार, सेमरा कल्बना, गांवो मे दो से तीन स्थानों पर रोजाना लाखों रुपए का खेल खेला जा रहा है।

ब्याज पर दिए जाते है कर्ज:

अधिकतर जुए के फड़ पर ब्याज पर कर्ज देने की भी सुविधा है गारंटी के तौर पर आभूषण आदि रख कर ब्याज दिया जा रहा है। जिससे दांव पर हारने के बाद घेरलू कलह के साथ ही चोरी छिनैती की घटनाएं भी बढ़ना स्वाभाविक है।

हर दाव पर 15 प्रतिशत लेता है फड़ संचालक

फड़ संचालक हर दाव पर जीते हुए पक्ष से 15 प्रतिशत लेता है यदि तीन बार लगातार कोई जीतता है तो उससे 25 प्रतिशत लिया जाता है।

शुआट्स वैज्ञानिकों ने दी किसानों को सलाह

नैनी। सैम हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय (शुआट्स) में चल रहे ग्रामीण कृषि मौसम सेवान्तर्गत भारत सरकार से मंगलवार को प्राप्त पूर्वानुमान के अनुसार वैज्ञानिकों ने सलाह दी है कि गेहूँ की बुवाई के लिए बीज को थीरम से शोधित करें प्रति किलोग्राम 2.5 ग्राम थीरम का प्रयोग करें । मसूर के लिए एक हेक्टेयर खेत में 40 किग्रा . बीज की आवश्यकता होगी । ध्यान रहे कि बीज प्रमाणित अथवा सत्य और शोधित हो । जौ की बुवाई के समय प्रति हेक्टेयर 30 किग्रा . नाइट्रोजन , 30 किग्रा . फास्फेट तथा आवश्यकता होने पर 20 किग्रा . पोटाश प्रयोग करें । जई की बुवाई के लिए एक हेक्टेयर में 80-100 किग्रा . बीज की जरूरत होगी । लहसुन के लिए यमुना सफेद (जी - 282) प्रजाति उपयुक्त है । शरदकालीन गन्ना की बुवाई के 3-4 सप्ताह बाद निराई - गुड़ाई कर लें । नये लगे बागों में पेड़ों की कतारों के बीच में चना / मटर / मसूर की बुवाई करें । प्याज की रबी फसल के लिए पौधशाला में बीज की बुवाई करें। रजनीगंधा के स्पाइक की कटाई छँटाई, पैकिंग, विपणन तथा पोषक तत्वों के मिश्रण अन्तिम पर्णीय छिड़काव करें। पशुओं को नमक मिश्रण खिलाते रहें ।

श्रमिकों और ग्राम्य विकास हेतु विशेष ध्यान : मुकेश कुमार

नए खंड विकास अधिकारी ने कोरांव ब्लॉक की संभाली कमान, संयुक्त बी डी ओ की भी तैनाती

अखंड भारत संदेश

कोरांव। नए खंड विकास अधिकारी कोरांव मुकेश कुमार ने कहा कि सरकार की मंशा तथा श्रमिकों एवं ग्राम सभाओं के हितार्थ विषेश ध्यान दिया जाएगा। उक्त बातें प्रेस प्रतिनिधि से मुलाकात के दौरान बी डी ओ ने कही। मुकेश कुमार जनपद बंदा के मूल निवासी हैं और जनपद फतेहपुर से प्रयागराज ट्रांसफर हुआ है। और कोरांव ब्लॉक में तैनाती की गई। मुकेश कुमार ने कहा कि ग्राम प्रधान बंधु और कर्मचारी गण तन्मयता पूर्वक ग्रामों के समग्र विकास में कार्य करें। उन्होंने कहा कि मेरा पूरा प्रयास है कि सरकार की मंशा के अनुरूप तथा श्रमिकों के कल्याण हेतु विधिवत कार्य किए जाएं। उन्होंने ब्लॉक के समस्त विभागीय अफसरों कर्मियों से कार्य आदि की जानकारी हासिल की,और तदनुसार निस्तारण के निर्देश दिए। बी डी ओ ने कहा कि श्रमिकों के ज्यादा से ज्यादा ई श्रम कार्ड बनाए जाएं,और मनरेगा श्रमिकों को ज्यादा से ज्यादा काम दिया जाय जिससे भुखमरी बेरोजगारी से लोगों को राहत मिल सके। उन्होंने प्रधान मंत्री मुख्य मंत्री योजना के आवासों के प्रगति की समीक्षा भी की। साथ ही अधीनस्थ अधिकारियों कर्मचारियों को अवर अभियंताओं,तकनीकी सहायकों को स्वीकृत प्रोजेक्टों को यथोचित समयबद्ध तरीके से कार्य क्रियान्वित किए जाने को कहा। उनके साथ संयुक्त बी डी ओ के रूप में पद भार ग्रहण करने आए बृजेश नारायण त्रिपाठी भी मौजूद रहे। श्री त्रिपाठी जनपद गाजीपुर के निवासी हैं। जिन्हे कोराव ब्लॉक में तैनाती दी गई है।

बृजेश नारायण त्रिपाठी कोरांव ब्लॉक में संयुक्त बीडीओ

कोरांव। कोरांव ब्लॉक में खंड विकास अधिकारी मुकेश कुमार के अतिरिक्त एक जॉइंट बीडीओ की भी नियुक्ति की गई है। कोरांव ब्लॉक में अभी तक एक ही बीडीओ हुआ करते थे किंतु शासन ने एक संयुक्त खंड विकास अधिकारी तैनात कर दिया। बृजेश नारायण त्रिपाठी जनपद गाजीपुर के निवासी हैं। उन्होंने दो अक्टूबर को ब्लॉक आकर कार्यभार की शुरूआत की,स्टाप के लोगों से मिले,और प्रत्येक कार्यालय में जा कर जानकारी ली।

अपने सुहाग की बलि देकर हे राम तुम्हें वनवास दिया : डा. कुसुमाकर

दशहरा मेला मंच पर आयोजित किया गया कवि सम्मेलन देर रात तक लगते रहे ठहाके

अखंड भारत संदेश

करछना। तहसील करछना के पुरवा खास रामलीला मंच पर विराट कवि सम्मेलन का आयोजन वरिष्ठओज कवि बाबू फतेह बहादुर सिंह की अध्यक्षता में विराट कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया कवि सम्मेलन में राम भरत मिलाप के तत्पश्चात कवियों ने अपनी पंक्तियों से उपस्थित दर्शकों एवं श्रोताओं का मन मोह लिया जनमानस में लोकप्रिय लोकगीत विद रामलोचन सांवरिया जी ने रामलीला के गीधराज पर अपनी भाव पंक्तियां प्रस्तुत करते हुए कहा तुम कहां जा बसे गीधराज ले करके अपना कुल समाज त्यागे किस कारन कर्मभूमि तुम कहां जा बसे गीधराज वरिष्ठ गीतकार कवि डॉ राजेंद्र कुमार शुक्ल की पंक्तियां इस प्रकार रही साधारण मानव बन कर जो धरती पर आता है ,बनवासी गिरी वासी के संग रहता है और खाता है , आतताईयो के विरुद्ध प्रत्यंचा ताने खड़ा रहे, सत्ता वैमनस्यता त्याग चले जो वही राम कहलाता है वह जी एवं करुणा के प्रख्यात कभी डॉ. वीरेंद्र सिंह कुसुमाकर जी ने अपनी पंक्तियों में हे तात लोकहित में मैंने पत्थर साहिब कठोर किया अपने सुहाग की बलि देकर हे राम तुम्हें वनवास दिया ने खूब तालियां बटोरी शायर सबरेज अहमदने गंगा जमुनी तहजीब की पंक्तियां उपस्थित श्रोताओं को खूब भाई वही कवि वेदानंद वेद ने मां गंगा एवं नाम की महिमा पर अपनी पंक्तियां प्रस्तुत की रामलीला मंच अध्यक्ष गंगा सिंह ने पधारे हुए कवियों को अपने पदाधिकारियों के साथ अंगवस्त्रम एवं पुष्पगुच्छ के साथ सम्मानित किया वही मंच पर रामलीला के प्रमुख पात्रों को तुलसी कृत रामायण एवं प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट की रामलीला मंच पर प्रमुख रूप से रामनरेश श्रीवास्तव आशीष मिश्रा, हरगेंद्र सिंह, शंभू नाथ उपाध्याय ग्राम प्रधान उमाशंकर भारती, मनजीत सिंह ,नीसु सिंह पुष्पराज सिंह, अप्पू मिश्रा संतोष तिवारी, सुरेंद्र मिश्रा डॉक्टर जगदीश नारायण मिश्रा ,सोनू सिंह ,लल्लन मास्टर आदि विद्यमान रहे।

रामलीला मंच पर विराट कवि सम्मेलन में मंचासीन कविगण

प्रतापगढ़ संदेश

दीपावली उत्सव मेले में बिरहा के माध्यम से कल्याणकारी योजनाओं का हुआ बखान

नपा अध्यक्ष प्रेमलता सिंह व ईओ मुदित सिंह ने कर्मचारियों को बांटे वर्दी

दीपावली उत्सव मेले में बोलतीं नगर पालिकाध्यक्षा प्रेमलता सिंह

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर के केपी कालेज के मैदान में चल रहे दीपावली उत्सव मेला में आए लोगों का लोक गायन के माध्यम से स्वच्छता का जहां संदेश दिया जा रहा है, वहीं सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का बखान भी लोग ध्यान से सुन रहे हैं।

शाम पांच बजे के बाद रोज केपी कालेज के मैदान में आकर्षक कार्यक्रमों को देखने के लिये भीड़ उमड़ रही है।

सोमवार की शाम सरस्वती कला मंच के दीपक कुमार का बिरहा लोगों को खूब भाया। कार्यक्रम में उपस्थित नगर पालिकाध्यक्ष प्रेमलता सिंह ने मेले में आए लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि नगर को स्वच्छ रखने में हमेशा नागरिकों का सहयोग मिला है। उन पर दीपावली पर लक्ष्मी की कृपा बनी रहे, यही मेरी शुभकामना है। इस अवसर पर उपस्थित पूर्व विधायक व नगर पालिकाध्यक्ष रहे हरिप्रताप सिंह ने बताया कि दीपावली के पहले एक नवम्बर को कर्मचारियों के खाते में वेतन चला गया है। उन्होंने सलाह दी कि दीपावली में कोई गलत व्यसन न करें जिससे खुशी में बाधा पडे.। नगर पालिकाध्यक्ष प्रेमलता सिंह व अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह ने सभी कर्मचारियों को वर्दी व दीपावली की मिठाई का उपहार दिया। इस मौके पर सभासद ज्ञानेश मिश्रा, गायत्री शुक्ला व अशोक सिंह, नगर पालिका के सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह, आरआई लाल बहादुर सिंह व राजेश बिंद, सफाई प्रभारी प्रशांत सिंह, मिथिलेश सिंह, सुरजीत सिंह, अनिल शुक्ला, अशोक शुक्ला आदि मौजूद रहे।

धनतेरस पर बाजारों में दिखी चहलपहल, प्रशासन की मुस्तैदी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़ /लालगंज। धनतेरस को लेकर मंगलवार को नगर के बाजारों व लालगंज में खासी चहल पहल देखी गयी। वहीं श्रद्धालुओं को बाबा घुइसरनाथ धाम समेत अंचल के मंदिरो मे दर्शन पूजन मे भी रमे देखा गया। चौक घंटाघर के आसपास कतार से जहां बर्तनों की दुकानें लगी रही वहीं फूल माला तथा पटाखों की भी दुकानें देखी गई। आज बर्तन खरीदने वालों में महिलाओं की ज्यादा भीड़ देखी गई। लोगों का कहना था कि इस बार बर्तन भी अपेक्षाकृत महंगे हैं, फिर भी खरीदारों की भीड़ अन्य वर्षों की तरह इस बार भी बढ़ी रही। नगर की बाजार में दोपहर बाद भीड़ बढ़ने से पुलिस व प्रशासन को देर शाम तक व्यवस्था को लेकर कडी मशक्कत मे देखा गया। लोगों ने बाजारों मे धनतेरस के शुभ मुहूर्त मे भगवान गणेश व लक्ष्मी की मूर्तियों के साथ बर्तन आदि की खरीददारी को लेकर उत्साह मे भी देखा गया। नगर के इंदिरा पार्क को आकर्षक विद्युत छटा से सजाया गया है। वहीं नगर पंचायत कार्यदायी संस्था की ओर से चेयरपर्सन अनीता द्विवेदी तथा ईओ सुभाषचंद्र सिंह की ओर से दीपावली पर कार्यालय के सामने विकास मेले मे भी भीड़ जुटी दिखी। धनतेरस को लेकर भी घरों तथा प्रतिष्ठानों मे दीप जलाये गये। वहीं लोगों ने घरो व प्रतिष्ठानो को आकर्षक विद्युत छटा से जगमग भी कर रखा है। एसडीएम ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह, तहसीलदार जावेद अंसारी व कोतवाल कमलेश पाल ने भ्रमण कर प्रबन्धों की देखरेख की। धनतेरस की पूर्व संध्या पर नगर की बाजार में पुलिस व पीएसी भी पैदल गश्त कर भी शांति व व्यवस्था मे मुस्तैद दिखी।

प्राचार्य का फूल-मालाओं से स्वागत करते शिक्षकगण

डॉ0 शैलेन्द्र मिश्र ने स्थायी प्राचार्य का ग्रहण किया कार्यभार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। एम0डी0पी0जी0 कॉलेज, प्रतापगढ़ के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ0 शैलेन्द्र कुमार मिश्र ने उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा आयोग द्वारा चयनोपरांत हेमवतीनंदन बहुगुणा पोस्टग्रेजुएट कॉलेज, लालगंज, प्रतापगढ़ के स्थायी प्राचार्य के रूप में दायित्व संभाला।

डॉ0 मिश्र मूलतः मछलीशहर, जौनपुर के निवासी हैं तथा इनकी शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हुई है। आपने निवर्तमान प्राचार्य डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद मिश्र से कार्यभार ग्रहण किया। अध्यक्ष प्रबंध, समिति डॉ0 वीरेन्द्र मिश्र ने नवागत प्राचार्य का स्वागत किया।

इस अवसर पर स्वागत समारोह का आयोजन किया गया जिसमे एम0डी0पी0जी0 कॉलेज के प्राचार्य डॉ0 मनोज मिश्र, डॉ0 अरविंद मिश्र, डॉ0 राधाकृष्ण दुबे, डॉ0 किरण मिश्रा, प्रो0 सुधांशु त्रिपाठी, डॉ0 गीता शुक्ला, डॉ0 शैलेश पांडेय, डॉ0 अरुण कुमार मिश्र, डॉ0 संजय दूबे आदि ने नवनियुक्त प्राचार्य के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अपने विचार व्यक्त किए। समारोह में अध्यक्ष, प्रबंध समिति ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

रीवरडेल स्कूल में हुई रंगोली प्रतियोगिता, बच्चों ने मचाया धमाल

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। रीवरडेल पब्लिक स्कूल में मंगलवार को धनतेरस के अवसर पर रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस दौरान रंगोली प्रतियोगिता में बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इस मौके पर स्कूल के मैनेजर मो0 इमरान खान ने कहा कि दीपावली खुशियों का त्योहार है। हमारी भारतीय संस्कृति में इस पुनीत पर्व को प्रकाशोत्सव पर्व कहा जाता है। उन्होंने कहा कि इस बार सभी बच्चे विद्युत बल्ब की जगह दीया जलाएं। उन्होंने कहा कि पटाखों का सुरक्षित ढंग से जलाएं और रोशनी के इस त्योहार को दीयों के साथ मनाएं। इस दौरान उन्होंनें पटाखों को सुरक्षित कैसे जलाना है, इसके बारे में भी बच्चों को बताया। रंगोली प्रतियोगिता में कक्षा-4 में प्रसून, सिद्धार्थ, दिव्यांश, आयुश, अंश, विराट, वरीशा, अनुकृति सिंह, फलक नाज, नबीहा कादिर, आर्या, श्रव्या, कक्षा-5 में पारुल, अदिति, अनुष्का, अन्वेषा, फरीहा, आन्या, श्रेया, सृष्टि, जारा, मानवी, नमरा, गरिमा, रुही, कक्षा-6 में माही, विदुषी, अन्वेषा, आराध्या, अंशिका, कक्षा-7 में श्रुति, आर्या, वैष्णवी, शिफा, आयशा, इशिका, कृति, सारा व कक्षा-8 में राधिका व खुशी ने रंगोली प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। इस मौके पर प्रधानाचार्य सुधा पाण्डेय, आशा पाण्डेय, प्रवेश उपाध्याय, मारुत शर्मा, करन शर्मा, निधि गुप्ता, सुमन श्रीवास्तव, सानिया, तराना, श्रीराम मिश्रा, अनवर हुसैन खां आदि लोग मौजूद रहे।

हर भारतीयों के जीवन में बनी रहे खुशियां : इमरान

रीवरडेल स्कूल में रंगोली प्रतियोगिता के प्रतिभागी छात्राएं

जरूरतमंद बच्चों पर हुई उपहारों की बारिश

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। बच्चा बैंक फ्रेंड्स ग्रुप, बीबीएफजी की तरफ से अनाथ और जरूरतमंद बच्चों पर उपहारों की बारिश की गई। नये वस्त्र, गर्म कपड़े, स्टेशनरी और मिठाई पाने पर नौनिहालों के चेहरे खिल उठे। सियाराम कालोनी में हैप्पी टाइम्स प्ले स्कूल के प्रांगण में धनतेरस के दिन बीबीएफजी की ओर से उपहार और आशीर्वाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 20 से अधिक जरूरतमंद बच्चों को मेडिकल कालेज के वरिष्ठ फिजिशियन डाक्टर मनोज खत्री, बीबीएफजी के सहयोगी गार्ड वीके तिवारी, मोहम्मद अनीश और उमाशंकर की तरफ से बच्चों को नये शर्ट और स्वेटर का वितरण किया गया।

नकब लगाकर दो घरो से सोने चांदी के आभूषण व बर्तन की चोरी

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगंज थाना क्षेत्र के अस्थान चौकी से महज चार सौ मीटर की दूरी पर बीती रात को अज्ञात चोरों ने अस्थान गांव निवासी पुल्लु सरोज पुत्र मैकू लाल व सोहनलाल पुत्र श्रीपाल के घर में पीछे खेत की तरफ से नकब लगाकर अंदर घुस गए, जिसमें पुल्लु सरोज के घर से चांदी की पायल, छागल पीतल फूल के बर्तन व पांच बोरी अनाज चोरी करने के बाद बगल में सोहनलाल के घर में घुसे। वहां से चांदी की हाफ पेटी, चांदी का, छागल, सोने का मंगल सूत्र, सोने की नथिया पुल्ली चोरी करके नौ दो ग्यारह हो गए। मंगलवार की सुबह जब घर के परिजन लोग सोकर उठे तो दोनो घरों का सामान बिखरा पड़ा और पुल्लु के घर के पीछे नकब लगा देख हड़कम्प मच गया। दोनों घरों से हजारों रुपये के कीमती सोने चांदी के आभूषण चुरा ले गए। मौके पर पहुची पुलिस जांच करने में जुटी इस बाबत पूछे जाने पर थाना प्रभारी रुकुमपाल सिंह ने बताया कि तहरीर मिली है जांच के लिए एस आई सुरेंद्र सिंह को दे दिया है। जांच रिपोर्ट के बाद कार्रवाई की जाएगी।

गायक रवि त्रिपाठी का साकेत गर्ल्स पीजी कालेज में हुआ अभिनंदन

महाविद्यालय की प्राचार्य ने प्रतीक चिन्ह देकर किया सम्मानित

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। साकेत गर्ल्स पी0जी0 कालेज के प्रेक्षागृह में गायक कलाकार रवि कुमार त्रिपाठी को महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ0 नीलिमा श्रीवास्तव द्वारा अंगवस्त्र एवं प्रतीक चिन्ह देकर उनका अभिनन्दन किया गया। श्री त्रिपाठी ने द्वीप प्रज्ज्वलन कर के कार्यक्रम का आरम्भ किया।

इस दौरान श्री त्रिपाठी ने दीपावली पर जुमई खाँ द्वारा रचित कथरी गीत प्रस्तुत किया साथ ही माँ मेरी माँ और अन्य फिल्मी गीत के माध्यम से पूरे प्रेक्षागृह को गुंजायमान कर दिया। छात्राओं ने भी श्री त्रिपाठी के स्वागत में अनेकों गीत प्रस्तुत किये। राष्ट्रीय सेवा योजना की छात्राओं द्वारा श्री त्रिपाठी जी को बैच लगाकर उनका स्वागत किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ महाविद्यालय की छात्राओं शिवानी श्रीवास्तव, रूचि, मिताली, श्वेता, प्रिया, प्रतीक्षा, हेमा, रीमा द्वारा प्रस्तुत साई वन्दना, सरस्वती वन्दना एवं स्वागत गीत द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संयोजन राष्ट्रीय सेवा योजना के तीनों इकाईयों के कार्यक्रमाधिकारी डॉ0 अनीता पाण्डेय, अनन्त प्रकाश शुक्ला एवं डॉ0 प्रतिभा मिश्रा द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन महाविद्यालय की छात्रा शालिनी पाण्डेय द्वारा किया गया। कार्यक्रम में आये हुए आगन्तुकों के प्रति आभार बी0एड्0 विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ0 अवधेश कुमार शर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में डॉ0 सरिता सिंह, प्रभा शर्मा, कल्पना भट्ट, आरती श्रीवास्तव, आरती पाण्डेय, ज्योति सिंह, अजमत अली, रईस अहमद एवं समस्त महाविद्यालय परिवार उपस्थित रहा।

गायक रवि त्रिपाठी को सम्मानित करती प्राचार्य डा0 नीलिमा श्रीवास्तव

युवाओं के हक के लिए कांग्रेस जारी रखेगी संघर्ष का मुहिम : मोना

आदर्श विधानसभा का दर्जा दिलाने के लिए मिशन की मजबूती का किया ऐलान

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। क्षेत्रीय विधायक एवं कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना ने कहा है कि प्रियंका गांधी की अगुवाई मे कांग्रेस महिलाओं को आत्म निर्भर बनाने तथा युवाओं को रोजगार का हक दिलाने के लिए आवाज बुलंद करती रहेगी। वहीं क्षेत्रीय विधायक मोना ने कहा कि रामपुरखास को आदर्श विधानसभा क्षेत्र का दर्जा दिलाने के लिए यहां हर जरूरी सड़क तथा बिजली एवं शिक्षा के संसाधनो को मजबूती का उनका मिशन तेजी से जारी रहेगा।

मंगलवार को निर्वाचन क्षेत्र के एक दिवसीय दौरे पर यहां पहुंची विधायक मोना ने कैम्प कार्यालय पर पार्टी कार्यकताओं से मुलाकात की। कैम्प कार्यालय पर जुटे फरियादियों की समस्याओं की भी सुनवाई करते हुए इन्हें निस्तारित कराये जाने का भरोसा दिलाया। इसके पूर्व नौढ़िया के स्कूल परिसर मे आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए विधायक मोना ने कहा कि रामपुरखास मे हाइवे का जो जाल बिछ रहा है उसके पीछे क्षेत्र के लोगों को आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्र मे मजबूती प्रदान करना है।

सभा को संबोधित करते हुए लालगंज प्रमुख इं. अमित प्रताप सिंह तथा चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी एवं देवेश शुक्ल तथा प्रदीप सिंह ने भी क्षेत्रीय विकास मे विधायक मोना के प्रयासो की सराहना की। ग्राम प्रधान शैलेन्द्र निर्मल के संयोजन मे विधायक मोना का ग्रामीणों की ओर से सारस्वत सम्मान भी किया गया। जनसभा की अध्यक्षता पूर्व प्रमुख पुष्पा देवी व संचालन विद्यालय के प्रबंधक आशीष शुक्ल ने किया।

इस मौके पर मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल, आशीष उपाध्याय, जिपंस लालजी यादव, भुवनेश्वर शुक्ल, रघुनाथ सरोज, उमेश जायसवाल आदि मौजूद रहे।

उपचुनावों में पराजय जनता के सरकार के प्रति अविश्वास का संदेश : प्रमोद तिवारी

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। केन्द्रीय कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य प्रमोद तिवारी ने उत्तर भारत के कई राज्यों मे हुए उपचुनाव मे भाजपा को मिली पराजय को जनता के द्वारा भाजपा सरकारो के प्रति अविश्वास करार दिया है। वहीं श्री तिवारी ने उपचुनाव मे इन राज्यों मे कांग्रेस को मिली शानदार जीत को कांग्रेस के पुनः सत्ता मे वापसी का भी साफ संदेश ठहराया है। मंगलवार को जारी बयान मे प्रमोद तिवारी ने कहा कि भाजपा शासित हिमांचल प्रदेश के उपचुनाव तथा कांग्रेस शासित राजस्थान मे हुए उपचुनाव मे सभी सीटो पर बड़ी विजय हासिल कर कांग्रेस ने जीत की बढ़त बनाई है। हिमांचल मे मण्डी लोकसभा सीट पर कांग्रेस के द्वारा भाजपा से छीन लिये जाने को सीडब्ल्यूसी मेंबर प्रमोद तिवारी ने इसे सीधे तौर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रति जनता के अविश्वास का प्रदर्शन भी कहा है। वहीं सीडब्ल्यूसी मेंबर प्रमोद तिवारी ने कहा कि राजस्थान में दो सीटो के उपचुनाव मे भाजपा का एक जगह तीसरे स्थान तथा एक जगह चौथे स्थान पर पहुंचना भी यह स्पष्ट राजनैतिक स्थिति बयां कर रहा है कि जनता का विश्वास अब पूरी तरह से भाजपा से उठ चुका है।

बोलेरो सवार युवकों ने युवक को रास्ते में फेंका

पट्टी, प्रतापगढ़। रिश्तेदार के घर गये युवक को बोलेरो सवार युवकों ने उसे रास्ते में फेंक कर फरार हो गये। जानकारी पर पहुंचे परिजन युवक को इलाज के लिये जिला अस्पताल ले गये । घटना को लेकर परिजनों में रोष व्यक्त है। कंधई थाना क्षेत्र के करनपुर खूझी निवासी मोतीलाल का बेटा उमेश सरोज (24) सोमवार को अमेठी जनपद स्थित अपने एक रिश्तेदार के यहां गया था । मंगलवार को करीब साढे. ग्यारह बजे कंधई थाना क्षेत्र के उतरास गांव के पास उसे बोलेरो से कुछ लोगों ने सड़क किनारे फेंक दिया तथा बोलेरो लेकर फरार हो गये। पता चला है कि युवक के मुंह से झाग निकल रहा था। जानकारी पाते ही दीवानगंज चौकी पुलिस के साथ युवक के परिजन घटनास्थल पर पहुंचे तथा उसे उपचार के लिए सीएचसी बाबा बेलखरनाथ धाम ले गये, जहां हालत गंभीर होने पर उसे जिला मेडिकल अस्पताल रेफर कर दिया गया। चौकी इंचार्ज सूर्य प्रताप सिंह ने बताया कि युवक किन परिस्थितियों में बोलेरो से फेंका गया यह अभी तक ज्ञात नहीं है। तहरीर मिलने पर पुलिस मामले की जांच करेगी।

रंगोली व दीपों की सजावट में छोटे-छोटे बच्चों ने बिखेरे अपनी प्रतिभा के रंग

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। दीपावली व धनतेरस के अवसर पर मंगलवार को नगर के नया माल गोदाम रोड स्थित हैप्पी टाइम स्कूल में छोटे-छोटे बच्चों ने रंगोली बनाकर तथा दीपों को सजाकर अपनी-अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। छात्राओं ने जहां आकर्षक रंगोली बनाई थी, वहीं छात्रों ने दीपक को रंग बिरंगा सजाकर प्रस्तुत किया। मानवी, अन्नपूर्णा, अनन्या व आयुषी ने फूलों की आकर्षक रंगोली बनाई थी। इसके अलावा सिद्धि, सृष्टि सिंह, सृष्टि तिवारी, आराध्या, राशि, आस्था, अंश गुप्ता, वैष्णवी मिश्रा, रिया, काव्या, खुशी, राधिका, सरिता ने रंगोली में अपनी-अपनी प्रतिभा का रंग बिखेरा। इसी क्रम में अभिज्ञान, उदिश, वैभव, देवांश, विराट आदि ने दीपों को सजाने में मेहनत की थी। रंगोली व दीपों की सजावट में अरुणा चार्ल्स के निर्देशन में बच्चों ने अच्छा प्रदर्शन किया। स्कूल के प्रबंधक शैलेन्द्र मिश्र ने बच्चों के प्रयास की सराहना करते हुए दीपावली की शुभकामनाएं दी। बच्चों का उत्साह देखकर सभी शिक्षिकाएं व आसपास के लोग खुश हुए। इस मौके पर शिक्षिका रितु शुक्ला, सीमा पटेल, उमेश श्रीवास्तव, हर्षिता आदि ने प्रतिभागी बच्चों को प्रोत्साहन किया।

हैप्पी टाइम स्कूल में बच्चों में दिखा उत्साह

हैप्पी टाइम स्कूल में रंगोली बनाते बच्चे

इनकमिंग फीडर में बैठा सर्प हुआ ब्लास्ट, बाल-बाल बचे कर्मचारी

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। पट्टी विद्युत उपकेंद्र से जुड़े ढकवा सब स्टेशन पर इनकमिंग फीडर में सर्प घुसने से ब्लाल्ट हो गया जिससे कई घंटे बिजली बाधित रही। बिजली कर्मचारियों के काफी मशक्कत के बाद बिजली बहाल हो सकी। मंगलवार सुबह आठ बजे ढकवा विद्युत सब स्टेशन पर इनकमिंग फील्डर में एक जहरीला सांप घुस गया, जिसके चलते सब स्टेशन में जोर से धमाका हुआ। वहां मौजूद कर्मचारी जावेद रामलाल, रविकांत भाग खड़े हुए। इसके कारण कई गांवों की विद्युत आपूर्ति आठ घंटे बाधित रही। घटना की जानकारी मिलने पर अवर अभियंता नन्हे लाल यादव मौके पर पहुंचे और विद्युत कर्मचारियों द्वारा कड़ी मशक्कत के बाद बिजली बहाल हुई। ब्लास्ट के दौरान सब स्टेशन पर अफरातफरी का माहौल बन रहा। वहीं सर्प जलकर राख हो गया।

खबर संक्षेप

अवैध शराब के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जिले में अवैध शराब के निर्माण एंव तस्करी के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना मंझनपुर पुलिस बल द्वारा अभियुक्त राकेश सरोज पुत्र पंचम लाल निवासी चक थाम्भा थाना मंझनपुर के कब्जे से 10 लीटर अवैध शराब बरमाद होने पर अभियुक्त को गिरफ्तार कर कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है।

अभियुक्त को चार वर्ष कारावास की सजा

कौशाम्बी। थाना कोखराज पर पंजीकृत पाक्सो एक्ट के अभियुक्त सतीश पुत्र मन्नू लाल निवासी सहजादपुर थाना कोखराज को न्यायालय स्पेशल जज पाक्सो एक्ट द्वारा शासन की प्राथमिकता के आधार पर गंभीर एंव जघन्य अपराधों में मिशन शक्ति के तहत पैरवी कर पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन में प्रभावी पैरवी कराते हुए मॉनिटरिंग सेल के माध्यम से चार वर्ष की कारावास व 3000 हजार रुपए के अर्थदण्ड से दंडित किया गया।

बांझ होने का आरोप लगाकर विवाहिता पर बेरहमी से किया गया हमला

सऊदी से लौटे पति ने परिजनों के साथ मिलकर विवाहिता को मारपीट कर घर से बाहर फेंका गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती

अखंड भारत संदेश

परिजनों के साथ मौजूद अस्पताल में विवाहिता

कौशांबी। करारी थाना क्षेत्र के घमसिरा गांव में एक विवाहिता के साथ उसके पति और ससुराल जनों ने बेरहमी की हद पार कर दी है ससुराली जनों ने विवाहिता पर बाँझ का आरोप लगाते हुए उसे लाठी-डंडे से जमकर पीटा है घर से धक्का देकर सड़क पर उसे फेंक दिया है विवाहिता गंभीर हालत पर सड़क पर पड़ी कराहती रही ससुराली जनों के आतंक की सूचना ग्राम प्रधान ने पुलिस को दी है जिस पर पहुंची पुलिस ने विवाहिता को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया है विवाहिता को अस्पताल में भर्ती कराने के बाद पुलिस ने उसके मायके में सूचना दिया है बेटी के साथ मारपीट की घटना की जानकारी मिलते ही विवाहिता के मायके के लोग अस्पताल पहुंच गए हैं। बताया जाता है कि पश्चिम शरीरा थाना क्षेत्र के निबिहा गांव निवासी मोहम्मद कुद्दूस ने अपनी बेटी शहनुमा बेगम की शादी करारी थाना क्षेत्र के घमसिरा गांव निवासी मोहम्मद अल्तमस के साथ मुस्लिम रीति रिवाज से की थी कुछ दिनों तक तो शहनुमा बेगम की स्थिति ससुराल में ठीक रही फिर उसके ऊपर बाँझ का आरोप लगाकर ससुराली जनों ने उसकी पिटाई शुरू कर दी शहनुमा का पति सऊदी में रहता है बताया जाता है कि एक सप्ताह पूर्व सऊदी से वह घर लौटा और विवाहिता पर प्रतिदिन मारपीट शुरू कर दिया है सोमवार को विवाहिता को बेरहमी से पीटकर धक्का मारकर घर के बाहर फेक दिया गया है जिस पर प्रधान ने पुलिस को सूचना देकर अस्पताल में भर्ती कराया है।

धान बेचने के लिए सरकार के कठोर नियम में अटके किसान

अखंड भारत संदेश

बड़े पैमाने पर बिचौलियो और व्यापारी के हाथों लूटे जा रहे है मजबूर किसान

कौशांबी। सेक्टर सरकार किसान हित की बात कर रही है दूसरे तब नियम इतने कठोर कर रही है कि जगह जगह पर किसानों को दिक्कतों से जूझना पड़ता है धाम खेत के मामले में आधार नंबर खतौनी बैंक खाता के साथ-साथ किसानों का मोबाइल नंबर आवश्यक कर दिया गया है तमाम किसान ऐसे हैं जिन्होंने आर्थिक दिक्कतों के चलते मोबाइल रिचार्ज नहीं कराया नंबर बंद हो गया और बाद में नंबर दूसरे कोई लाख हो गया लेकिन किसानों के आधार में पुराने मोबाइल नंबर दर्द अब स्थितियों में उनके धान का रेट स्टेशन का पंजीयन नहीं हो रहा है छोटे और गरीब किसान कैसे डाल देते किसी से तमाम गांव ऐसे हैं जो चकबंदी में है।

चकबंदी के गांव की खतौनी का धान बिक्री रजिस्ट्रेशन में नहीं दर्ज हो रहा है जिससे किसान धान बेचने को बिचौलियों और व्यापारियों के हाथों मजबूर है जिले में अधिकतर किसानों के आधार में मोबाइल नंबर अपने बच्चों के फीड होने व समय पर पडोसी व दूसरे परिचित का होने से किसानों का धान बेचने के लिए कम्प्यूटर फीडिंग नहीं होने से अधिकतर किसान दर दर की ठोकरे खा रहे क्योकि जब तक बनाये गये नियम के अनुसार पीएम किसान सम्मान में फीडिंग मोबाइल नंबर व आधार मोबाइल नंबर टैली नहीं करेगा तब तक कम्प्यूटर फीड नहीं लेगा इसीलिए सरकारी खरीद केंद्रों में धान बेचने वाले किसान ठोकरें खाने को मजबूर हैं क्या अनपढ़ किसान आधुनिकता की दौड़ में डिजिटल इंडिया में नियम कानून के साथ दौड़ पायेगा, क्या जिले के आला अधिकारी धान बेचने में दर-दर परेशान होने वाले इन बेसहारा किसानों की मदद कर सकेंगे।

न्यूज झरोखा

धनतेरस पर खरीददारों की बाजार में उमड़ी भीड़

अझुवा कौशाम्बी। कोरोना काल के बाद बाजार में धनतेरस पर अच्छे कारोबार से व्यापारियों को राहत मिली है धनतेरस को लेकर बाजारों में जमकर खरीददारी की गई है और खूब धन वर्षा हुई है विशेष तौर से बर्तन सराफा इलेक्ट्रॉनिक्स ऑटोमोबाइल कपड़ा बाजार में जबरदस्त उछाल आया है वही सराफा मिठाई और पटाखों का कारोबार स्थिर रहा है सजावटी सामान गिफ्ट वह फूलों के कारोबार में जबरदस्त बढ़ोतरी हुई है धनतेरस और दीपावली पूजन के लिए पूजन सामग्री की दुकानों पर लोगों की भारी भीड़ रही लोगों ने अगरबत्ती से लेकर दीपक और गणेश लक्ष्मी की छोटी बड़ी प्रतिमाएं खरीदी हैं। धनतेरस और दीपावली की खरीदारी के लिए बाजार में लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी मंगलवार की सुबह से ही लोगों ने तैयारी शुरू कर दी बाजार में भीड़ की वजह से कई जगहों पर जाम का नजारा देखने को मिला धनतेरस को लेकर सुबह से ही बाजार में लोगों की आवाजाही शुरू हो गई 11:00 बजे के बाद बाजार पूरी तरह से गुलजार हो गए बर्तनों की दुकानों पर लोगों की खासी भीड़ रही इसके अलावा ज्वेलर्स की दुकानों पर भी खरीदारों का तांता लगा रहा लोगों ने चांदी के सिक्के और चांदी की छोटी मूर्तियां खरीदने में रुचि दिखाई साथ ही किराना दुकानों पर भी काफी भीड़ रही वहीं बाइक की एडवांस बुकिंग कराने वाले लोग सुबह से ही शो रूम पहुंच गए । 9:00 बजे के बाद खुलने वाले शोरूम धनतेरस में सुबह 7:00 बजे खुल गए इलेक्ट्रॉनिक और बाइक व मोबाइल की बिक्री खूब हुई पूरे जिले के विभिन्न बाजारों में धनतेरस के अवसर पर खरीददारों की भीड़ रही है कृष्णा ऑटोमोबाइल के प्रोपराइटर शनि अग्रहरी ने बताया कि बाजार की स्थिति बेहतर रही है। गौरतलब है कि धनतेरस और दीपावली को लेकर दुकानदारों ने पहले से ही तैयारी कर ली थी उधर बाजार में भीड़ से जाम की स्थिति बनी रही हालांकि अझुवा चौकी इंचार्ज विजेंद्र सिंह मय हमराहियों नगर पंचायत के विभिन्न गलियों में दुकानदारों और व्यापारियों से मिलकर सुरक्षा का अहसास दिलाते रहे।

ट्रेनिंग के बाद पहली बार घर पहुंचे डिप्टी एसपी का स्वागत

कौशांबी। चायल तहसील क्षेत्र के कस्बा चायल के नईम मियां का पूरा मोहल्ला निवासी रघुराज पुलिस विभाग में डिप्टी एसपी के पद पर चयनित हुए हैं विभाग ने उन्हें ट्रेनिंग के लिए बुलाया था ट्रेनिंग पूरी करने के बाद वह वापस गांव लौटे हैं गांव लौटते ही रिश्तेदार परिजनों के साथ साथ पूरे गांव में खुशी का माहौल है जैसे ही अपने लाडले को गांव वालों ने देखा खुशी से झूम उठे हैं और माल्यार्पण कर ग्रामीणों ने उनका जोरदार स्वागत किया है बताते चलें कि चायल कस्बा के नईम मियां का पुरवा मोहल्ला निवासी रघुराज ने पहले एफसीआई में नौकरी ज्वाइन की थी लेकिन 2017 में पीसीएस की परीक्षा उन्होंने दी जिस पर उनका चयन डिप्टी एसपी के पद पर हो गया एफसीआई की नौकरी छोड़कर वह डिप्टी एसपी के पद पर ट्रेनिंग पर चले गए मंगलवार को ट्रेनिग से वापस गांव लौटे गांव वालों ने स्वागत कर माला अर्पण किया और खुशियां जाहिर की बुजुर्गों का आशीर्वाद लेते हुए युवाओं के वह प्रेरणा के स्रोत बने है डिप्टी एसपी रघुराज की बूढ़ी मां राजकली बेटे के तरक्की की बात सुनकर फूली नहीं समा रही थी जैसे ही डिप्टी एसपी घर पहुंचे पहले मां का पैर छूकर उन्होंने आशीर्वाद लिया है इस मौके पर उन्होंने कहा कि उनकी मां की प्रेरणा और आशीर्वाद से वह इन बुलंदियों पर पहुंचे हैं डिप्टी एसपी रघुराज के आगमन पर उनकी पत्नी डॉ प्रिया रघुराजू माता राज काली देवी जीजा राकेश कुमार भैया जगन नाथ बहन गीता देवी भांजी रागिनी गौतम कृतिका गौतम राम सुचित अजय कुमार अनिल कुमार विजय कुमार पत्रकार सहित तमाम ग्रामीण फूले नहीं समा रहे हैं चारों और जश्न का माहौल है।

स्कूल परिसर में छात्राओं द्वारा बनाई गयी आकर्षक रंगोली।

दीपावली के पूर्व बच्चों के मध्य किया गया रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन

स्वर्गीय मुश्ताक अहमद बालिका जूनियर हाई स्कूल मे बच्चों को सुरक्षित रहने के लिए दीपावली पर्व की दी जानकारी

कौशाम्बी। करारी क्षेत्र के एक शिक्षण संस्थान स्वर्गीय मुश्ताक अहमद बालिका जूनियर हाई स्कूल सालेपुर में बच्चों के बीच दीपावली के अवसर पर मंगलवार को रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन प्रधानाध्यापक फारूक अहमद खान के नेतृत्व में कराया गया। जिसमें बच्चों ने उत्साहपूर्वक बढ़- चढ़ कर हिस्सा लिया और अपनी-अपनी कक्षा में सुंदर और मन को हरने वाली रंगोली को भूमि पर अलग-अलग रंगों द्वारा चित्र बनाकर अपनी अपनी कला का प्रदर्शन किया। यह कार्यक्रम प्रधानाध्यापक फारूक अहमद एवम् अन्य अध्यापकों कि उपस्थिति में किया गया जिसमें बच्चों को पटाखें से दूर रहने के लिए कहा गया तथा पटाखों के द्वारा होने वाली हानियों के बारे में भी बच्चों को अवगत कराया गया। यहां विद्यालय के प्रधानाध्यापक, प्रबंधक,अध्यापक एवं अध्यापिकाएं मौजूद रही।

हत्यारों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर सौंपा ज्ञापन

कौशांबी। भागीदारी पार्टी के मंडल अध्यक्ष रवि कांत प्रजापति के नेतृत्व में दर्जनों पार्टी पदाधिकारी जिला अधिकारी से मिले हैं और कोखराज थाना क्षेत्र के बिसारा गांव निवासी देवराज प्रजापति पुत्र रामकृपाल प्रजापति की हत्या में शामिल लोगों की गिरफ्तारी की मांग से संबंधित मुख्यमंत्री के नाम संबोधित ज्ञापन सौंपा है इस मौके पर उपस्थित रविकांत प्रजापति एडवोकेट ने कहा कि 14 अक्टूबर को बड़ी बेरहमी से देवराज प्रजापति की हत्या कर दी गई है उन्होंने कहा कि 20 दिन बीत जाने के बाद भी देवराज के हत्यारों की गिरफ्तारी कोखराज पुलिस नहीं कर सकी है देवराज के हत्यारों की गिरफ्तारी उनके परिवार को सुरक्षा मृतक परिवार के आश्रितों को पचास लाख रुपए का मुआवजा मृतक आश्रित को चतुर्थ श्रेणी नौकरी कृषि योग्य भूमि सहित विभिन्न मुआवजा दिए जाने की मांग भागीदारी पार्टी ने मुख्यमंत्री से की है इस मौके पर संजय कुमार बुधराम श्यामलाल अर्जुन सिंह विजय कुमार सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

एमजीएम ग्रुप ऑफ स्कूल के सभी संस्थानों में दीपावली महोत्सव का हुआ आयोजन

संस्थान के चेयरमैन विधायक संजय गुप्ता ने कहा कि कठिन परिश्रम और लगन ही आगे चलकर सफलता का मापदंड हो सकती है

अखंड भारत संदेश

विद्यालय परिसर में रंगोली बनाकर दीपावली का त्योहार मनाते शिक्षक व छात्राएं।

कौशाम्बी। भरवारी स्थित मां गायत्री मेमोरियल कौशांबी प्रेसिडेंसी स्कूल, एन डी कान्वेंट स्कूल एंड कॉलेज ,किड्जी, रिद्धि सिद्धि कॉलेज आफ हायर एजुकेशन चकमांहपुर पांडे मऊ में दीपावली महोत्सव का आयोजन बड़े धूमधाम से किया गया बच्चों ने बड़े उत्साह से आज रंगोली प्रतियोगिता में हिस्सा लिया विभिन्न प्रकार की कलाकृतियों से सुसज्जित दीपो को जीवंत करते हुए बच्चों ने अपने प्रतिभा को दशार्या एमजीएम ग्रुप ऑफ स्कूल केपीएस की प्रधानाचार्य श्रीमती सीमा पवार ने भगवान गणेश और लक्ष्मी का पूजन किया इसी क्रम में एन डी ग्रुप ऑफ स्कूल के प्रिंसिपल डॉ मयंक कुमार मिश्रा ने भगवान गणेश और लक्ष्मी का पूजन किया सभी संस्थानों में उत्साह ,उमंग की लहर देखने को मिल रही थी। संस्थान के प्रबंधक चायल विधायक संजय कुमार गुप्ता ने दीपावली के इस महोत्सव के अवसर पर सभी संस्थानों के प्रधानाचार्य शिक्षकों और बच्चों को शुभकामनाएं दिया और अपने संदेश में कहा कि कठिन परिश्रम और लगन ही आगे चलकर के सफलता का मापदंड हो सकती है कभी भी कठिन परिश्रम बेकार नहीं होती कठिन परिश्रम करते रहो सफलता की ओर बढ़ते रहो और आप सभी के परिवार धनधान्य से पूर्ण हो समृद्धि आपका मस्तक चूमे इस अवसर पर समस्त संस्थानों के शिक्षक एवं शिक्षिकाएं उपस्थित रही।

टू डोर कैम्पेन व विधिक साक्षरता शिविर का किया आयोजन

कौशाम्बी। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वाधान में आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत 49 ग्राम सभा एवं 14 शहरी क्षेत्रों में डोर टू डोर कैम्पेन व विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन जनपद कौशाम्बी में किया गया है। सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सौजन्य से महिलाओं के अधिकार के सम्बंध में विषय पर विधिक साक्षरता एवं सहायता हेतू जागरूक किया।

तीन वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जिले के अलग अलग थानों द्वारा तीन वारण्टी अभियुक्तो को गिरफ्तार कर न्यायालय भेज दिया है जानकारी के मुताबिक थाना मोहब्बतपुर पइंसा पुलिस द्वारा वारण्टी अभियुक्त सुरेश कुमार पुत्र स्व0 बोधी निवासी मोहब्बतपुर अनेठा थाना मोहब्बतपुर पइंसा को गिरफ्तार कर कार्यवाही के पश्चात न्यायालय भेज दिया है इसी प्रकार थाना सराय अकिल पुलिस द्वारा अभियुक्त गुड्डू कुमार शर्मा पुत्र ओम प्रकार शर्मा निवासी इमलीगांव थाना सराय अकिल को गिरफ्तार कर कार्यवाही के पश्चात न्यायालय भेज दिया है इसी प्रकार थाना कोखराज पुलिस बल द्वारा अभियुक्त मो0 हनीफ पुत्र आलम चंद

शिक्षकों की समस्याओं के निस्तारण हेतु राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ ने सौंपा ज्ञापन

अखंड भारत संदेश

ज्ञापन देते शिक्षक

कौशाम्बी। सोमवार को राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ कौशाम्बी के संयोजक ओम दत्त त्रिपाठी के नेतृत्व में संगठन के सदस्यों ने जनपद के बेसिक शिक्षा अधिकारी को ज्ञापन दिया। ज्ञापन में शिक्षकों की पदोन्नति,उपार्जित अवकाश एरियर भुगतान सहित कई समस्याओं के निस्तारण के लिए मांग की गई। ज्ञापन में शासन के निदेशों के क्रम में अन्य जनपदो की तरह शिक्षक वरिष्ठता सूची तैयार कर पदोन्नति करने जनपद में कार्यरत शिक्षकों के अवशेष देय(एरियर) के भुगतान हेतु शिक्षको की सूची लेखा कार्यालय को उपलब्ध कराने और शासन के निदेर्शानुसार अनुसार समस्त शिक्षकों को प्रति सेवा वर्ष के एवज में एक प्रतिकर अवकाश की दर से मानव सम्पदा पोर्टल पर प्रतिकर अवकाश अंकित किए जाने एवं एनपीएस की कटौती को प्रान पर नियमित रूप से जमा करने और अवकाश के दिनों में कार्य करने के एवज में प्रतिकर अवकाश की मांग की गई। शिक्षको की समस्याओं के निराकरण हेतु माह में एक दिन मान्यता प्राप्त शिक्षक संगठनों की मीटिंग /बैठक आहूत किए जाने,एवं शिक्षक समस्याओं के निराकरण की मांग की गई। वित्त एवं लेखाधिकारी द्वारा मंझनपुर ब्लॉक के चयन वेतनमान प्राप्त 10 शिक्षकों का वेतन उनके कनिष्ठ शिक्षकों से वेतन कम कर दिया गया है जो कि नियमानुसार गलत है। वित्तीय हस्त पुस्तिका के नियम 22 बी का लाभ प्रदान कर उनका वेतन कनिष्ठ शिक्षक के बराबर किए जाने की मांग की। ज्ञापन में राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ द्वारा कौशाम्बी जनपद में धनतेरस के अवकाश हेतु मांग की। बेसिक शिक्षा अधिकारी ने ज्ञापन में दी गई समस्याओं के निस्तारण के लिए उचित कार्यवाही करने का आश्वासन दिया। इस मौके पर सह संयोजक उमेश चन्द्र तिवारी, गोरख नाथ मिश्रा मायापति त्रिपाठी, अनूप कुमार वर्मा अवनीश मिश्रा, शेष कुमार दुबे, नीतू सिंह, आशीष कुमार शुक्ला, सुनील,विमल कुमार,भूपेंद्र कुमार सिंह,दीपक सिंह, मुदस्सर,रजनी,शोभा देवी समेत कई शिक्षक मौजूद रहे।

साइबर अपराध से बचने के बताए तरीके

कौशाम्बी। पुलिस महानिर्देशक उत्तर प्रदेश लखनऊ द्वारा बढ़ते साइबर अपराध के दृष्टिगत प्रदेश के समस्त जनपदों में सार्वजनिक स्थानों जैसे स्कूल कालेजो व अन्य सार्वजनिक स्थानों में साइबर अपराध से जागरूक करने का कार्यक्रम का शुभ आरम्भ किया गया जिसके क्रम में सुशीला देवी फामेर्सी कालेज द्वारा साइबर जागरूकता दिवस साइबर क्राइम सेल द्वारा और बाल बृद्ध कल्याण समिति के द्वारा आयोजित कार्यक्रम मिशन शक्ति कार्यक्रम हुए साइबर अपराध जैसे एटीएम कार्ड स्कीमिंग यूपीआई फ्राड फेसबुक फ्राड कौन बनेगा करोड़पति केवाईसी फ्राड व अन्य विभिन्न प्रकार के साइबर अपराध से संबंधित अपराध अपराध के बारे में बताया व जागरूक किया गया जिसमें आमजनमानस साइबर फ्राड से बच सके जिसमे कालेज के चेयरमैन अजय कुमार श्रीवास्तव दिलीप श्रीवास्तव केके श्रीवास्तव एमपी कान्वेंट के शिक्षकगण और बाल वृद्ध नारी कल्याण समिति के समस्त कार्यकर्ता अध्यक्ष जया श्रीवास्तव सचिव प्रियंका द्विवेदी मिना सिंह ममता चौधरी अल्का श्रीवास्तव सत्यवती श्रीवास्तव व अन्य शिक्षकगण व कालेज के विद्यार्थी गण उपस्थित रहे।

कोरोना महामारी के बाद इस त्योहार पर बाजारों में दिखाई दिया रौनक : रमेश अग्रहरि

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। व्यापार मंडल के प्रांतीय वरिष्ठ महामंत्री रमेश अग्रहरि ने कहा कि कोरोना महामारी के बाद इस बार धनतेरस के त्योहार पर जनपद कौशाम्बी के विभिन्न बाजारों में रौनक दिखाई दिया आम आदमी ने सड़कों पर धनतेरस की जमकर खरीदारी किया जिसमे आटोमोबाइल सेक्टर में 25 करोड़ जवैलरी व त्योंहार का आवश्यक वस्तुओं की 25 करोड़ के लगभग खरीदारी हुई इससे बहुत दिनों के बाद जनपद के व्यापारियों का चेहरे पर खुशियां नजर आयी किराना कपड़े मिठाई जवैलरी आदि के छोटे बड़े व्यापारियों ने इस त्यौहार पर आम जनता के खरीदारी से सन्तुष्ट दिखे उन्होंने कहा कि कोरोना के चलते व्यापारियों का व्यापार चौपट हो गया था लेकिन इस बार कोरोनावायरस की मार व्यापारियों पर नहीं पड़ी है और त्यौहार पर बाजार खुले हैं जिससे व्यापारियों को राहत मिली है और त्यौहार पर जमकर खरीददारों ने सामानों की खरीद की है।

मंत्री ने विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थियों को किया हितलाभ वितरण

संत रविदास शिक्षा सहायता योजना के 200 लाभार्थियों को किया साइकिल वितरण मंत्री ने कहा कि देश व प्रदेश में चतुमुर्खी विकास की गंगा बह रही है

अखंड भारत संदेश

कार्यक्रम को सम्बोधित करते मंत्री स्वामी प्रसाद मौर्य व मंच पर बैठे विधायक व अन्य

कौशाम्बी। प्रदेश के मंत्री श्रम एवं सेवायोजन, समन्वय विभाग उ0प्र0 स्वामी प्रसाद मौर्य ने मंगलवार को ग्राम-देवरा पट्टी नरवर, मूरतगंज में मेड़ई कल्याणी सेवा ट्रस्ट के स्थापना दिवस कार्यक्रम में प्रतिभाग किया तथा उ0प्र0 भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड द्वारा निर्माण श्रमिकों के हितार्थ संचालित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थियों को हितलाभ वितरण किया। मंत्री ने मातृत्व शिशु एवं बालिका मदद योजना के 100 लाभार्थियां को 29 लाख 92 हजार 708, बालिका आशीर्वाद योजना के 08 लाभार्थियों को 02 लाख 25 हजार एवं पुत्री विवाह अनुदान सहायता योजना के 100 लाभार्थियों को 55 लाख की आर्थिक सहायता के स्वीकृत प्रमाण पत्र तथा संत रविदास शिक्षा सहायता योजना के 200 लाभार्थियों को साइकिल वितरित किया इसके साथ ही मंत्री ने मेड़ई कल्याणी सेवा ट्रस्ट द्वारा आयोजित खेल/सांस्कृतिक कार्यक्रम, सामान्य ज्ञान, रंगोली, सिलाई एंव मेंहदी प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभाशाली बच्चां को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर विधायक मंझनपुर लाल बहादुर विधायक चायल संजय गुप्ता एवं मुख्य विकास अधिकारी शशिकांत त्रिपाठी उपस्थित रहे। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मंत्री ने कहा कि देश को प्रधानमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी का यशस्वी नेतृत्व मिला है। प्रदेश में 04 लेन, 06 लेन की सड़कों के साथ ही पूर्वान्चल एक्सप्रेसवे एवं बुल्देलखण्ड एक्सप्रेसवे का निर्माण कार्य हो रहा है। सरकार विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं से श्रमिक, छात्र, नौजवान, किसान एवं महिलाओं आदि को लाभान्वित कर रही है। समाज के अंतिम पायदान के व्यक्ति को भी लाभान्वित किया जा रहा है। केन्द्र व प्रदेश सरकार पं0 दीनदयाल उपाध्याय के सपनों को साकार कर रही है। मंत्री ने कहा कि प्रदेश के प्रत्येक जनपद में मेडिकल कालेज बनाये जाने की कार्यवाही की जा रही है तथा महाविद्यालय बनाये जा रहे हैं। देश व प्रदेश में चतुमुर्खी विकास की गंगा बह रही है। उन्होने कहा कि श्रम विभाग श्रमिकों की चिंता कर रही है, श्रमिकों को सम्मान देने का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने निर्माण श्रमिकों हेतु संचालित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि शिशु हितलाभ योजना के तहत सभी पंजीकृत निर्माण कर्मकारों/श्रमिको (पुरुष एवं महिला दोनों) के अधिकतम प्रथम दो नवजात शिशुओं के, लड़का होने पर रु0 20,000 एवं लड़की होने पर रु0 25000 की धनराशि एकमुश्त पुष्टाहार हेतु उपलब्ध करायी जायेगी। मातृत्व हितलाभ योजनान्तर्गत पंजीकृत लाभार्थी महिला श्रमिक के संस्थागत प्रसव प्रमाण-पत्र सहित आवेदन करने पर महिला कर्मकार को मातृत्व हितलाभ के रुप में उसकी कार्य श्रेणी के अनुसार निर्धारित न्यूनतम मजदूरी की दर से 03 माह के मजदूरी के समतुल्य धनराशि तथा रु0 एक हजार-चिकित्सा बोनस के रुप में दिया जायेगा एवं पंजीकृत कर्मकार पुरुष होने पर उनकी पत्नियों को रु0 6,000 की धनराशि, पुष्टाहार हेतु एकमुश्त अधिकतम दो प्रसव तक उपलब्ध कराया जायेगा। इस योजना में बालिका के जन्म पर रु0 25,000 की धनराशि सावधि जमा के रूप में दिया जायेगा, जो बालिका के 18 वर्ष की आयुपूर्ण होने पर भुगतान होगा। दूसरी संतान भी बालिका होने पर दोनों बालिकाओं को हितलाभ अनुमन्य होगा। यदि प्रथम और द्वितीय प्रसव में एक से अधिक बालिका संतानो का जन्म होता है तो सभी बालिकाओं को हितलाभ अनुमन्य होगा। विधिपूर्वक गोद ली गयी बालिका को प्रथम बालिका मानते हुए हितलाभ अनुमन्य होगा। शर्त है कि लाभार्थी ने कम से कम एक वर्ष तक बोर्ड का सदस्य हो अर्थात कम से कम दो बार अंशदान बोर्ड खाते में जमा कराया हो। संत रविदास शिक्षा सहायता छात्रवृत्ति योजनान्तर्गत सभी पंजीकृत निर्माण कर्मकारों/ श्रमिकों के बच्चों को, शासकीय या मान्यता प्राप्त शिक्षा संस्थान के प्रधानाचार्य/सक्षम प्राधिकारी से 60 प्रतिशत उपस्थिति प्रमाण-पत्र सहित आवेदन किये जाने पर प्रतिमाह शिक्षा सहायता छात्रवृत्ति दिया जायेगा। कक्षा- 1 से 5 तक रु0 150, कक्षा - 6-10 रु0 200, कक्षा- 11-12 रु0 250, शासकीय संस्थाओं में आईटीआई या समकक्ष प्रशिक्षण पाठ्यक्रम- रु0 500, शासकीय संस्थाओं में पॉलीटेक्निक या समकक्ष पाठ्यक्रम रू0 800, शासकीय संस्थाओं में इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम रू0 3000, शासकीय संस्थाओं में मेडिकल पाठ्यक्रम रू0 5000, इंजीनियरिंग और मेडिकल के स्नातकोत्तर डिग्री हेतु रु0 8000 और किसी विषय में अनुसंधान हेतु रु0 12,000 प्रतिमाह छात्रवृत्ति दिया जायेगा। इसके साथ ही योजना के अन्तर्गत पंजीकृत निर्माण श्रमिकों की पुत्रियों को कक्षा 10 या कक्षा -12 उत्तीर्ण कर अगली कक्षा में प्रवेशित होने पर उन्हें आगे की पढ़ाई हेतु प्रेरित करने एवं उन्हे विद्यालय जाने हेतु रु0 3500 तक की साइकिल प्रदान की जयेगी। मेधावी छात्र पुरस्कार योजना के तहत सभी पंजीकृत निर्माण कर्मकारों/श्रमिको के मेधावी बच्चों को शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित करने और उच्च एवं व्यवसायिक शिक्षा से जोड़ने के लिए छात्र एवं छात्राओं को क्रमशः- कक्षा 5-7 में 55 प्रतिशत प्राप्तांक पर रू0 4000-4500, कक्षा 8 में 55 प्रतिशत प्राप्तांक पर रू0 5000-5500, कक्षा 10 में 50 प्रतिशत प्राप्तांक पर रु0 5000-5500 तथा कक्षा 12 में 50 प्रतिशत प्राप्तांक रु0 8000-10,000 बी0एस0सी0/बी0कॉम/एम0ए0/एम0एम0सी0/एम0कॉम/एल0एल0बी0/पॉलीटेक्निकडिप्लोमा/इंजीनियरिंग/चिकित्सा डिग्री में 60 प्रतिशत प्राप्तांक पर रु0 10,000-22,000 की धनराशि पुरस्कार रूप में दो किश्तों में- प्रथम किश्त परीक्षा उत्तीर्ण करने और द्वितीय किश्त अगली कक्षा में प्रवेश लेने पर दिया जायेगा। कन्या विवाह सहायता योजना के अन्तर्गत सभी पंजीकृत निर्माण श्रमिकों को कम से कम 100 दिन तक बोर्ड नियमित सदस्यता धारित करने वाले पंजीकृत निर्माण कर्मकारों/श्रमिकों की पुत्री के विवाह के लिए रु0 55,000 की धनराशि अनुदान के रुप में देय होगी। अन्तजार्तीय विवाह हेतु रु0 61,000 तथा एक साथ एक स्थल पर न्यूनतम 11 जोडों का सामूहिक विवाह होने की दशा में रु0 75,000 प्रति जोड़े की दर से भुगतान किया जायेगा। गम्भीर बीमारी सहायता योजनान्तर्गत ऐसे पंजीकृत निर्माण श्रमिक/उनके आश्रित जो आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना/मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना में आच्छादित नहीं है, की बीमारी की स्थिति में उनके द्वारा किसी शासकीय चिकित्सालय में इलाज कराये जाने की दशा में ऐसी बीमारी पर आयुष्मान भारत योजना में चिकित्सा पर आने वाले व्ययभार के समतुल्य धनराशि की प्रतिपूर्ति बोर्ड द्वारा की जायेगी।

सम्पादकीय

सोने की चमक

सोने की खरीद, वाहन और भवनों की खरीद न केवल जरूरत के लिए, बल्कि बहुत सारे लोग निवेश के उद्देश्य भी करते हैं। इन क्षेत्रों में तेजी का अर्थ है कि लोग अब बड़ी पूंजी के निवेश को लेकर मुक्त-हस्त हुए हैं। बाजार का अस्तित्व उपभोक्ता के निवेश पर ही निर्भर रहता है। अब सोने की चमक धीरे-धीरे लौट रही है। कोरोना संक्रमण के चलते पूरी दुनिया में व्यापारिक-वाणिज्यिक गतिविधियां थम गई थीं। उसका असर सोने की खरीद-बिक्री पर भी पड़ा था। पिछले साल सोने की कुल मांग घट कर 94.6 टन हो गई थी। पिछली तिमाही में इसकी मांग सैंतालीस फीसद बढ़ कर 139.1 टन पर पहुंच गई। इसे कोविड पूर्व की मांग के बराबर बताया जा रहा है। विश्व स्वर्ण परिषद ने इसे भारत में आर्थिक गतिविधियों में जबर्दस्त उछाल का संकेत बताया है। हालांकि इन दिनों शादियों का समय चल रहा है और इस दौरान सोने की खरीद-बिक्री बाकी मौसमों की तुलना में काफी बढ़ जाती है। इसकी एक बड़ी वजह तो यह भी मानी जा सकती है। मगर विश्व स्वर्ण परिषद ने उम्मीद जताई है कि सोने की यह चमक बरकरार रहने वाली है। इससे यह स्पष्ट होता है कि कोरोना महामारी से पैदा अनिश्चितता के चलते लोगों ने अपनी जमा-पूंजी को खर्च करने को लेकर जो हाथ रोक रखे थे, भारी निवेश से हिचक रहे थे, वह हिचक अब दूर हो गई है। यानी बाजार में अब पूंजी का प्रवाह बढ़ने की उम्मीद की जा सकती है।

बाजार में रौनक लौटने की उम्मीद कुछ और वजहों से भी बनी है। कोरोना संक्रमण के बाद वाहनों और भवनों की बिक्री में भी तेजी आई है। कोरोना के पहले ही वाहन उद्योग बुरी स्थिति में पहुंच चुका था। इसके चलते कई बहुराष्ट्रीय मोटर वाहन कंपनियों ने भारत में अपने कारोबार समेट लिए। पर कोरोना की दूसरी लहर के शांत पड़ते ही फिर से वाहन बाजार में तेजी देखी गई। इसी तरह कई सालों से भवन निर्माण के क्षेत्र में कारोबार ठप पड़ा हुआ था। लाखों घर तैयार खड़े थे, पर उनके खरीदार नहीं मिल रहे थे, पर अब इस क्षेत्र में भी तेजी देखी जा रही है। सोने की खरीद, वाहन और भवनों की खरीद न केवल जरूरत के लिए, बल्कि बहुत सारे लोग निवेश के उद्देश्य भी करते हैं। इन क्षेत्रों में तेजी का अर्थ है कि लोग अब बड़ी पूंजी के निवेश को लेकर मुक्त-हस्त हुए हैं। बाजार का अस्तित्व उपभोक्ता के निवेश पर ही निर्भर रहता है। हालांकि इस वक्त अर्थव्यवस्था की हालत अच्छी नहीं है, लाखों लोगों की नौकरियां और रोजगार छिन गए हैं, इसलिए लोगों की क्रयशक्ति पर बुरा असर पड़ने के आंकड़े आते रहते हैं। इसके बावजूद अगर बड़े निवेश और खरीदारियां हो रही हैं, तो इससे निस्संदेह दूसरे क्षेत्रों को भी बल मिलेगा।

हालांकि सोने की खरीद-बिक्री में कमी या उछाल का सामान्य बाजार पर कोई सीधा असर इसलिए नहीं पड़ता, क्योंकि सोना चाहे जेवर के लिए खरीदा जाए, उपहार के लिए या फिर निवेश के उद्देश्य से, उसका बाजार में प्रवाह उस तरह नहीं होता, जैसे दूसरी चीजों का होता है। सोना उपभोक्ता के पास ही जमा रहता है। इसलिए इससे बेशक उपभोक्ता के निवेश के प्रति उत्साह का पता चलता हो, पर समग्र अर्थव्यवस्था पर इसके दूरगामी असर का दावा करना जल्दबाजी होगी। आम नागरिकों के सामने फिलहाल रोजगार का संकट है, पेट्रोल-डीजल, खाद्यान्न, खाद्य तेल और सब्जियों आदि की आसमान छूती कीमतों से पार पाने की चुनौती है। महंगाई बाजार की सबसे बड़ी दुश्मन है। जब तक इस पर काबू नहीं पाया जाता, कुछ मुस्तकिल नौकरी-पेशे और बड़ी कमाई वाले लोगों के निवेश के बल पर बाजार को लंबे समय तक टिकाए रखना कठिन ही बना रहेगा।

सिर्फ कोरी बातों से काम नहीं चलेगा, आतंक के खिलाफ दुनिया को संगठित होना होगा

ललित गर्ग

अफगानिस्तान दुनिया में नफरत और हिंसा बढ़ाने की वजह न बने। कुल मिलाकर, मानवीयता, उदारता और समझ की खिड़की खुली रहनी चाहिए, ताकि इंसानियत शर्मसार न हो, इसके लिये समूची दुनिया को व्यापक प्रयत्न करने होंगे।

अफगानिस्तान को आतंकवाद के लिये इस्तेमाल किये जाने की घटनाओं को लेकर भारत और अमेरिका का चिन्तित होना स्वाभाविक है। हकीकत यह है कि अफगानिस्तान लंबे समय से आतंकी संगठनों एवं आतंकवादी गतिविधियों का बड़ा केंद्र बना हुआ है, जो समूची दुनिया के लिये एक गंभीर खतरा है। अब अफगानिस्तान में तालिबान के सत्ता में आने के बाद यह खतरा और बढ़ गया। यह खतरा सिर्फ भारत और अमेरिका के लिए नहीं, पूरी दुनिया के लिए चिंता की बात है। भारत के लिये यह अधिक चिन्ताजनक इसलिये है कि पाकिस्तान इसका इस्तेमाल कश्मीर में आतंकवाद को उग्र करने में करेगा। इसलिए दुनिया की बड़ी शक्तियों को मिल कर इससे निपटने की जरूरत है। आतंकवाद के खतरे को लेकर भारत और अमेरिका के बीच दो दिन की रणनीतिक स्तर की वार्ता में इस बात पर सहमति बनी कि आतंकी गतिविधियों पर लगाम के लिए अफगानिस्तान पर लगातार दबाव बनाया जाना बड़ी आवश्यकता है।

अफगानिस्तान में आतंक का नंगा नाच होने लगा है, हो रहा है। वहां अराजकता एवं बर्बरता की कालिमा छा गयी है, अब वहां मजहब के चश्मे से विभिन्न देशों के साथ अपने संबंध तय करने की कोशिशें होने लगी है, महिलायें-बच्चे तालिबानी क्रूरता के शिकार हो रहे हैं, इन विडम्बनापूर्ण स्थितियों के आभास मात्र से भारतीय ही नहीं, दुनिया के अन्य देशों के लोग भी चिन्तित हैं। भारत की चिन्ता इसलिये बड़ी है कि अफगानिस्तान की जमीन का उपयोग अब कश्मीर को अशांत एवं आतंकित करने में होगा। भारत को अधिक सावधान एव सतर्क होने की जरूरत है। आतंकवाद के खतरे की संभावनाओं को देखते हुए भारत ने अफगानिस्तान पर दबाव बढ़ा दिया है। भारत ने अफगानिस्तान से साफ कहा है कि उसे यह सुनिश्चित करना होगा कि वह अपनी जमीन का इस्तेमाल आतंकवाद के लिए न होने दे। साथ ही, अल कायदा, लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद जैसे आतंकी संगठनों के खिलाफ कार्रवाई भी करे। दरअसल, आतंकवाद को लेकर भारत की चिंता बेवजह नहीं है। भारत ने लंबे समय से आतंकवाद के खतरे को झेला है एवं कश्मीर की मनोरम वादियां सहित भारत के भीतरी हिस्सों ने तीन दशक से भी ज्यादा समय तक सीमा पार आतंकवाद झेला है।

मानवता की रक्षा एवं आतंकवाद मुक्त अफगानिस्तान की संरचना की कोशिश होनी चाहिए। यह इसलिये अपेक्षित है कि अफगानी युवाओं को बंदूकों के सहारे ही जिंदगी न काटनी पड़े। महिलाओं की तौहीन एवं अस्मत न लुटी जाये। अफगानिस्तान दुनिया में नफरत और हिंसा बढ़ाने की वजह न बने। कुल मिलाकर, मानवीयता, उदारता और समझ की खिड़की खुली रहनी चाहिए, ताकि इंसानियत शर्मसार न हो, इसके लिये समूची दुनिया को व्यापक प्रयत्न करने होंगे। इसके साथ अफगानिस्तान की ऐसी शक्तियां जो आतंकवाद के खिलाफ है, उनको भी सक्रिय होना होगा। क्योंकि उनकी जमीन को कलंकित एवं शर्मसार करने का षड्यंत्र हो रहा है। अफगानिस्तान में तालिबान के सत्ता में आने के बाद से ही यह आशंका बढ़ती जा रही है कि यह मुल्क अब आतंकियों का गढ़ बन जाएगा। ये आशंकाएं बेबुनियाद नहीं हैं। तालिबान का उदय एक मजहबी संगठन के तौर पर हुआ था, लेकिन इसकी बुनियाद तो आतंकी संगठनों पर ही टिकी है। अमेरिका तो तालिबान को आतंकी संगठन कहता भी है। दो दशक पहले भी जब अफगानिस्तान में तालिबान का राज कायम हुआ था, तो इसके पीछे अल कायदा की ताकत थी। तालिबान भारत-विरोधी है, पाकिस्तान अपने मनसूबों को पूरा करने के लिये तालिबान की इस विरोधी मानसिकता का उपयोग करते हुए अफगानिस्तान की भूमि से भारत पर निशाने साधेगा। तालिबान ने विगत दशकों में एकाधिक आतंकी हमले सीधे भारतीय दूतावास पर किए हैं। कंधार विमान अपहरण के समय तालिबान की भूमिका भारत देख चुका है। इन स्थितियों को देखते हुए आतंकवाद को पनपने की आशंकाएं बेबुनियाद नहीं है। बड़ा प्रश्न है कि क्या दुनिया के आतंकवादियों को अफगानिस्तान में सुरक्षित ठिकाना मिल जाएगा क्या ये पैसे लेकर सभ्य देशों को परेशान करने और निशाना बनाने का ही काम करेंगे जो देश प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से तालिबान की पीठ पीछे खड़े हैं, उनकी भी मानवीय जिम्मेदारी बनती है कि वे दुनिया को अशांति, हिंसा, साम्प्रदायिक कट्टरता एवं आतंकवाद की ओर अग्रसर करने वाली इस कालिमा को धोये।

इस बार आतंकवाद के अधिक उग्र एवं घातक होने की आशंका

इसलिये भी है कि तालिबान लड़ाकों के साथ अल कायदा, जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा जैसे कई आतंकी संगठन हैं। पाकिस्तान ने तालिबान की जड़ें जमाने के लिए कितने आतंकी तैयार किए और अफगानिस्तान भेजे, यह जगजाहिर है। सभी जानते हैं कि पाकिस्तान अब भी पूरी तरह से तालिबान के साथ खड़ा है, सहयोग कर रहा है। बल्कि अफगानिस्तान की वर्तमान सरकार एक तरह से पाकिस्तान की ही सरकार है। हैरत की बात यह कि जिस हक्कानी नेटवर्क के मुखिया सिराजुद्दीन हक्कानी को अमेरिका ने बड़ा इनामी आतंकी घोषित कर रखा है, वही अफगानिस्तान का गृहमंत्री है। ऐसे में यह उम्मीद कैसे की जाए कि तालिबान अफगानिस्तान की जमीन का इस्तेमाल आतंकी गतिविधियों के लिए नहीं होने देगा

अफगान में हिंसा, आतंक, स्वार्थ, साम्प्रदायिकता, व्यभिचार, शोषण और क्रूरता आदि के दंश मानवता को मूर्च्छित कर रहे हैं एवं आतंकवाद की जमीन को उर्वरा बना रहे हैं। इस मूर्च्छा को तोड़ने के लिए एवं जटिल-आतंकग्रस्त होती विश्व-संरचना को मोड़ देना होगा। इसके लिये न केवल अफगानिस्तान-तालिबान बल्कि पाकिस्तान पर दबाव बनाना होगा। हमने तालिबानियों को इतने संवेदनशून्य होते हुए देखा है कि उन्हें औरों का दुःख-दर्द, अभाव, पीड़ा, औरों की आहें कहीं भी पिघलाती नहीं। वहां निर्दोष लोगों की हत्याएं, हिंसक वारदातें, आतंकी हमले, अपहरण, जिन्दा जला देने की रक्तरंजित सूचनाएं, महिलाओं के साथ व्यभिचार-बलात्कार की वारदातें पढ़ते-देखते रहे हैं पर तालिबानियों का मन इतना आतंकी बन गया कि यूं लगता है कि यह सब तो रोजमर्रा का काम है। न आंखों में आंसू छलकें, न पीड़ित मानवता के साथ सहानुभूति जुड़ी। न सहयोग की भावना जागी और न नृशंस क्रूरता पर खून खौला। दुनिया की बड़ी शक्तियां सिर्फ स्वयं के वर्चस्व को स्थापित करने की चिन्ता करती रही हैं। तभी औरों का शोषण करते हुए नहीं सकुचाते। दुनिया में संवेदना को जगाना होगा।

दुनिया में मानवीयता, अहिंसा, शांति और सह-अस्तित्व का मूल्य बढ़ाना होगा तथा सहयोग एवं संवेदना की पृष्ठभूमि पर स्वस्थ विश्व-संरचना की परिकल्पना को आकार देना होगा। दूसरों के अस्तित्व के प्रति संवेदनशीलता मानवता का आधार तत्व है। जब तक व्यक्ति अपने अस्तित्व की तरह दूसरे के अस्तित्व को अपनी सहमति नहीं देगा, तब तक वह उसके प्रति संवेदनशील नहीं बन पाएगा। जिस देश और संस्कृति में संवेदनशीलता का स्रोत सूख जाता है, वहाँ मानवीय रिश्तों में लिजलिजापन आने लगता है। अपने अंग-प्रत्यंग पर कहीं प्रहार होता है तो आत्मा आहत होती है। किंतु दूसरों के साथ ऐसी घटना घटित होने पर मन का एक कोना भी प्रभावित नहीं होता, यह संवेदनहीनता की निष्पत्ति है। इस संवेदनहीन मन की एक वजह सह-अस्तित्व का अभाव एवं कट्टर मजहबी भावना भी है। यह संवेदनहीनता ही है कि पाकिस्तान दिनोंदिन बद से बदतर होती अपने देश की स्थितियों के बादजूद आतंकवाद को पोषित एवं पल्लवित करने में अपनी शक्तियों को उपयोग कर रहा है। अब पाकिस्तान तालिबानी अफगानिस्तान के माध्यम से भारत में भी अशांति एवं आतंक फैलाने की कुचेष्टा करेगा, उससे भारत को सावधान रहने की जरूरत है।

जिस तुर्की के सहारे उछलता था पाकिस्तान, अब उसे भी एफएटीएफ की ग्रे लिस्ट में ले गिरा है

ललित गर्ग

भारत में लगातार आतंकवादी गतिविधियों को पोषित करते हुए कश्मीर को हथियाने की कोशिश करने वाले पाकिस्तान की नेशन से ज्यादा एंटीनेशन की तस्वीर सशक्त दिखाई देती है। अपनी इन कुचेष्टाओं एवं षड़यंत्रों से वह कभी भी सफल राष्ट्र नहीं बन पाया है। पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था दिवालियेपन के कगार पर है और वैश्विक वित्तीय निगरानी संस्था फाइनैंशल एक्शन टास्क फोर्स यानि एफएटीएफ के द्वारा उसे ग्रे-लिस्ट में रखे जाने पर उसकी अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान होना तय है। पहले पाकिस्तान बार-बार तुर्की की मदद से ब्लैक लिस्टेड होने से बचता रहा था और अब तुर्की खुद एफएटीएफ के लपेटे में आ गया है। इसकी वजह से उसे आर्थिक मदद मिलना मुश्किल होगा, जबकि पाकिस्तान को अगले दो सालों में अरबों डालर के ऋण की सख्त जरूरत है। अगर ऋण नहीं मिला तो पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था बैठ जाएगी, गरीबी बढ़ेगी, महंगाई आसमान छूने लगेगी, आम जनता को दाने-दाने के लिये तरशना होगा। प्रश्न है कि गरीबी एवं कर्ज के दलदल में फंसा पाकिस्तान कब तक आतंकवाद को पोषित एवं पल्लवित करते हुए खुद अशांति का जीवन जीता रहेगा एवं दूसरे राष्ट्रों की शांति को भंग करता रहेगा क्यों नहीं वह विकास एवं अमन-चैन को अपना लक्ष्य बनाता शांति, अहिंसा एवं अयुद्ध का नजरिया ही पाकिस्तान की दशा एवं दिशा को बदल सकता है।पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने वादा किया था कि वह पाकिस्तान को एफएटीएफ की ग्रे लिस्ट से निकालवाएंगे लेकिन यह वादा खोखला ही साबित हो गया। क्योंकि उनकी नीति एवं नियत दोनों ही खोट से भरी है, उनकी कथनी और करनी में बड़ा फासला है। एफएटीएफ ने अपनी निगरानी सूची अर्थात ग्रे लिस्ट में पाकिस्तान को बनाए रखने का फैसला किया। इस फैसले के बाद पाकिस्तान पर यह दबाव बढ़ गया है कि वह आतंकी संगठनों को पालने-पोसने से बाज आए, लेकिन वह शायद ही ऐसा करे। इसके आसार इसलिए कम है, क्योंकि आतंकी संगठनों को संरक्षण देना उसकी नीति का अभिन्न अंग है। वह केवल अपने यहां सक्रिय आतंकी संगठनों को ही नहीं पाल रहा है, बल्कि तालिबान और खासकर उनके साझीदार हक्कानी नेटवर्क के आतंकी सरगनाओं को भी हर तरह का सहयोग-समर्थन दे रहा है। भारत विरोधी गतिविधियां, कश्मीर का राग, आतंकवाद को पोषित करना-पाकिस्तानी राजनीति का पिछले 75 वर्षों से अहम हिस्सा रही है, इन्हीं भारत विरोधी गतिविधियों के कारण ही पाकिस्तान की सरकारों का ध्यान विकास एवं शांति पर न होकर आतंकवाद पर बना हुआ है। इसी कारण पाकिस्तान दुर्दशा एवं दुर्दिनों का शिकार हो रहा है। इमरान खान आर्थिक मदद और ऋण लेने के लिए कटोरा लेकर घूमते रहते हैं। अमेरिका द्वारा फंड रोकने के बाद पाकिस्तान की कंगाली किसी से छिपी नहीं हुई। अब पाकिस्तान चीन की गोद में बैठकर भारत के खिलाफ साजिशें रच रहा है। तुर्की भी उसका हमदर्द रहा है, लेकिन अब उसको भी पाकिस्तान की तरह अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक और यूरोपीय संघ से आर्थिक मदद मिलना मुश्किल हो जाएगा। इन स्थितियों के कारण पाकिस्तान में अंधेरा ही अंधेरा दिखाई दे रहा है। राष्ट्र-निर्माण में जिन ठोस एवं बुनियादी चीजों एवं चरित्र की जरूरत होती है, वे सब किसी-न-किसी रूप में वहां मृग-मरीचिका की तरह नदारद है। पाकिस्तान भारत में ही नहीं, बल्कि पड़ोसी राष्ट्रों में भारतीयों एवं हिन्दुओं पर हमले करने के षड़यंत्र करता रहा है। हाल में बांग्लादेश में हिंदुओं पर जो भीषण हमले हुए, उनके पीछे भी पाकिस्तान का हाथ है। बांग्लादेश के गृहमंत्री ने इन हमलों के लिए अपने यहां के उन कट्टरपंथी संगठनों को दोषी ठहराया है, जिनका संबंध पाकिस्तान से है। निःसंदेह बांग्लादेश पाकिस्तान की ओर संकेत कर अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकता, उसे हिंदुओं को चुन-चुनकर निशाना बनाने वालों के खिलाफ कठोरतम कार्रवाई करनी होगी। इस समय भारत को पाकिस्तान पर नए सिरे से अंतरराष्ट्रीय दबाव बढ़ाने के लिए सक्रिय होना चाहिए, क्योंकि एक तो उसकी कठपुतली माने जाने वाले अधिकांश आतंकी अफगानिस्तान में काबिज हो गए हैं और दूसरे यह बात सामने आई है कि भारत को इसके लिए बांग्लादेश पर दबाव बनाने के साथ यह भी समझना होगा कि पाकिस्तान उसके लिए और बड़ा सिरदर्द बन रहा है। वह यदि अफगानिस्तान और बांग्लादेश में भारतीय हितों के खिलाफ काम करने के साथ कश्मीर में आतंकवाद को नए सिरे से हवा दे रहा है तो इसका अर्थ है कि भारत को उसके विरुद्ध अपनी रणनीति पर नए सिरे से विचार करना होगा।

विश्व बैंक की ताजा रिपोर्ट से पता चलता है कि पाकिस्तान दुनिया के उन दस देशों की सूची में शामिल हो गया है, जिनके ऊपर सबसे ज्यादा विदेशी कर्ज है। इसी बीच विश्व बैंक और एशियाई विकास बैंक ने अब अपना लोन कार्यक्रम रद्द कर दिया है, जिससे अब पाकिस्तान के लिए कर्ज जुटाना भारी पड़ रहा है। इसी वजह से अब पाकिस्तान के लिए आईएमएफ से किसी भी तरह 6 अरब डालर का कर्ज जुटाना ही होगा। आईएमएफ पाकिस्तान पर कड़ी शर्तें लाद रहा है। इसी बीच आशंकाएं जताई जा रही हैं कि क्रेडिट रेटिंग एजेंसियां पाकिस्तान की रेटिंग और ज्यादा गिरा सकती हैं, जिससे उसके लिए इंटरनेशनल ब्रांड जारी करके पैसा जुटाना और ज्यादा महंगा हो सकता है। ऐसी स्थिति में अफगानिस्तान की तालिबान सरकार को करोड़ों की मदद का ऐलान पाकिस्तान के लोगों को नागवार गुजर रहा है। ऐसा लग रहा है कि पाकिस्तान का घरौंदा खंडों में बंटा हुआ है। भारत विरोधी मुहिम के आवेश एवं नासमझी में पाकिस्तान के शासक सीधी से ज्यादा उल्टी चाल चलने के आदी हो गये है। पाकिस्तान के सकल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा आतंकी गतिविधियों को संचालित करने में खर्च होता है।

देशभक्ति पाठ्यक्रम का राजनैतिक दांव

सर्वमित्रा सुरजन

देश में अब जो राजनैतिक माहौल बन चुका है और आम लोगों को जिस उन्मादी मानसिकता के मुताबिक ढाला जा चुका है, उसमें देशभक्ति एक ऐसा औजार है, जो सत्ता हासिल करने में कारगर साबित हो सकती है। सत्ता के मर्ज के लिए देशभक्ति ऐसा रामबाण है, जिसे भाजपा को भी चुपचाप खाना ही पड़ेगा। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने राष्ट्रवाद की राजनीति में अपने करीबी प्रतिद्वंद्वी भाजपा को पछाड़ते हुए एक ऊंची छलांग लगाई है। ना, ना ये वो ऊंची छलांग नहीं है, जो असम में पुलिस की गोली से मारे गए एक किसान के ऊपर से एक फोटोग्राफर ने लगाई थी। ऐसी ऊंची छलांगें तो अक्सर आपके भीतर पैठी नफरत का सच सरेराह खोल कर रख देती है। भाजपा को इस सच के खुलने से कोई परेशानी नहीं होती। वह तो शुरु से सांप्रदायिक ध्रुवीकरण पर चलती आई है। इसलिए उसे हम बहुसंख्यक और वो अल्पसंख्यक वाला फार्मूला खूब जंचता है। अरविंद केजरीवाल अभी राजनीति के उस मुकाम पर नहीं पहुंचे हैं, जहां वे खुलेआम हम और वो वाला भेद दिखा सकें। इसलिए वे अब तक छोटे-छोटे कदम उठा रहे थे। जैसे मुख्यमंत्री तीर्थ यात्रा योजना चलाई, जिसके तहत राजधानी के बुजुर्गों को तीर्थस्थलों का भ्रमण कराया जाता है। इस यात्रा का आयोजन तीर्थयात्रा विकास समिति करती है। दिल्ली सरकार का कहना है कि अयोध्या में राम मंदिर बनने के बाद दिल्ली के बुजुर्गों को राम लला के दर्शन कराएगी। इस बार गणेश चतुर्थी के मौके पर दिल्ली में सिगनेचर ब्रिज के पास यमुना के किनारे सरकारी खर्च पर भव्य गणेशोत्सव मनाया गया। जिसमें केजरीवाल परिवार के साथ-साथ उनकी सरकार के कई सदस्य मौजूद रहे। इस भव्य कार्यक्रम का टीवी पर प्रसारण किया गया ताकि दिल्लीवासी एक धार्मिक आयोजन में घर बैठे शामिल हो जाएं।

गायक शंकर महादेवन और सुरेश वाडेकर ने इस कार्यक्रम में प्रस्तुति दी। इस मौके पर लोकमान्य तिलक और उनके गणेशोत्सव को याद करते हुए केजरीवालजी ने बच्चों के लिए संदेश दिया कि गणेशोत्सव के माध्यम से उनमें आध्यात्मिकता और देशभक्ति के मिश्रण को विकसित करना चाहिए। भाजपा शायद यहां भी अरविंद केजरीवाल के आगे चूक गई। भाजपा इधर गांधीजी, सरदार पटेल, नेताजी बोस पर ही अपना अधिकार जमाने में लगी थी कि अरविंद केजरीवाल ने धीरे से तिलक पर कब्जा करने की चाल चल दी। भाजपा के कुछ लोग गीता को राष्ट्रीय ग्रंथ घोषित करवाना चाहते हैं, लेकिन इसमें भी अरविंद केजरीवाल ने अपनी हिस्सेदारी बतला दी। जब प्रधानमंत्री मोदी ने पहली कोरोना लहर में लॉकडाउन घोषित किया था, उस वक्त दिल्ली में बसे हजारों प्रवासियों ने पैदल ही अपने घर का रुख किया था। लोगों के पास एक वक्त के खाने का, रहने का इंतजाम नहीं था और तब दिल्ली के मुख्यमंत्री लोगों से अपील कर रहे थे कि जो जहां है वहीं रहे, मैं सबके रहने-खाने का इंतजाम करूंगा। हालांकि इस अपील के बावजूद इस देश ने विभाजन जैसा त्रासद नजारा देखा, जब बेसहारा लोग भरी गर्मी में तपती सड़कों पर बिना किसी सुविधा, संसाधन के निकल पड़े। जाहिर है लोगों में कहीं न कहीं अपनी निर्वाचित सरकार के प्रति अविश्वास की भावना रही होगी। बहरहाल, अरविंद केजरीवाल ने उस वक्त एक और सलाह दी थी कि लॉकडाउन के 18 दिन बचे हैं। ऐसे में अगर आप चाहें तो गीता के 18 अध्याय का पाठ करें। मैं और मेरी पत्नी ने आज से यह शुरू किया है। तीर्थयात्रा, गीता पाठ, गणेशोत्सव, खुद को राम और हनुमान का भक्त बताने के बाद अब अरविंद केजरीवाल ने धर्म और राष्ट्रवाद का एक बड़ा राजनैतिक दांव चला है। मंगलवार को शहीदे-आजम भगत सिंह की जयंती पर उन्होंने दिल्ली के छत्रसाल स्टेडियम से स्कूलों में देशभक्ति पाठ्यक्रम शुरु करने का ऐलान किया। हालांकि इससे एक दिन पहले 27 सितंबर को जब किसानों ने भारत बंद किया था, तो उस दिन केजरीवाल जी ने किसानों का साथ देते हुए ट्वीट किया था कि ये दुख की बात है कि किसानों को भगत सिंह जी के जन्मदिन पर भारत बंद का आह्वान करना पड़ रहा है। पता नहीं दो-दो दिन भगत सिंह की जयंती बताने की भूल का अहसास अरविंद केजरीवाल को हुआ है या नहीं। लेकिन उन्हें इस बात का अहसास ही नहीं, पूरा यकीन है कि देश में अब जो राजनैतिक माहौल बन चुका है और आम लोगों को जिस उन्मादी मानसिकता के मुताबिक ढाला जा चुका है, उसमें देशभक्ति एक ऐसा औजार है, जो सत्ता हासिल करने में कारगर साबित हो सकती है। सत्ता के मर्ज के लिए देशभक्ति ऐसा रामबाण है, जिसे भाजपा को भी चुपचाप खाना ही पड़ेगा। देशभक्ति पाठ्यक्रम नर्सरी से कक्षा 12 तक लागू होगा। इसकी कोई अलग पाठ्यपुस्तक नहीं होगी। सहायक छोटी पुस्तिका होंगी जो तीन समूहों के लिए डिजाइन की गई है- नर्सरी से पांचवी कक्षा तक, छठी से आठवीं कक्षा तक और नौवीं से 12वीं कक्षा तक। कक्षा 9 से 12 के पाठ्यक्रम को छह घटकों में बांटा गया है। इसमें देशभक्ति ध्यान के तहत रोजाना बच्चों को कुछ गतिविधियां करनी होंगी। देशभक्ति डायरी होगी, जिसमें बच्चा देशभक्ति पाठ्यक्रम से संबंधित कराए गए कामों से अपने अनुभवों को उसमें लिखेगा। उसे गृहकार्य भी दिया जाएगा। समूह चर्चा और कक्षा गतिविधि होगी, जिसमें बच्चा किसी भी माध्यम से अपने विचार को सबके सामने रखेगा। वहीं छठवीं से आठवीं के बच्चों के लिए समूह और क्लास गतिविधि के बजाय समापन गतिविधि और फ्लैग डे रखा गया है। इसमें बच्चे खुद से तिरंगा बनाएंगे इसके साथ ही चर्चा के दौरान किसी विषय पर अपनी बात रखेंगे।

देशभक्ति पाठ्यक्रम की घोषणा करते हुए अरविंद केजरीवाल ने कहा कि पिछले 74 सालों में हमें अपने स्कूलों में भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान और गणित पढ़ाया गया, लेकिन बच्चों को देशभक्ति नहीं पढ़ाई गई। देशभक्ति हम सभी के अंदर है, लेकिन इसे प्रेरित करने की जरूरत है। दिल्ली का हर बच्चा सच्चे अर्थों में देशभक्त होगा। देशभक्ति पाठ्यक्रम देश के विकास में सहायक सिद्ध होगा और भारत को तेजी से आगे ले जाएगा। बच्चों में देशभक्ति का जज्बा पैदा करने के लिए पाठ्यक्रम के जरिए हर साल स्वतंत्रता सेनानी से लेकर सामाजिक आंदोलनों से जुड़े लोगों के बारे में पढ़ाया जाएगा। इससे बच्चों को देशभक्ति के मायने समझाने के साथ उनसे प्रेरणा मिलेगी। अरविंद केजरीवाल की यह चिंता है कि देशभक्त पेशेवर विकसित नहीं हो रहे हैं। इसलिए देशभक्ति पाठ्यक्रम के जरिए देशभक्त इंजीनियर, देशभक्त डॉक्टर, देशभक्त वकील बनाए जाएंगे। वहीं उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा कि हम भगत सिंह, हेमू कलानी, झांसी की रानी और तात्या टोपे की लड़ाइयों के बारे में बात करते हैं, लेकिन हम कभी इस बात पर चर्चा नहीं करते कि ऐसा क्या हुआ कि उन्हें लड़ाई लड़नी पड़ी। उनके मुताबिक देशभक्ति पाठ्यक्रम इस कमी को पाटेगा। मनीष सिसोदिया प्रबुद्ध इंसान हैं, क्या उन्हें नहीं पता कि इतिहास की लड़ाइयों का कारण और विश्लेषण इतिहास के अध्ययन से ही संभव है।

अगर बच्चों को आजादी के नायकों या उससे पहले मध्ययुगीन लड़ाइयों के बारे में बताना है, तो इतिहास से उन्हें परिचित कराना होगा। वो इतिहास जिसमें भारत के भारत बनने की कहानी दर्ज है। जैसे किसी बच्चे को मां-बाप, अपने परिजनों से प्यार करना सिखाया नहीं जाता, वह अपने आसपास के माहौल को देखते हुए ही सब सीख जाता है। उसी तरह देश से प्यार करना भी किसी पाठ्यक्रम से सिखाया नहीं जा सकता। बच्चे अपने विद्यालय के माहौल, शिक्षकों के व्यवहार, नेताओं के आचरण, अधिकारियों के बर्ताव को बड़ी बारीकी से देखते हैं, आत्मसात करते हैं और फिर वही चीज उनके व्यवहार में झलकती है। और इस देशभक्ति के पाठ्यक्रम में जो सामग्री तैयार की जाएगी, उसे तैयार करने वाले कौन लोग होंगे, उनकी ईमानदारी, एकनिष्ठता और देशप्रेम के क्या सबूत हैं। क्या दिल्ली सरकार में तमाम लोग इन गुणों से संपन्न हैं। क्या प्रशासन में सारी बेईमानी खत्म हो गई है, क्या मंत्रियों में सदाचार कूट-कूट कर भर गया है। क्या अरविंद केजरीवाल ने देशभक्ति किसी पाठ्यक्रम से हासिल की, या जिस आईआईटी में उन्होंने पढ़ाई की, वहां उन्हें इस किस्म का कोई ज्ञान दिया गया। क्या जिस अनन आंदोलन से उन्होंने अपार लोकप्रियता हासिल की और फिर सत्तासुख प्राप्त किया, उसमें सारे लोग देशभक्त थे और क्या यह उस देशभक्ति का ही कमाल है कि आज भारत एक ऐसे दौर में पहुंच गया है, जहां मॉब लिंचिंग, टुकड़े-टुकड़े गैंग, पाकिस्तान चले जाओ, जैसी शब्दावली राजनीति की आम भाषा बन चुकी है। क्या चुनाव जीतने के लिए जाति, धर्म के समीकरण बिठाना, घोषणापत्र में लुभावने वादे करना, विरोधियों की आलोचना करना, ये सब देशभक्ति के तहत आएंगे, अगर नहीं तो क्या केजरीवाल जी आगामी चुनाव में इन पैंतरों का इस्तेमाल नहीं करेंगे। संघ की शाखाओं में भी उनकी विचारधारा के हिसाब से राष्ट्रप्रेम ही सिखाया जाता है। दिल्ली के स्कूलों की देशभक्ति और इस राष्ट्रप्रेम में क्या अंतर रहेगा। इतिहास, राजनीति शास्त्र और उसमें भी संविधान के पाठ, इनकी सही व्याख्या से विद्यार्थियों को भारत के बहुलतावादी, उदार, लोकतांत्रिक चरित्र से परिचित कराया जा सकता है। इन्हें ईमानदारी से पढ़ाया जाए तो देश की सही समझ अपने आप आ जाएगी और यही सच्ची देशभक्ति होगी।

दक्षिण अफ्रीका ने लगाई विजयी हैट्रिक, बांग्लोदश-श्रीलंका हुई बाहर

अबुधाबी (एजेंसी)। दक्षिण अफ्रीका ने आईसीसी टी20 वर्ल्ड कप 2021 के ग्रुप 1 मैच में बांग्लोदश को 6 विकेट से हराकर टूनार्मेंट में अपनी लगातार तीसरी जीत दर्ज की। इस हार के साथ ही बांग्लादेश की टीम सेमीफाइनल की रेस से बाहर हो गई है। बांग्लादेश के अलावा इस ग्रुप से श्रीलंका भी सेमीफाइनल की रेस से बाहर हो चुकी है। इस जीत के बाद दक्षिण अफ्रीका के छह अंक हो गए हैं और सेमीफाइनल के लिए अपने ग्रुप से उसका दावा सबसे मजबूत हो गया है। टीम ने अंकतालिका में इंग्लैंड के बाद दूसरे नंबर पर है। इंग्लैंड पहले से सेमीफाइनल में पहुंच चुकी है। ऑस्ट्रेलिया तीन मैचों में दो जीत के साथ चार अंक लेकर तीसरे नंबर पर है। ग्रुप 1 और ग्रुप 2 से टॉप की दो टीमें पहुंचेंगी। इस ग्रुप में बांग्लादेश को चार मैचों में एक में भी जीत नहीं मिली और

वह तालिका में सबसे नीचले स्थान पर है। वेस्टइंडीज तीन मैचों में एक जीत और दो हार के साथ दो अंक लेकर बांग्लादेश से आगे है। श्रीलंका को चार मैचों में केवल एक में जीत मिली और उसके दो अंक रहे। ग्रुप 1 से इंग्लैंड के बाद दक्षिण अफ्रीका का ही सेमीफाइनल में पहुंचना तय लग रहा है।

इससे पहले, दक्षिण अफ्रीका ने अबुधाबी के शेख जायेद स्टेडियम में टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करते हुए बांग्लादेश को 18.2 ओवर में केवल 84 रनों पर समेट दिया और फिर 13.3 ओवर में 4 विकेट खोकर लक्ष्य हासिल कर लिया। बांग्लादेश से मिले 85 रनों के आसान सा लक्ष्य का पीछा करने उतरी दक्षिण अफ्रीका की शुरूआत भी खराब रही और टीम ने पावरप्ले के अंदर ही 33 रन तक अपने तीन विकेट गंवा दिए। इनमें क्विंटन डिकॉक (16), रीजा हेंड्रिक्स (4) और एडेन मार्करम (0) का विकेट शामिल था। इसके बाद कप्तान तेम्बा बवूमा (नाबाद 31) और रासी वेन डेर डुसेन (22) ने चौथे विकेट के लिए 47 रनों की साझेदारी करके दक्षिण अफ्रीका को जीत दिला दी। बवूमा ने 28 गेंदों पर 3 चौके और एक छक्के लगाए। डुसेन ने भी 27 गेंदों पर 2 चौके लगाए। डेविड मिलर ने नाबाद 5 रन बनाए। बांग्लादेश की ओर से तस्कीन अहमद ने चार ओवर में 18 रन देकर दो विकेट चटकाए। उनके अलावा मेहदी हसन और नसुम अहमद को एक-एक विकेट मिला।

न्यूजीलैंड के खिलाफ ईशान को ओपनिंग में भेजने का फैसला किसका था? बैटिंग कोच ने दिया जवाब

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय टीम के बल्लेबाजी कोच विक्रम राठौड़ ने मंगलवार को कहा कि न्यूजीलैंड के खिलाफ टी20 विश्व कप 2021 के ग्रुप 2 मैच में ईशान किशन को पारी का आगाज करने के लिए भेजने से पहले लंबे समय से सलामी बल्लेबाज की भूमिका निभा रहे रोहित शर्मा को पूरी तरह से भरोसे में लिया गया था। पाकिस्तान के खिलाफ पहले मैच में 10 विकेट की हार के बाद भारत को न्यूजीलैंड के खिलाफ भी आठ विकेट से शिकस्त झेलनी पड़ी जिससे उस पर ग्रुप चरण से बाहर होने का खतरा मंडरा रहा है। अफगानिस्तान के खिलाफ मैच की पूर्वसंध्या पर राठौड़ ने कहा कि ईशान को बल्लेबाजी क्रम में ऊपर भेजने का फैसला किया गया क्योंकि वे शीर्ष क्रम में बाएं हाथ का बल्लेबाज चाहते थे।

राठौड़ से कहा, चीजें इस तरह हुई कि पिछली रात को सूर्या (सूर्यकुमार यादव) की पीठ में जकड़न थी और वह खेलने के लिए पूरी तरह से फिट नहीं था। बेशक उसकी जगह ईशान को लेनी थी

और हमें पता है कि इशान ने सलामी बल्लेबाज के रूप में अच्छा प्रदर्शन किया है और अतीत में भी उसने अच्छा प्रदर्शन किया है। जहां तक यह सवाल है कि फैसला किसने किया, तो पूरे प्रबंधन ने बैठकर इस पर फैसला किया और बेशक रोहित स्वयं भी प्रबंधन का हिस्सा है। वह इस चर्चा का हिस्सा था। बाएं हाथ के बल्लेबाज से पारी का आगाज कराना रणनीतिक रूप से समझदारी भरा फैसला था, हम निचले मध्यक्रम में ईशान, पंत, जडेजा के रूप में बायें हाथ के काफी बल्लेबाज नहीं चाहते थे।

राठौड़ इस बात से भी सहमत नहीं हैं कि इस भारतीय टीम में बल्लेबाजों का बैकअप नहीं है। उन्होंने कहा, मुझे ऐसा नहीं लगता। हमारे पास टीम में जडेजा भी है। सूर्या भी है, विराट है। हमारे पास पर्याप्त खिलाड़ी हैं जो अच्छी भूमिका निभा सकते हैं और उन्होंने अतीत में ऐसा किया है।

हम इसे समस्या के रूप में नहीं देखते। जब आप टी20 विश्व कप में खेल रहे हो तो आपके सामने सिर्फ 15 खिलाड़ियों को चुनने की सीमा है। मुझे लगता है कि हमारे पास पर्याप्त बल्लेबाज हैं और बस हम योजना पर अमल नहीं कर पाए।

रबाडा-नॉर्टजे ने बरपाया कहर

अबुधाबी (एजेंसी)। गेंदबाजों के बाद बल्लेबाजों की उपयोगी पारी की बदौलत दक्षिण अफ्रीका ने आईसीसी टी20 वर्ल्ड कप 2021 के ग्रुप 1 मैच में बांग्लोदश को 6 विकेट से हरा दिया। दक्षिण अफ्रीका की चार मैचों में यह तीसरी जीत है। इस जीत के बाद दक्षिण अफ्रीका के छह अंक हो गए हैं और सेमीफाइनल के लिए अपने ग्रुप से उसका दावा सबसे मजबूत हो गया है। इंग्लैंड की टीम पहले ही इस ग्रुप से सेमीफाइनल में पहुंच चुकी है। दक्षिण अफ्रीका ने अबुधाबी के शेख जायेद स्टेडियम में टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करते हुए बांग्लादेश को 18.2 ओवर में केवल 84 रनों

पर समेट दिया और फिर 13.3 ओवर में 4 विकेट खोकर लक्ष्य हासिल कर लिया। बांग्लादेश से मिले 85 रनों के आसान सा लक्ष्य का पीछा करने उतरी दक्षिण अफ्रीका की शुरूआत भी खराब रही और टीम ने पावरप्ले के अंदर ही 33 रन तक अपने तीन विकेट गंवा दिए। इनमें क्विंटन डिकॉक (16), रीजा हेंड्रिक्स (4) और एडेन मार्करम (0) का विकेट शामिल था। इसके बाद कप्तान तेम्बा बवूमा (नाबाद 31) और रासी वेन डेर डुसेन (22) ने चौथे विकेट के लिए 47 रनों की साझेदारी करके दक्षिण अफ्रीका को जीत दिला दी। बवूमा ने 28 गेंदों पर 3 चौके और एक छक्के लगाए। डुसेन ने भी 27 गेंदों पर 2 चौके लगाए। डेविड मिलर ने नाबाद 5 रन बनाए। बांग्लादेश की ओर से तस्कीन अहमद ने चार ओवर में 18 रन देकर दो विकेट चटकाए। उनके अलावा मेहदी हसन और नसुम अहमद को एक-एक विकेट मिला। इससे पहले, दक्षिण अफ्रीका ने बांग्लादेश को केवल 84 रनों पर ढेर कर? दिया। बांग्लादेश की ओर से मेहदी हसन ने सबसे ज्यादा 27 रन बनाए। उनके अलावा लिटन दास ने 24 और शमीम हुसैन ने 11 रन बनाए।

न्यूजीलैंड के खिलाफ टी20 सीरीज में केएल राहुल कर सकते हैं टीम इंडिया की कप्तानी

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी टी20 वर्ल्ड कप के बाद भारत और न्यूजीलैंड के बीच टी20 इंटरनैशनल सीरीज खेली जानी है। टी20 वर्ल्ड कप के बाद विराट कोहली इस फॉर्मेट से कप्तानी छोड़ने का ऐलान पहले ही कर चुके हैं। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) न्यूजीलैंड के खिलाफ टी20 सीरीज से कुछ सीनियर खिलाड़ियों को रेस्ट देने के बारे में सोच रहा है, ऐसे में रोहित शर्मा, जसप्रीत बुमराह और विराट कोहली को आराम दिया जा सकता है और टीम की कमान केएल राहुल को सौंपी जा सकती है। राहुल इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में पंजाब किंग्स की कप्तानी करते हैं। पिछले कुछ महीनों में सीनियर खिलाड़ियों को बिल्कुल ब्रेक नहीं मिला है। इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज से लेकर टी20 वर्ल्ड कप तक टीम इंडिया लगातार क्रिकेट खेल रही है। बीसीसीआई के एक सीनियर अधिकारी ने एएनआई पर

कहा, 'सीनियर खिलाड़ियों को थोड़ा सांस लेने का समय चाहिए। इसमें कोई छिपाने वाली बात नहीं है कि टी20 फॉर्मेट का केएल राहुल एक अहम हिस्सा हैं। ऐसा हो सकता है कि उनको कप्तानी सौंपी जाए।

भारत और न्यूजीलैंड के बीच 17 नवंबर से 21 नवंबर के बीच तीन मैचों की टी20 इंटरनैशनल सीरीज खेली जानी है।

सीरीज का पहला मैच 17 नवंबर को जयपुर में, दूसरा मैच 19 नवंबर को रांची में और तीसरा मैच 21 नवंबर को कोलकाता में खेला जाना है। इसके बाद दोनों टीमों के बीच दो मैचों की टेस्ट सीरीज खेली जानी है। भारत और न्यूजीलैंड के बीच खेली जाने वाली सीरीज के दौरान स्टेडियम में फैन्स को भी आने की अनुमति मिल सकती है। न्यूजीलैंड के खिलाफ टी20 वर्ल्ड कप में भारत को आठ विकेट से हार का सामना करना पड़ा है।

बल्लेबाजी कोच विक्रम राठौड़ ने बताया, इस पद के लिए फिर से आवेदन करने के पीछे क्या है उनका मकसद

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के मौजूदा बल्लेबाजी कोच विक्रम राठौड़ ने मंगलवार को कन्फर्म किया कि उन्होंने इस पद के लिए फिर से आवेदन कर दिया है। राठौड़ ने साथ ही यह भी बताया कि इस पद के लिए फिर से आवेदन करने के पीछे उनका क्या मकसद है। बैटिंग कोच ने कहा कि टीम में बल्लेबाजी को लेकर अभी बहुत काम करना बाकी है। मौजूदा सहयोगी स्टाफ में से राठौड़ अकेले हैं जो फिर से पद संभालना चाहते हैं। मुख्य कोच रवि शास्त्री, गेंदबाजी कोच भरत अरुण और फील्डिंग कोच आर श्रीधर ने फिर से आवेदन नहीं किया है। राठौड़ ने अफगानिस्तान के खिलाफ टी20 विश्व कप के मैच से पहले कहा, मैंने बल्लेबाजी कोच के पद के लिए आवेदन किया है। मौका मिलता है तो अभी काफी काम बाकी है। वह 2019 में संजय बांगड़ की जगह बल्लेबाजी कोच

बने थे। उनका कार्यकाल टी20 विश्व कप 2021 तक का था। उनके बल्लेबाजी कोच रहते भारत ने ऑस्ट्रेलिया में टेस्ट सीरीज में ऐतिहासिक जीत दर्ज की और इंग्लैंड को उसकी धरती पर हराया था। राठौड़ ने भारत के लिए छह टेस्ट और सात वनडे खेलकर 131 और 193 रन बनाए हैं। उन्होंने 146 प्रथम श्रेणी मैचों में 11473 रन बनाए हैं। उन्होंने कहा कि विराट कोहली और टीम के साथ काम करना अच्छा अनुभव रहा। राठौड़ ने कहा, मुझे लगा कि यह प्रेस कांफ्रेंस विश्व कप के लिए है लेकिन मैं इस सवाल का जवाब दूंगा। भारतीय टीम के साथ अनुभव शानदार रहा। इतने प्रतिभाशाली खिलाड़ियों के साथ काम करने में मजा आया।

न्यूजीलैंड के खिलाफ टी20 सीरीज में हो सकता है बड़ा बदलाव, भुवनेश्वर-पांड्या की छुट्टी तय

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी टी-20 विश्व कप 2021 की समाप्ति के बाद भारतीय टीम को न्यूजीलैंड के साथ अपने घर में तीन मैचों की टी20 सीरीज खेलनी है। इस सीरीज के लिए जहां रोहित शर्मा को भारतीय क्रिकेट टीम की कप्तानी सौंपे जाने की उम्मीद है, तो टीम में कुछ बड़े बदलाव भी देखने को मिल सकते हैं। इस लेकर अगले कुछ दिनों में बीसीसीआई और सिलेक्टर्स की मीटिंग होने वाली है। इस मीटिंग में कुछ ?सीनियर खिलाड़ियों की टीम से छुट्टी ?हो सकती है। टी-20 विश्व कप में खराब फॉर्म से जूझ रहे तेज गेंदबाज भुवनेश्वर कुमार और हार्दिक पांड्या की टीम से छुट्टी तय मानी जा रही है। इन खिलाड़ियों की जगह इंडियन प्रीमियर लीग के ऑरेंज कैप होल्डर (सीजन में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले) रुतुराज

गायकवाड़ और सबसे ज्यादा विकेट लेने वालों में शामिल आवेश खान के अलावा युजवेंद्र चहल को मौका मिल सकता है। जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद शमी को आराम दिए जाने की उम्मीद है। पांड्या के विकल्प के तौर पर वेंकटेश अय्यर को टीम में शामिल किया जा सकता है। ऑस्ट्रेलिया में खेले जाने वाले आगामी टी20 विश्व कप 2022 के लिए लगभग 11 महीने बचे है और इस साल (2021) भारतीय टीम को किसी वनडे सीरीज भी नहीं खेलनी है।

आगामी टी-20 विश्व कप के दौरान ऑस्ट्रेलिया की पिचों को ध्यान में रखते हुए जम्मू कश्मीर के तेज गेंदबाज सनसनी उमरान मलिक के नाम पर भी चयनकर्ता गंभीरता से विचार कर सकते है। अक्षर पटेल, श्रेयस अय्यर, दीपक चाहर टी20 सीरीज के लिए वापसी कर सकते हैं, जबकि शुभमन गिल, मयंक अग्रवाल, उमेश यादव लाल गेंद प्रारूप (टेस्ट मैच) की टीम में वापसी करने के लिए तैयार हैं।

बीसीसीआई अध्यक्ष सौरव गांगुली और सचिव जय शाह एक दो दिनों में राष्ट्रीय चयनकर्ताओं के साथ आभासी बैठक करेंगे, जिसमें टीम के नेतृत्व के मुद्दे पर चर्चा होगी। रोहित जैसे शीर्ष खिलाड़ी न्यूजीलैंड के खिलाफ कानपुर (25-29 नवंबर) और मुंबई (तीन से सात दिसंबर) में होने वाले दो टेस्ट मैचों से ब्रेक ले सकते हैं। यह इस तरह से हो सकता है कि जिन्हें टी20 अंतरराष्ट्रीय से विश्राम दिया जायेगा, वे टेस्ट मैचों के लिए वापस आएंगे। कुछ खिलाड़ियों को खेल के छोटे प्रारूप में रखा जाएगा।

प्रियंका गांधी के नेतृत्व में प्रदेश में बनेगी कांग्रेस सरकार

भदोही। कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव व यूपी प्रभारी प्रियंका गांधी द्वारा 2022 यूपी चुनाव में महिलाओ के लिए अलग से घोषणा पत्र जारी करने व महिलाओं को विधान सभा के चुनाव में 40 प्रतिशत टिकट देने की घोषणा करने पर कांग्रेस नेत्री शमुना मुशीर ने स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि प्रियंका गांधी के नेतृत्व में यूपी में काग्रेस की सरकार बनेगी। प्रियंका गांधी प्रदेश की आधी आबादी महिलाओं को देश व प्रदेश की मुख्य धारा से जोड्ने व उन्हें राजनीति में भागीदारी देकर सशक्तीकरण करने का वीणा उठाया है। जिसका महिलाओं ने स्वागत करते हुए प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनाने का संकल्प लिया है। उन्होंने ने कहा कि इस समय सबसे ज्यादा गृहणी महंगाई को लेकर त्रस्त है। कैसे घर गृहस्थी चलाये उन्हें कुछ समझ मे नहीं आ रहा है।

गोपीगंज मे अवैध रुप से पटाखा भण्डारण करने का पदार्फाश 55 बोरा अवैध पटाखा बरामद

अखंड भारत संदेश

गोपीगंज। थाना गोपीगंज पर एक प्रेस वार्ता में क्षेत्राधिकारी अशोक सिंह ने बताया की कोतवाली गोपीगंज पुलिस व रडञ्ञ(क्राइम ब्रांच) व सर्विलांस टीम की संयुक्त कार्यवाही डा0 अनिल कुमार पुलिस अधीक्षक भदोही द्वारा जनपद मे आगामी त्यौहार दीपावली के मद्देनजर अवैध रुप से पटाखा भण्डारण एवं विक्रय के सम्बन्ध में निर्गत दिशा निर्देश के अनुपालन के क्रम में प्रभारी निरीक्षक गोपीगंज, स्वाट (क्राइम ब्रांच) व सर्विलांस सेल की गठित संयुक्त टीम की सूचनाओ के आधार पर दिनांक 01.11.2021 को थाना गोपीगंज क्षेत्र अन्तर्गत कस्बा गोपीगंज में दीपू बरनवाल पुत्र कृष्ण मुरारी बरनवाल नि0 अंजही मोहाल थाना गोपीगंज जनपद भदोही व रितेश बरनवाल पुत्र कृष्ण मुरारी बरनवाल नि0 अंजही मोहाल थाना गोपीगंज जनपद भदोही के कब्जे से 55 बोरा अवैध पटाखा जिसकी कीमत करीब 20 लाख रुपये का बरामद हुआ है। पूछताछ का विवरण- पूछताछ पर गिरफ्तार शुदा अभियुक्तों द्वारा बताया गया कि साहब मै आगामी त्यौहार दीपावली के पर्व अच्छे पैसे में बेचने हेतु लाकर रखा था। गिरफ्तारी का स्थान व दिनांक- पश्चिम मोहाल गोपीगंज दिनांक-01.11.2021 व समय-22.30 बजे। गिरफ्तार अभियुक्त का नाम व पता 1- दीपू बरनवाल पुत्र कृष्ण मुरारी बरनवाल नि0 अंजही मोहाल थाना गोपीगंज जनपद भदोही उम्र 23 वर्ष गिरफ्तार शुदा अभियुक्त का आपराधिक इतिहास 1.मु0अ0स0225/19 धारा 9 बी विस्फोटक अधिनियम थाना गोपीगंज जनपद भदोही 2. मु0अ0स0 310/21 धारा 9 बी विस्फोटक अधिनियम थाना गोपीगंज जनपद भदोही 2-रितेश बरनवाल पुत्र कृष्ण मुरारी बरनवाल नि0 अंजही मोहाल थाना गोपीगंज जनप भदोही उम्र 28 वर्ष आपराधिक इतिहास मु0अ0सं0 310/21 धारा 9 बी विस्फोटक अधिनियम थाना गोपीगंज जनपद भदोही गिरफ्तारी व बरामदगी करने वाली टीम - 1.अभिनव कुमार वर्मा प्रनि0 गोपीगंज, उ0नि0 सन्तोष राय,उ0नि0 अजय कुमार राय, उ0नि0 रमेश प्रताप सिंह, हे0का0 अश्वनी सिंह,का0 प्रमोद पासवान, का0 सुनील कुमार थाना गोपीगंज जनपद भदोही

2.नि0 बृजेश सिंह प्रभारी सर्विलांस 3. उ0नि0 विनोद दूबे प्रभारी स्वाट टीम , का0 सर्वेश राय, का0 नरेन्द्र सिंह, का0 तुफैल अहमद, का0 नागेन्द्र यादव, का0 दीपक यादव, का0 मन्नू सिंह, का0 नीरज यादव, का0 सुनील कन्नौजिया, का0 अजय यादव,चालक हे0का0 सुभाष सिंह क्राइम ब्रांच की टीम शामिल रही।

दीपावली पर्व पर मिलावटी खाद्य सामग्री के खिलाफ जिलाधिकारी के आदेश पर खाद्य सुरक्षा विभाग हुआ एक्टिव कई जगह से लिए नमूने

अखंड भारत संदेश

गोपीगंज। शासन एवं जिलाधिकारी महोदया के आदेश के क्रम में दीपावली पर्व के मद्देनजर जनपद में खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा सघन अभियान चलाया जा रहा है। विभाग की एक टीम एसडीएम औराई के नेतृत्व एफसी में महाराजगंज औराई उगापुर इत्यादि बाजारों में नमूना संकलन की कार्यवाही कर रही है। दूसरी टीम का नेतृत्व केएन त्रिपाठी मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी द्वारा किया जा रहा है। इस टीम में विनोद वर्मा खाद्य सुरक्षा अधिकारी एवं ज्ञानेंद्र पाल सिंह चंदेल खाद्य सुरक्षा अधिकारी पुलिस बल के साथ मौजूद रहे। टीम ने गोपीगंज कस्बे से सूजी एवं सरसों के तेल का नमूना तथा जंगीगंज बाजार के पास परिवहन कर लाए जा रहे सांवरिया प्रीमियम गाय का घी का नमूना संकलित किया है। टीम द्वारा जनपद के विभिन्न कस्बों में पैदल मार्च कर वर्क लगी मिठाईयां एवं सड़े गले खाद्य पदार्थों को सख्ती के साथ न बेचने की हिदायत देते हुए विनष्टीकरण किया जा रहा है। अभिहित अधिकारी चंदन पांडे का कहना है यदि कहीं किसी भी प्रकार के मिलावटी खाद्य पदार्थ बिक्री की सूचना मिलती है तो आम जनता से अनुरोध है कि इसकी सूचना श्री केएन त्रिपाठी मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी के मोबाइल नंबर 888 78 90254 पर दे सकते हैं।

पिकअप की टक्कर से बाईक सवार घायल

अखंड भारत संदेश

गोपीगंज। कोतवाली क्षेत्र के राष्ट्रीय राजमार्ग स्थित गिराई करबला के सामने पिकअप की टक्कर में कासिम नामक व्यक्ति घायल हुआ जिसे नजदीकी नर्सिंग होम में भर्ती किया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार बताया जाता है कि ग्राम बिछिया निवासी मोहम्मद कासिम पुत्र मोहब्बत अली अपने घर बिछिया से मदरसा घोसियां में पठाने जा रहे थे संभवत पेट्रोल भराने के लिए रांग साइड से थे इसी बीच सामने से आ रही अनियंत्रित पिकअप की चपेट में आ गए।

विद्युत विभाग के आउट साइडरों को दीपावली पर नही दिया वेतन कर्मचारी हुए लामबंद

अखंड भारत संदेश

गोपीगंज। विद्युत विभाग के आउट साइडरों ने अपनी मांगों को लेकर बड़े शिव मंदिर के प्रांगण में प्रदर्शन कर सेवाप्रदाता के विरूद्ध नारेबाजी की। निवेदन संविदा कर्मचारी संघ पूर्वांचल के अध्यक्ष सुभाष बिंद ने बताया कि पिछले कई सेवा प्रदाताओं ने कार्य कराने के पश्चात वेतन नहीं दिया और चली गई इसी प्रकार नवंबर माह से नई सेवा प्रदाता कैंडल लेकर आई है जबकि इस संबंध में हमने 15 दिन पहले ही अधिशासी अभियंता को नोटिस डालकर सूचित कर दिया गया था कि मीटर लीडरों की दीपावली के पहले वेतन की जो मांग की थी उसे पूरा किया जाए परंतु अभी तक हमारा वेतन नहीं दिया गया जिसको लेकर हम समस्त कर्मचारी आज बैठक कर यह निर्णय लिया कि जब तक हमारा वेतन नहीं दिया जाता तब तक हम कार्य से विरत रहेंगे बैठक में मुख्य रूप से विजय शंकर तिवारी, हबीब अंसारी, सूर्य प्रकाश पांडे, प्रदीप शर्मा, अविनाश पांडे ,राकेश यादव, पवन ,विनोद मौर्य ,मेराज अंसारी, जितेंद्र, गोपाल, जाफर अंसारी सहित काफी संख्या में उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन कार्यक्रमों डीएम ने की समीक्षा

फाइलेरिया के रोकथाम हेतु 22 नवम्बर से 07 दिसम्बर 2021 तक विशेष अभियान चलाए जाने का दिया निर्देश

अखंड भारत संदेश

भदोही। जिलाधिकारी आर्यका अखौरी की अध्यक्षता में जिला स्वास्थ्य समिति शासी निकाय की बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में संपन्न हुई। बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने फाइलेरिया के रोकथाम हेतु 22 नवम्बर 2021 से 07 दिसम्बर 2021 तक विशेष अभियान चलाए जाने का निर्देश दिया है।

बैठक में जिला स्वास्थ समिति द्वारा राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत चलाए जा रहे कार्यक्रमों की समीक्षा बैठक में प्रस्तावित एजेंडा के आधार पर यूपीएचएमआईएस हेल्थ डैशबोर्ड, मातृ स्वास्थ्य, बाल स्वास्थ्य, परिवार कल्याण, कम्युनिटी प्रोसेस, राष्ट्रीय कार्यक्रम नान कम्युनिकेबल डिजीज, एनसीडी, एनबीसीपी, आरएनटीसीपी, पीएमएमवीवाई, वित्तीय समीक्षा, आदि योजनाओं की जिलाधिकारी द्वारा गहन समीक्षा की गई। बैठक में सभी सीएचसी अधीक्षक को निर्देशित किया गया कि अपने अधीनस्थ आने वाले पीएचसी सेंटर/एएनएम सेंटर का शत प्रतिशत निरीक्षण करते रहें। बैठक में एचआरपी की समीक्षा के दौरान फलोअप बढ़ाने का निर्देश दिया। वहीं पीएमएमवीवाई की कम प्रगति को और अधिक बढ़ाए जाने के निर्देश दिया। बैठक के दौरान महाराजा चेतसिंह जिला अस्पताल में डाटा फीड न होने पर जिलाधिकारी ने सम्बंधित के खिलाफ शो काज नोटिस जारी करने एवं उनके सारे कार्यों की जांच कराने के सीएमओ को कड़े निर्देश दिए। बैठक में वैक्सीन के फस्ट डोज व सेकेंड डोज की समीक्षा की गई। जिसमें लक्ष्य के सापेक्ष वैक्सीनेशन किए जाने का निर्देश दिया और जल्द से जल्द लक्ष्य के सापेक्ष वैक्सीनेशन की प्रगति को पूर्ण करने के निर्देश दिया तथा संचारी रोग नियंत्रण अभियान की समीक्षा की गई।

:मनी लॉन्ड्रिंग केस: कोर्ट में पेश हुए महाराष्ट्र के पूर्व गृह मंत्री अनिल देशमुख, ईडी को मिली 6 नवंबर तक कस्टडी

नई दिल्ली एजेंसी। मनी लॉन्ड्रिंग केस में महाराष्ट्र के पूर्व गृह मंत्री अनिल देशमुख को आज प्रवर्तन निदेशालय ने अदालत में पेश किया। ईडी की तरफ से कोर्ट में अनिल देशमुख की 14 दिन की रिमांड मांगी गई। कोर्ट ने अनिल देशमुख को 6 नवंबर तक ईडी की कस्टडी दी है। एजेंसी की तरफ से एडिशनल सॉलिसिटर जनरल अनिल सिंह अदालत में पैरवी की। महाराष्ट्र के पूर्व गृह मंत्री अनिल देशमुख को कोर्ट ने 6 नवंबर तक ईडी की कस्टडी में भेज दिया है। सुनवाई के दौरान मुंबई की विशेष पीएमएलए अदालत ने अनिल देशमुख की हिरासत के दौरान घर का भोजन और दवाओं के लिए अनुमति दे दी है। अदालत ने पूछताछ के दौरान अनिल देशमुख को वकील साथ रखने की भी अनुमति दी है। इससे पहले अनिल देशमुख को सोमवार की देर रात तकरीबन 13 घंटो की पूछताछ के बाद निदेशालय ने गिरफ्तार किया। मंगलवार सुबह ईडी के अधिकारियों ने उनकी मेडिकल जांच के बाद उन्हें कोर्ट में पेश किया। फिलहाल इस सुनवाई के दौरान मीडिया को कोर्ट रूम अंदर जाने की इजाजत नहीं दी गई है। बता दें कि महाराष्ट्र के पूर्व गृह मंत्री अनिल देशमुख के ऊपर मुंबई के तत्कालीन पुलिस कमिश्नर परमबीर सिंह ने गंभीर आरोप लगाए थे। उन्होंने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर देशमुख के खिलाफ सचिन वाजे के जरिए 100 करोड़ रुपए की हफ्ता वसूली का गंभीर आरोप लगाया था। हालांकि इस मामले में अनिल देशमुख ने खुद को बेदाग बताते हुए कहा था कि परमबीर सिंह को कमिश्नर की पोस्ट से हटाने के बाद में उन्होंने यह आरोप दुर्भावना से ग्रसित होकर लगाया है।

पंजाब लोक कांग्रेस होगा कैप्टन अमरिंदर की नई पार्टी का नाम, सोनिया गांधी को भेजा इस्तीफा

नई दिल्ली, एजेंसी। पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह ने कांग्रेस पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। कैप्टन अमरिंदर सिंह ने पार्टी की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी को लिखी एक चिट्ठी में अपना इस्तीफा दिया है। इसके साथ-साथ कैप्टन अमरिंदर ने आज अपनी नई पार्टी का ऐलान भी कर दिया है। कैप्टन अमरिंदर ने पंजाब लोक कांग्रेस के नाम से अपनी नई पार्टी बनाई है। पंजाब कांग्रेस अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू के साथ मतभेद के बाद मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने वाले कैप्टन अमरिंदर सिंह ने पिछले महीने अपने अगले दांव पर से सस्पेंस हटाते कहा था कि वह जल्द ही अपनी नई पार्टी बनाएंगे। इसके साथ ही उन्होंने यह संकेत भी दिया कि पंजाब विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा के साथ-साथ अकाली से अलग हुए समान विचार वाले गुटों से गठबंधन करेंगे। हालांकि, अमरिंदर ने साफ किया कि भाजपा से गठबंधन कृषि कानूनों के मुद्दे के संतोषजनक समाधान पर निर्भर करेगा। तब कैप्टन अमरिंदर के मीडिया सलाहकार रवीन ठुकराल ने ट्विटर पर उनका बयान जारी करते हुए कहा था ₹पंजाब के भविष्य के लिए संघर्ष जारी है। पंजाब और उसके लोगों तथा किसानों, जो एक साल से अधिक समय से अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहे है, के लिए जल्द ही अपनी पार्टी की घोषणा करूंगा। अगर किसान विरोध का किसानों के हित में कोई समाधान निकल जाता है तो भाजपा के साथ वर्ष 2022 के पंजाब विधानसभा चुनाव में सीटों के समझौते को लेकर आशान्वित हूं।

इस्लाम की तरह तलवार के बल पर लोगों को बुला रही टीएमसी, कैलाश विजयवर्गीय ने की कैसी तुलना

इंदौर एजेंसी। भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय ने मंगलवार को एक विवादास्पद बयान दे डाला। विजयवर्गीय ने कहा कि देश में इस्लाम तलवार के बलपर आया और पश्चिम बंगाल में जो लोग टीएमसी में जा रहे हैं वो तलवार के बल पर जा रहे हैं।

वह टीएमसी में नेताओं के शामिल होने पर इंदौर में बोल रहे थे। कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि बंगाल में एक-एक व्यक्ति पर 40-40, 50-50 केस लगा दिए गए हैं। उन्होंने इस मामले में भाजपा सांसद अर्जुन सिंह का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि अर्जुन सिंह पर 120 केस लगा दिए गए हैं। इसमें हत्या से लेकर डकैती और भ्रष्टाचार समेत तमाम तरह के केस शामिल हैं। विजयवर्गीय ने कहा कि उनके ऊपर भी 20 केस लगाए गए हैं। वहीं हमारे प्रचारक महोदय को भी नहीं बख्शा गया है। कैलाश विजयवर्गीय ने आगे कहा कि पश्चिम बंगाल में इस तरह से विपक्ष को किल कर दिया जा रहा है कि कोई क्या जिएगा। उन्होंने कहा कि इस संबंध में एक घटना याद आ रही है। भारत में इस्लाम तलवार के बल पर आया था।

आतंकी पार्टी, आंध्र प्रदेश की राजनीतिक पार्टियों का झगड़ा राष्ट्रपति की चौखट तक पहुंचा

नई दिल्ली एजेंसी। आंध्र प्रदेश की सत्ताधारी पार्टी वाईएसआर कांग्रेस और विपक्षी तेलुगू देशम पार्टी के बीच का झगड़ा मंगलवार को राष्ट्रपति भवन तक पहुंच गया है। वाईएसआर कांग्रेस के नेताओं के एक प्रतिनिधिमंडल ने मंगलवार को राष्ट्रपति भवन जाकर प्रेसिडेंट रामनाथ कोविंद से निवेदन किया है कि वह टीडीपी की मान्यता रद्द कर दें। प्रतिनिधिमंडल के सदस्य और सांसद वी विजयसाई ने कहा, हमारे सारे सांसदों ने आज राष्ट्रपति से मुलाकात की और उन्हें बताया कि कैसे टीडीपी के नेताओं और कार्यकर्ताओं, खासतौर पर चंद्रबाबू नायडू, उनके बेटे लोकेश और प्रवक्ता पत्ताभी द्वारा हमारे नेता जगन मोहन रेड्डी के लिए गंदी भाषा का इस्तेमाल किया जाता है। हमने राष्ट्रपति से निवेदन किया है कि वे टीडीपी को अमान्य घोषित कर दें।

रेड्डी ने यह भी कहा कि टीडीपी आतंकवादी पार्टी बन गई है, असामाजिक पार्टी बन गई है। उन्होंने आगे कहा, टीडीपी के पास लोगों का भरोसा नहीं, यह पार्टी लोकतांत्रिक मूल्यों पर नहीं चलती। इसलिए, एक ऐसी पार्टी जो लोकतंत्र में भरोसा नहीं करती, वह चुनाव लड़ने का नैतिक अधिकार भी खो देती है। वाईएसआर कांग्रेस के नेता ने यह भी बताया कि प्रतिनिधिमंडल ने राष्ट्रपति से यह भी आग्रह किया है कि वे कानून मंत्री को निर्देश दें कि अदालत की अवमानना के कानून के तर्ज पर ही विधानसभा की अवमानना का कानून भी लाए ताकि आंध्र प्रदेश की विपक्षी पार्टी को इस तरह की गंदी भाषा इस्तेमाल करने के लिए दंड दिया जा सके।

कोहली के समर्थन में उतरे राहुल गांधी, कहा- वे लोग नफरत से भरे हैं...उन्हें माफ कर दो

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान विराट कोहली की बेटी के लिए धमकी देने वालों को राहुल गांधी ने करारा जवाब दिया है। राहुल ने ट्वीट करते हुए विराट कोहली को संदेश लिखा है कि वे लोग नफरत से भरे हैं, उन्हें माफ कर दो।

टी-20 वर्ल्ड कप में भारतीय क्रिकेट टीम की लगातार दो हार के बाद भारतीय फैंस टीम इंडिया को निशाना बना रहे हैं। इस बीच कुछ अराजक लोगों ने टीम इंडिया के कप्तान विराट कोहली के परिवार को जान से मारने की धमकी दी है। यही नहीं सोशल मीडिया पर कुछ ने विराट की बेटी की रेप के बाद हत्या करने की धमकी भी दी है। इस शर्मनाक बयानबाजी को लेकर कई लोग विराट कोहली के समर्थन में आए हैं। इसी क्रम में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने भारतीय क्रिकेट कप्तान विराट कोहली को समर्थन देते हुए ट्वीट किया है। राहुल गांधी ने मौजूदा टी 20 में पाकिस्तान से हार के मद्देनजर टीम इंडिया के क्रिकेटर मोहम्मद शमी के समर्थन में भी अपनी बात रखी थी।

मंगलवार शाम राहुल गांधी ने ट्वीट किया, ₹प्रिय विराट, ये लोग नफरत से भरे हुए हैं क्योंकि कोई उन्हें प्यार नहीं देता। उन्हें माफ कर दो। टीम की रक्षा करो। इससे पहले विराट कोहली के परिवार को धमकी देने के मामले में दिल्ली महिला आयोग ने एक्शन लिया। महिला आयोग ने दिल्ली पुलिस को नोटिस भेजकर विराट कोहली की बेटी के लिए धमकी भरी बाते करने के मामले में तुरंत कार्रवाई के लिए कहा है। आयोग की अध्यक्ष ने कहा कि विराट कोहली और बॉलीवुड अभिनेता अनुष्का शर्मा की बेटी के खिलाफ धमकी बहुत शर्मनाक है और धमकी देने वालों को सजा मिलनी ही चाहिए। अध्यक्ष ने कहा था कि ₹टीम ने हमें हजारों बार गौरवान्वित किया है, फिर इस हार में यह मूर्खता क्यों महिला आयोग ने दिल्ली पुलिस को भेजे नोटिस में पूछा है कि यदि मामले में कोई आरोपी गिरफ्तार नहीं हुआ है तो कृपया बताएं कि आरोपी की गिरफ्तारी के लिए क्या कदम उठाए जा रहे हैं आयोग ने दिल्ली पुलिस को 8 नवंबर तक जानकारी उपलब्ध कराने के लिए कहा है।

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजीत पवार की 5 बेनामी सम्पत्तियों को जब्त करने का आयकर विभाग का आदेश

मुंबई (एजेंसी)। आयकर विभाग ने उपमुख्यमंत्री अजीत पवार की 5 बेनामी सम्पत्तियों को जब्त करने का आदेश जारी किया है। साथ ही अजीत पवार को आयकर विभाग ने नोटिस जारी कर इन सम्पत्तियों के बारे खुलासा करने का निर्देश दिया है। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. किरीट सोमैया ने अजीत पवार के नजदीकी लोगों पर हजार करोड़ रुपये की धन उगाही का आरोप लगाया था। इसके बाद किरीट सोमैया ने मामले की शिकायत आयकर विभाग में की थी। इसी शिकायत के आधार पर आयकर विभाग ने अजीत पवार के नजदीकी लोगों के घर और कार्यालय पर छापा मारा था। आयकर विभाग ने अजीत पवार के नजदीकी लोगों की जरंडेश्वर शुगर फैक्टरी मार्केट, साउथ दिल्ली में स्थित फ्लैट मार्केट, पार्थ पवार के निर्मल आफिस, निलय नाम से गोवा में बना रिसोर्ट तथा महाराष्ट्र के 27 जिलों में अलग-अलग भूखण्डों को जब्त करने का आदेश जारी किया है।

आयकर विभाग ने अजीत पवार को नोटिस जारी कर 90 दिनों में इन सम्पत्तियों के संदर्भ में खुलासा करने का भी निर्देश दिया है। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के प्रवक्ता नवाब मलिक ने कहा कि किरीट सोमैया ने इसी तरह का आरोप खाद्यान्न व आपूर्ति मंत्री छगन भुजबल पर भी लगाया था। इसके बाद छगन भुजबल को गिरफ्तार किया गया और 2 साल तक जमानत नहीं होने दी थी लेकिन कोर्ट ने छगन भुजबल को निर्दोष करार दिया था। अजीत पवार पर भाजपा के इशारे पर आयकर विभाग जो कार्रवाई कर रहा है, उसे भी कोर्ट में चुनौती दी जाएगी।

चंदौली: दिवाली के लिए मिट्टी लेने के दौरान बड़ा हादसा, टीला ढहने से चार की मौत

चंदौली(एजेंसी)। चंदौली में नौगढ़ थाना क्षेत्र के उदितपुर सुर्रा गांव में सोमवार को खुदाई के दौरान मिट्टी का टीला ढहने से दो बालक समेत चार की मौत हो गई। इसमें तीन लोगों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। वहीं एक बालक की वाराणसी ट्रामा सेंटर ले जाते समय मौत हो गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। घटना से परिजनों में कोहराम मचा रहा। दीपावली पर्व के दृष्टिग कच्चे घरों की पुताई कराने के लिए उदितपुर सुर्रा गांव निवासी 50 वर्षीय शिवकुमार व समीपवर्ती सोनभद्र जिले के कुरियहवां गांव निवासी 46 वर्षीय दूधनाथ अपने दो पुत्रों 12 वर्षीय आशीष व 9 वर्षीय रीतेश के साथ मिट्टी लेने के लिए गांव की बंधी के निकट जमुतहवां नाला के किनारे आरक्षित वन क्षेत्र में मौजूद गड्ढे में से मिट्टी निकाल रहे थे। तभी अचानक मिट्टी का टीला भरभराकर गिर गया। घटना के बाद आसपास जंगल में पशु चराने वाले ग्रामीणों ने शोरगुल मचाना शुरू कर दिया। इससे काफी संख्या में ग्रामीण वहां इकठ्ठा हो गए। साथ ही मलबे में दबे लोगों को निकलाने में जुट गए। घटना की जानकारी होते ही हरियाबांध पुलिस चौकी इंचार्ज सत्येंद्र कुमार पुलिस कर्मियों के साथ आनन-फानन में पहुंच गए। उन्होंने जेसीबी मंगाकर मिट्टी निकलवाना शुरू कर दिया।इस बीच उपजिलाधिकारी डा. अतुल गुप्ता, नौगढ़ प्रभारी निरीक्षक राजेश सरोज, चकरघट्टा थानाध्यक्ष दीनदयाल पांडेय, मझगांवा, अमदहां, औरवाटांड चौकी इंचार्ज भी मौके पर पहुंच कर ग्रामीणों के साथ मिट्टी में दबे लोगों को बाहर निकालने में लग गए। घटना में शिवकुमार, दूधनाथ और रीतेश की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं घायल आशीष को आसपास के जुटे लोगों की मदद से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया। लेकिन डाक्टरों ने हालत नाजुक देख वाराणसी ट्रामा सेंटर के लिए रेफर कर दिया। रास्ते में ही उसकी मौत हो गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया। उधर घटना जानकारी होते ही पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल भी घटना स्थल के लिए रवाना हो गए। घटना स्थल पर पहुंचकर उन्होंने मातहतों को आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिया।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम

पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं.

UPHIN 2001/9025

साढ़े चार साल में मिली साढ़े 4 लाख को नौकरी, यह बनाएंगे यूपी को नम्बर वनः योगी

लखनऊ(एजेंसी)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बीते साढ़े चार साल में सरकारी नौकरी पाने वाले साढ़े चार लाख युवाओं को यूपी के विकास का वाहक बताया है। सीएम ने कहा है कि विभिन्न विभागों में तैनाती पाए इन युवाओं को आवेदन से लेकर नियुक्ति तक न कहीं सिफारिश की जरूरत पड़ी, न ही कहीं भेदभाव हुआ। अगर इन युवाओं ने यही शुचिता और ईमानदारी अपने सेवाकाल में भी बनाए रखी तो साढ़े चार साल में 06वीं से दूसरे नम्बर की अर्थव्यवस्था बन चुका उत्तर प्रदेश, बहुत जल्द देश में नम्बर एक होगा। मुख्यमंत्री योगी, मंगलवार को अपने सरकारी आवास पर आयोजित कार्यक्रम में आवास एवं शहरी नियोजन विभाग में नवनियुक्त सहायक अभियंताओं (सिविल एवं विद्युत/यांत्रिक) को नियुक्ति-पत्र प्रदान कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने कहा वर्ष 2002 से 2017 तक के काल में जितने युवाओं को सरकारी नौकरी नहीं मिली, उतनी अकेले 2017 से 2021 के बीच मिली हैं। एक पर भी उंगली नहीं उठाई जा सकती है। उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार चयन आयोगों को पूरी स्वतंत्रता देती है। सरकार की ओर से किसी तरह का अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं होता है।

नवनियुक्त सहायक अभियंताओं को नियुक्ति-पत्र देते हुए सीएम ने उन्हें जिम्मेदारी का अहसास भी कराया। उन्होंने कहा कि आवास विभाग इस समय देश का सबसे महत्वपूर्ण विभाग है। आज शहरी विकास के लिए इस युद्ध स्तर पर कार्य हो रहे हैं। शहरों में किफायती टिकाऊ आवासों की जरूरत हो या रैपिड रेल और मेट्रो जैसे आधुनिक शहरी परिवहन साधन, और अमृत योजना जैसी महत्वपूर्ण योजना, सबका प्रबंधन यही विभाग करता है। ऐसे में काम करने का बड़ा परिक्षेत्र है, जरूरत है इनोवेटिव सोच और ईमानदारी से कोशिश की। उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि एक समय प्रदेश के विकास प्राधिकरण, भ्रष्टाचार के अड्डे बने हुए थे। मकान का नक्शा तक पास कराना मुश्किल होता था। आम आदमी बहुत परेशान था। हमने व्यापक बदलाव किया। अच्छे अधिकारियों को तैनात किया, समस्या निस्तारण के लिए विशेष शिविर लगाए, काम की समय सीमा तय की और नतीजा आज सामान्य व्यक्ति भी कह रहा है कि विकास प्राधिकरणों में अच्छा काम हो रहा। विगत दिनों अपने मुरादाबाद दौरे का जिक्र करते हुए उन्होंने वहां निमार्णाधीन किफायती आवास परियोजना की जानकारी भी दी और कहा कि ऐसे इनोवेटिव प्रयास आज की मांग हैं।

बाढ़ से तबाह हुए किसानों को उट योगी का दिवाली गिफ्ट, खाते में आएंगे रुपए, होगी नुकसान की भरपाई

गोरखपुर(एजेंसी)। भारी बरसात और बाढ़ से परेशान किसानों को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दीपावली का तोहफा दिया है। गोरखपुर जिले के 69500 किसानों के लिए अब तक 17.46 करोड़ रुपये की धनराशि मंजूर कर दी गई है। फसलों को हुए नुकसान की भरपाई के लिए सोमवार को 26708 किसानों के खाते में 7.88 करोड़ रुपये भेजे गए। गोरखपुर में 398 गांव बाढ़ एवं अतिवृष्टि से प्रभावित हुए थे। सर्वेक्षण के उपरांत लगभग 69500 किसानों को फसल राज्य आपदा मोचक निधि की गाइडलाइन के अनुसार 33 फीसदी से अधिक प्रभावित रही। प्रभावित किसानों को अनुमन्य कृषि निवेश अनुदान वितरण के लिए तीन चरणों में जनपद गोरखपुर को कुल 17 करोड़ 46 लाख 35 हजार 332 रुपये आवंटित किए गए हैं। उप जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व राजेश कुमार सिंह ने बताया कि सोमवार को 26,708 कृषकों के खाते में 7 करोड़ 78 लाख 07 हजार 674 रुपये भेज दिए गए हैं। जिला आपदा विशेषज्ञ गौतम गुप्ता ने बताया कि एक हेक्टेयर के लिए 13500 रुपये अनुमन्य है। एक डिसमित का 54 रुपये बनता है।

आप मेरी पार्टी जॉइन कर लीजिए, पीएम मोदी से बोले इजरायल के प्रधानमंत्री

नई दिल्ली(एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सीओपी26 जयवायु शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए ग्लासगो में हैं। जलवायु शिखर सम्मेलन से इतर पीएम मोदी दुनियाभर के अन्य तमाम नेताओं से मुलाकात करते नजर आ रहे हैं।

इसी बीच पीएम मोदी और इजरायल के प्रधानमत्री नफ्ताली बेनेट की मुलाकात चर्चा का विषय बनी हुई है। इस मुलाकात में इजरायल के प्रधानमंत्री नफ्ताली बेनेट ने पीएम मोदी से कहा कि आप इजरायल में बहुत लोकप्रिय हैं, आप मेरी पार्टी जॉइन कर लीजिए। इस मुलाकात का एक वीडियो भी सामने आया है। दरअसल, ग्लासगो में सीओपी26 जलवायु शिखर सम्मेलन से इतर पहली मुलाकात में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इजरायल के प्रधानमंत्री नफ्ताली बेनेट के साथ दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंधों की समीक्षा की और उच्च-प्रौद्योगिकी तथा नवाचार के क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के बारे में विचारों का आदान-प्रदान किया। इस मुलाकात में दोनों नेताओं की तरफ से काफी गर्मजोशी दिखाई गई। इजरायल के प्रधानमंत्री नफ्ताली बेनेट ने भारत और इजरायल के मजबूत रिश्तों के लिए पीएम मोदी का धन्यवाद भी दिया।

नफ्ताली बेनेट ने कहा कि आप इजरायल में बहुत लोकप्रिय हैं, आप मेरी पार्टी जॉइन कर लीजिए। इसके बाद पीएम मोदी मुस्कुराने लगे और दोनों नेताओं ने एक दूसरे का अभिवादन किया। प्रधानमंत्री मोदी और बेनेट की औपचारिक मुलाकात संक्षिप्त बातचीत के बाद हुई। पीएम मोदी ने इजरायली पीएम नफ्ताली बेनेट के साथ बैठक में कहा है कि भारत के लोग इजरायल के साथ दोस्ती को गहराई से महत्व देते हैं।

पाकिस्तान ने ठुकराया भारत का आमंत्रण, अफगानिस्तान के मुद्दे पर सुरक्षा सलाहकारों की बैठक में आने से इनकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान ने फैसला किया है कि वो अफगानिस्तान के मुद्दे पर आयोजित होने वाले राष्ट्रीय सुरक्षा सहालकारों की बैठक में हिस्सा नहीं लेगा। भारत इस बैठक की मेजबानी कर रहा है। इस बैठक में शामिल होने के लिए भारत ने पाकिस्तान को न्योता दिया था। लेकिन अब पाकिस्तान ने इस बैठक में शामिल होने से इनकार कर दिया है। पाकिस्तानी अखबार इ४३ल्ली२२ फ्रीड्ढ३ी१ ने अपनी एक रिपोर्ट में बताया कि पाकिस्तान के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार डॉक्टर मोइद यूसुफ ने उज्बेकिस्तान के साथ सुरक्षा समझौतों पर हस्ताक्षर करते वक्त इस बात की पुष्टि की है। जब एनएसए से सवाल पूछा गया कि क्या पाकिस्तान ने कॉन्फ्रेंस में आने के लिए भारत के आमंत्रण को स्वीकार कर लिया है इसपर पाकिस्तानी एनएसए ने कहा, मैं वहां नहीं जाऊंगा।

अफगान में गरीबी और भूखमरी से बेहाल लोग, अपनी ही 9 साल की बेटी बेचने को हुए मजबूर

नई दिल्ली (एजेंसी)। हाल के महीनों में, गरीबी और भुखमरी से जूझ रहे कई विस्थापित अफगान परिवारों को पैसे और जीविका के बदले अपनी बमुश्किल किशोर बेटियों की शादी करने के लिए मजबूर किया गया है, जो उनके अस्तित्व को सुनिश्चित करेगा। ऐसी ही एक दिल दहला देने वाली कहानी नौ साल की परवाना मलिक की है. परवाना को उसके परिवार ने पिछले महीने एक 55 वर्षीय कोरबान को बेच दिया था। सीएनएन की रिपोर्ट में यह दावा किया गया है। अफगानिस्तान के बड़गीस प्रांत में आंतरिक रूप से विस्थापित लोगों के लिए एक शिविर में रहने वाला परवाना के आठ लोगों का परिवार मुश्किल से गुजारा करता था और तालिबान के अधिग्रहण के बाद से विदेशी सहायता भी लगभग खत्म हो गई थी। सीएनएन को दिए अपने एक इंटरव्यू में परवाना के पिता अब्दुल मलिक ने खुलासा किया कि उन्होंने कुछ महीने पहले ही अपनी 12 वर्षीय बेटी को बेच दिया था। अब, उन्हें ₹परिवार के अन्य सदस्यों को जीवित रखने के लिए₹ एक और बेटी को बेचने के लिए मजबूर होना पड़ा। बेटी को बेचने के इस फैसले के बाद से ही वे टूट गए हैं और शर्म में डूब चुके हैं। अपनी ओर से परवाना ने कहा

कि वह पढ़ना चाहती है और शिक्षिका बनना चाहती है। लेकिन उसके परिवार की गंभीर आर्थिक परिस्थितियों ने उसके लिए यह दरवाजा बंद कर दिया है। उसकी होने वाली ₹शादी₹ के बारे में पूछे जाने पर, उसे डर है कि ₹बूढ़ा आदमी₹ उसे पीटेगा और उसे अपने घर में काम करने के लिए मजबूर करेगा।